नेहरू बाल पुस्तकालय

स्वामी और उसके दोस्त

आर. के. नारायण

अनुवाद
मस्तराम कपूर

चित्र
मनोभिराम चक्रवर्ती

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-1288-X

पहला संस्करण : 1995
पहली आवृत्ति : 1997 *(शक 1919)*

Swami and Friends *(Hindi)*
रु. 23.50
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क
नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

माता-पिता के लिए

सूची

एक

सोमवार की सुबह

1

सोमवार की सुबह थी। स्वामीनाथन की आंखें खोलने की इच्छा नहीं हो रही थी। सोमवार उसे कैलेंडर का सबसे मनहूस दिन लगता था। शनिवार और रविवार की मजेदार आजादी के बाद सोमवार को काम और अनुशासन के मूड में आना बहुत मुश्किल होता था। स्कूल के विचार से ही उसे झुरझुरी आ गयी—वह पीली मनहूस बिल्डिंग, जलती आंखों वाला कक्षा-अध्यापक वेदनायकम और पतली, लंबी छड़ी हाथ में लिए हैडमास्टर।

आठ बजे तक वह अपने 'कमरे' में डेस्क पर विराजमान था। कमरा यानी पिता के ड्रेसिंग रूम का एक कोना, यहीं उसकी मेज थी जिस पर उसकी सभी चीजें, कोट, टोपी, स्लेट, दवात और किताबें अस्तव्यस्त पड़ी थीं। स्टूल पर बैठकर उसने आंखें बंद कर लीं और याद करने लगा कि आज उसे क्या-क्या काम करना है। सबसे पहले गणित—पांच सवाल लाभ हानि के; फिर अंग्रेजी—आठवें पाठ के एक पृष्ठ को कापी पर लिखना; कठिन शब्दों के शब्दकोश से अर्थ लिखना; और फिर भूगोल। और उसके पास हैं सिर्फ दो घंटे, जिनमें उसे यह ढेर सारा काम करना है और फिर स्कूल के लिए तैयार भी होना है।

2

जलती आंखों वाले अध्यापक वेदनायकम कक्षा में लंबी खिड़की की तरफ पीठ किए बैठे थे। उसकी सलाखों से खेल के मैदान का कुछ भाग और शिशु कक्षाओं के बरामदे का कोना दिखाई देता था। बाईं ओर बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं जिनसे विस्तृत खुला मैदान दिखाई दे रहा था। मैदान के दूसरे छोर पर रेलवे पुल था।

स्वामीनाथन का कक्षा में सिर्फ इसलिए अस्तित्व था कि वह वहां से छोटे बच्चों को एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते देख सकता था और बाईं ओर की खिड़कियों से 12.30 बजे की डाकगाड़ी को सरयू पुल के ऊपर से खड़खड़ करते निकलते देख सकता था।

पहली घंटी शांति से बीत गयी। दूसरी गणित की थी। वेदनायकम बाहर गये और

कुछ ही मिनट में गणित के अध्यापक के रूप में फिर आ गये। वे एक ही स्वर में भिनभिनाते रहे। स्वामीनाथन के लिए यह बेहद ऊबाऊ था। अध्यापक की आवाज से उसे चिढ़ हो रही थी। उसे नींद आने लगी।

अध्यापक ने होमवर्क की कापियां दिखाने के लिए कहा। स्वामीनाथन अपनी जगह से उठा, छलांग मारकर प्लेटफार्म पर चढ़ा और अपनी कापी मेज पर रख दी। जब अध्यापक सवाल देख रहे थे, स्वामीनाथन उनके चेहरे को गौर से देख रहा था, जो उसे निकट से देखने पर बहुत भोला-भाला लगा। अध्यापक के चेहरे के संबंध में स्वामीनाथन का कहना था कि उनकी दोनों आंखें एक-दूसरे के बहुत करीब हैं, उनकी टोड़ी पर, जितने दूर बेंच से बाल दिखाई देते हैं उससे कहीं ज्यादा हैं और उनकी शक्ल बहुत ही भद्दी है।

उसकी तंद्रा तब टूटी जब उसे कोहनी से ऊपर नरम मांस में तेज दर्द हुआ। अध्यापक एक हाथ से चुटकी काट रहे थे और दूसरे से सारे सवालों पर काटा लगा रहे थे। पृष्ठ के नीचे उन्होंने 'वैरी बैड' लिखा, कापी स्वामीनाथन के मुंह पर दे मारी और उसे वापस सीट पर भेज दिया।

अगली घंटी इतिहास की थी। लड़के बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करते थे। इतिहास डी. पिल्लै पढ़ाते थे जो स्कूल में नरम व्यवहार तथा हंसी-मजाक के लिए प्रसिद्ध थे। उनकी प्रसिद्धि इस बात के लिए थी कि उन्होंने लड़कों से कभी गुस्से-गाली से भरा व्यवहार नहीं किया। इतिहास पढ़ाने की उनकी शैली शिक्षा के किसी भी मापदंड के अंतर्गत नहीं आती थी। वे वास्को-डी गामा, क्लाइव, हेस्टिंग्ज और अन्य लोगों के निजी जीवन की ढेर-सी जानकारी लड़कों को देते थे। जब वे इतिहास की बड़ी लड़ाइयों का वर्णन करते थे तो हथियारों के टकराने की आवाजें और मरनेवालों की कराहें भी सुनाई देने लगती थीं। जब कभी हैडमास्टर निरीक्षण के लिए दबे पांव बरामदे में आते तो उन्हें इतिहास के अध्यापक से बहुत निराशा होती थी।

सुबह के सत्र में धर्म-शिक्षा का पीरियड अंतिम होता था। यह इतना ऊबाऊ नहीं होता था। कई बार ऐसे अवसर आते थे जब दिल को हिला देने वाली झांकी सामने उपस्थित हो जाती थी : लाल सागर में दरार पड़ना और इस्राइलियों के लिए रास्ता बन जाना, सैक्सन के कारनामे, ईसा मसीह का कब्र से जीवित उठना, आदि। एक ही समस्या थी और वह यह कि धर्म-शिक्षा के अध्यापक श्री एब्नेजर बहुत कट्टर थे। एक बार मुट्ठियां भींचकर उन्होने कहा, "मूर्खो, तुम गंदी, बेजान लकड़ी-पत्थर की मूर्तियां क्यों पूजते हो ? क्या ये बोल सकती हैं ? नहीं। देख सकती हैं ? नहीं। क्या वे वरदान दे सकती हैं ? नहीं। क्या तुम्हें स्वर्ग ले जा सकती हैं ? नहीं। क्यों ? क्योंकि ये बेजान हैं। तुम्हारे देवताओं ने क्या किया, जब महमूद गजनी ने उनकी मूर्तियों के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें पांव तले रौंदा, उनसे अपने शौचालय के लिए सीढ़ियां बनवायीं ? अगर मूर्तियां जीवित थीं तो उन्होंने

महमूद के आक्रमण को क्यों नहीं रोका ?"

इसके बाद वह ईसाई धर्म पर आये, "हमारे ईसा मसीह को देखो। वे बीमारों को ठीक कर सकते हैं, निर्धनों के दुख दूर कर सकते हैं और हमें स्वर्ग ले जा सकते हैं। वही असली भगवान हैं। उस पर विश्वास करो, वह तुम्हें स्वर्ग ले जायेगा। स्वर्ग का राज्य हमारे दिलों में है।" जब अध्यापक एब्नेजर अपने सामने ईसा मसीह की कल्पना करते थे तो उनकी आंखों से आंसू झरने लगते थे। दूसरे ही क्षण कृष्ण की याद करके उनका चेहरा गुस्से से लाल हो उठता था, "क्या हमारा ईसा मसीह तुम्हारे कृष्ण की तरह नाचने वाली लड़कियों के साथ आवारागर्दी करता था ? क्या हमारा ईसा मसीह उस बदमाश कृष्ण की तरह मक्खन-दही चुराता था ? क्या हमारे ईसा मसीह ने अपने आसपास के लोगों पर काला जादू किया ?

वे सांस लेने के लिऐ रुके। उस दिन वे असहनीय हो उठे। स्वामीनाथन का खून खौलने लगा। उसने उठकर पूछा, "उन्होंने कुछ नहीं किया तो उन्हें सलीब पर क्यों चढ़ाया गया ?" अध्यापक ने उसे बताया कि वह पीरियड के बाद उनके पास आये और अकेले में सारी बातें समझे। अध्यापक के नरम उत्तर से प्रोत्साहन पाकर स्वामीनाथन ने एक और सवाल पूछ लिया, "वे भगवान थे तो मांस-मछली क्यों खाते थे और शराब क्यों पीते थे ?" ब्राह्मण बालक होने के कारण उसके लिए यह बात कल्पना से बाहर थी कि भगवान मांसाहारी हो सकता है। इसके उत्तर में अध्यापक एब्नेजर कुर्सी छोड़कर धीरे-धीरे स्वामीनाथन की तरफ बढ़े और उसके कान उमेठने लगे।

3

अगले दिन स्वामीनाथन स्कूल जल्दी पहुंच गया। घंटी लगने में अभी आधा घंटा बाकी था। ऐसे अवसरों पर वह स्कूल भर में दौड़ता-फिरता था। इमली के बड़े पेड़ के नीचे गत्ती के खेल में समय बिताता था। लेकिन आज वह सोच में डूबा अलग बैठा रहा। उसकी जेब में एक मोटा पत्र था। जब उसने उंगलियों से उसके किनारे को छुआ तो उसने अपने को अपराधी-सा अनुभव किया।

रात के समय उसने पिताजी को अध्यापक एब्नेजर के बारे में बताया था। अब वह इस पर पछता रहा था और अपने को नंबर एक का गधा मान रहा था।

जैसे ही घंटी बजी, वह हैडमास्टर के कमरे में दाखिल हुआ और उन्हें वह पत्र दे दिया। हैडमास्टर ने उसे पढ़ा तो उनका चेहरा गंभीर हो गया :

महोदय,

मैं आपको सूचित करना चाहता हूं कि मेरा लड़का स्वामीनाथन पहली फार्म के 'ए' सेक्शन में पढ़ता है। कल धर्म-शिक्षा के अध्यापक ने धार्मिक आवेश में उसे चोट पहुंचायी।

मुझे पता चला है कि वह अध्यापक हिंदू धर्म के बारे में बात करते समय बहुत अपमान जनक और भड़काने वाली भाषा का प्रयोग करते हैं। इसका लड़कों पर निश्चय ही बुरा प्रभाव पड़ता है। इन मामलों में सहिष्णुता बरतने की जरूरत है, पर में विस्तार से कुछ नहीं कहूंगा।

मुझे यह भी बताया गया है कि जब मेरे लड़के ने कुछ शंकाओं का समाधान करने के लिए कहा तो उसके साथ अध्यापक ने क्रूर व्यवहार किया। शाम को वह घर आया, तब भी उसके कान लाल थे।

इससे मैं यह निष्कर्ष निकालता हूं कि आप अपने स्कूल में गैर-ईसाई लड़कों को रखना नहीं चाहते। यदि ऐसा हो तो कृपया हमें सूचित करें। हम लड़कों को उस स्कूल से निकालकर दूसरी जगह भेजने को तैयार हैं। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि मालगुड़ी में अकेला एल्बर्ट मिशन स्कूल ही नहीं है। आशा है कि आप कृपा करके सारे मामले की जांच करेंगे और मुझे उत्तर देंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ तो खेद के साथ मुझे स्कूल में चल रहे व्यवहार की तरफ उच्च अधिकारियों का ध्यान दिलाना पड़ेगा।

सादर

आपका अत्यंत आज्ञाकारी सेवक
डब्ल्यू. टी. श्रीनिवासन

जब स्वामीनाथन कमरे से बाहर आया तो सारा स्कूल उसके इर्दगिर्द जमा हो गया और उसके होंठों से निकलने वाले शब्दों को सुनने के लिए उत्सुक था। किंतु वह लड़कों के सवालों की बड़ी बेरुखी से उपेक्षा कर रहा था। उसने केवल चार लड़कों को विश्वास में लिया। इन चारों लड़कों को वह कक्षा में सबसे ज्यादा चाहता था और उनकी प्रशंसा करता था। एक तो था मानीटर सोमू, जो हमेशा साहब बना रहता था। वह अपना काम, चाहे वह जो भी हो, बड़े विश्वास और शांतभाव से करता था। वह अध्यापकों का भी प्रिय माना जाता था। कोई अध्यापक उससे कक्षा में सवाल नहीं पूछता था। यह तो नहीं कहा जा सकता कि वह बहुत प्रतिभाशाली छात्र था। ऐसा माना जाता था कि केवल हैडमास्टर ही उसे डांट सकता था। उसे कक्षा के चाचा की तरह माना जाता था।

दूसरा था मणि, जो 'न काम का न काज का' बाहुबली था। कक्षा के सब लड़कों पर उसका दबदबा था। वह न तो कभी किताबें लाता था और न होमवर्क की उसने कभी चिंता की थी। वह कक्षा में आता था, पिछली बेंच पर कब्जा करके बहादुरी के साथ सोता था। किसी अध्यापक ने उसे कभी छेड़ने की कोशिश नहीं की। कहा जाता है कि एक नये अध्यापक ने एक बार ऐसी कोशिश की थी तो उसे लगभग जान से हाथ धोना पड़ा था। मणि सभी अजनबियों को तंग करता था, चाहे वे छोटे हों या बड़े। आमतौर पर लोग उसे आता देखकर एक तरफ हट जाते थे। सिर पर तिरछी टोपी लगाये और बगल में कोई तमिल उपन्यास दबाये वह तब से स्कूल आ रहा था, जब से स्कूल का

बूढ़ा चपरासी याद कर सकता था। अधिकतर कक्षाओं में वह अपने साथियों की तुलना में अधिक समय तक रहता आया था। स्वामीनाथन को उसकी दोस्ती पर गर्व था। दूसरे लड़के उसके सामने डरकर दुबके रहते थे, लेकिन वह उसे मणि कहकर बुलाता था और दोस्ती से उसकी पीठ थपथपा सकता था। स्वामीनाथन प्रशंसा भाव से भरकर उससे पूछता था कि उसे इतनी ताकत कहां से मिली। इस पर उसने बताया था कि उसके घर में लकड़ी के मुगदरों का एक जोड़ा है। उनसे वह उनकी कमर तोड़ सकता है, जो उससे उलझने का दुस्साहस करेंगे।

तीसरा लड़का शंकर था जो कक्षा का सबसे प्रतिभाशाली छात्र था। वह किसी भी सवाल को पांच मिनट में हल कर सकता था और हमेशा 90 प्रतिशत के आसपास अंक लेता था। लड़कों का एक वर्ग मानता था कि वह अध्यापकों से सवाल पूछने लगे तो अध्यापक कहीं न टिकें। कुछ दूसरे लड़के कहते थे कि शंकर ठस दिमाग का है और चापलूसी करके सवालों के जवाब पहले ही मालूम कर लेता है। कहा जाता था कि वह अध्यापकों के कपड़े धोकर 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करता है। कक्षा के सामने वह अध्यापकों से अंग्रेजी में बात कर सकता था। वह दुनिया के सभी पर्वतों, देशों और नदियों के नाम जानता था। वह नींद में इतिहास सुना सकता था। व्याकरण तो उसके लिए बाएं हाथ का खेल था। उसका चेहरा प्रतिभा की कांति से दमकता रहता था। लेकिन उसकी नाक हमेशा गीली रहती थी और वह बालों की वेणी बांधकर तथा उसमें फूल लगाकर कक्षा में आता था। स्वामीनाथन उसे आश्चर्य भरी नजरों से देखता था। वह उस समय बहुत खुश हुआ था जब उसने मणि का समर्थन प्राप्त किया था और शंकर को अपनी मंडली में शामिल किया था। मणि उसे अपने ढंग से पसंद करता था और जब कभी वह अपना प्यार जताना चाहता वह शंकर की पीठ पर अपना भारी मुक्का दे मारता था। फिर सिर खुजला कर पूछता था, "अरे गधे, तुम्हारी इस दुबली-पतली काया में इतना दिमाग कहां से आया, क्या तुम इसमें से कुछ दूसरों को नहीं दे सकते ?"

चौथा दोस्त था सैमुएल जिसे उसके आकार के कारण 'मटर' कहा जाता था। उसमें कुछ भी असाधारण नहीं था। वह बिल्कुल साधारण लड़का था जिसमें बाहुबल या बुद्धि की कोई विशेषता न थी। वह स्वामीनाथन की तरह ही गणित में फिसड्डी था। स्वामीनाथन की तरह ही वह डरपोक, कमजोर और जल्दी घबरा जाने वाला था। इन दोनों के बीच संबंध जोड़ने वाली थी, हंसी। वे दोनों हर चीज में समान विसंगतियां और बेतुकापन देख सकते थे। दूसरों की नजर में जो बहुत ही मामूली और न दिखाई देने वाली बात होती थी, उस पर हंसते-हंसते उनके पेट में बल पड़ जाते थे।

जब स्वामीनाथन ने मित्रों को बताया कि उसके पिता ने धर्म-शिक्षा के अध्यापक के मामले में क्या कार्रवाई की है तो मित्रों ने अपनी सहमति जतायी। सोमू ने सबसे पहले अपने प्रशंसक के सामने खीसें निपोरकर उसका समर्थन किया। शंकर ने गंभीर होकर कहा, "दूसरे कुछ भी कहें, तुमने पिताजी को इसकी जानकारी देकर ठीक ही किया।"





बाहुबली मणि ने अधमुंदी आंखों से कुछ बड़बड़ाकर सहमति जतायी। उसे केवल इस बात का दुख था कि यह मामला बड़ों पर छोड़ दिया गया था। उसे इसमें कोई तुक नहीं दिखाई दी। उसका विचार था कि इस तरह के मामले कक्षा की चारदीवारी में ही रहने चाहिए। अगर वह स्वामीनाथन की जगह होता तो अध्यापक पर और कुछ नहीं तो कम से कम दवात मारकर शुरू में ही सारे मामले को खत्म कर देता। उसका मानना था कि स्वामी ने जो किया उसमें कोई बुराई नहीं है। अगर वह चुप रहता तो बहुत बुरा होता। लेकिन धर्म-शिक्षा के अध्यापक को अपना ध्यान रखना होगा—मणि ने उसकी गर्दन मरोड़ने और कमर तोड़ने का फैसला कर लिया था।

सैमुएल उर्फ मटर ने अपने को बहुत ही परेशानी में पाया। एक तरफ उस पर कुछ कहने का दबाव पड़ रहा था, दूसरी तरफ ईसाई होने के कारण उसे अध्यापक एब्नेजर की बात में कुछ भी गलत नहीं लग रहा था, क्योंकि उसे लगता था कि उन्होंने जो कुछ कहा वह बाइबिल के आदेशों में से एक का विस्तार मात्र था। उसे लगा कि उसे एब्नेजर का पक्ष लेना चाहिए। उसने एब्नेजर की पोशाक और उसके हाव-भाव पर टिप्पणी करके इस स्थिति से छुटकारा पा लिया।

कक्षा को इस मामले की भनक पड़ गयी। धर्म-शिक्षा का पीरियड आया तो लड़के किसी नाटकीय घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन हुआ कुछ भी नहीं। एब्नेजर हमेशा की तरह प्रसन्नचित्त दिखाई दिये। उस दिन उन्होंने भगवद्गीता पर बोलने का निश्चय किया था और उस उदार रचना की कोई भी व्याख्या की जा सकती थी। एब्नेजर के हाथों में वह हिंदू धर्म के खिलाफ एक हथियार था।

उनकी आवाज हमेशा की तरह जोरदार थी, किंतु उनकी आलोचना विद्वत्तापूर्ण अधिक थी। उन्होंने हिंदू धर्म को गीता के आधार पर खड़ा किया और फिर गीता के चिथड़े-चिथड़े कर दिये। कदम-कदम करके वे आलंकारिक भाषण की ऊंचाइयां छूते गये। मेज पर पड़ी बाइबिल की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया। तभी हैडमास्टर कमरे में आये।

एब्नेजर रुके। कुर्सी पीछे सरकाकर बेहद घबराये से खड़े हो गये। उन्होंने हैडमास्टर की तरफ प्रश्न की मुद्रा में देखा। हैडमास्टर ने गंभीर मुद्रा बनाये उन्हें भाषण जारी रखने को कहा। इस बीच एब्नेजर ने बंद बाइबिल के पृष्ठों के बीच अपनी एक उंगली फंसा ली थी। हैडमास्टर का आदेश पाकर उन्होंने मधुर बनने और क्रोध में तनी भौंहों को सहज बनाने की कोशिश की। फिर उन्होंने जहां उंगली थी वहीं से किताब खोली तथा जो सामने आया उसे पढ़ने लगे। यह ईसा के जन्म का प्रसंग था। महान घटना हुई थी। नांद में दिव्य शिशु था। पूर्व के बुद्धिमान लोग बड़ी आस्था से उस सितारे के पीछे चल रहे थे।

लड़के हमेशा की तरह अनमने भाव से सुन रहे थे। एब्नेजर भगवद्गीता के प्रकाश में हिंदू धर्म की व्याख्या करें या ईसा के जन्म का वर्णन करें, उन्हें कोई फर्क न पड़ता था।

हैडमास्टर थोड़ी देर सुनते रहे और फिर नरम स्वर में उन्होंने स्पष्टीकरण मांगा। परीक्षा निकट थी और एब्नेजर अभी ईसा के जन्म से आगे नहीं बढ़े थे। वे ईसा के क्रॉस पर चढ़ने और पुन: प्रकट होने पर कब आयेंगे और कब दोहराना शुरू करेंगे। एब्नेजर हक्का-बक्का थे। उन्हें कोई जवाब न सूझा। उन्होंने यह कहकर बचने की कोशिश की कि सप्ताह के इस दिन वे पढ़ाये हुए को सरसरी तौर पर दोहराते हैं। नहीं, वे इतना पीछे नहीं हैं। वे 'अंतिम भोज' के आसपास पहुंच चुके हैं। उस दिन की पढ़ाई पूरी होने पर स्वामीनाथन को हैडमास्टर के कमरे में बुलाया गया। जब उसे हैडमास्टर की पर्ची मिली तो उसकी इच्छा हुई कि वह घर भाग जाये। उसने मणि को अपनी इच्छा बतायी तो उसने उसे पकड़ा और धकेलकर हैडमास्टर के कमरे तक ले गया। वहां उसे धक्का देकर हैडमास्टर के कमरे में ठेल दिया। स्वामीनाथन लड़खड़ाकर हैडमास्टर के सामने खड़ा हो गया।

एब्नेजर स्टूल पर बैठे हुए थे और डरे हुए लग रहे थे। हैमास्टर ने पूछा, "क्या बात है, स्वामीनाथन ?"

"कुछ नहीं, सर," स्वामीनाथन ने कहा।

"कुछ नहीं, तो यह पत्र क्यों ?"

"ओह!" स्वामीनाथन के मुंह से अनायास निकला।

अध्यापक एब्नेजर ने मुस्कराने की कोशिश की। स्वामीनाथन इस सारे मामले से छुटकारा पाना चाहता था। उसे लगा कि एक सौ एब्नेजर भी हजार बार देवताओं के संबंध में बुरी बाते कहें, तब भी वह बुरा नहीं मानेगा।

"तुम जानते हो मैं यहां किसलिए हूं ?" हैडमास्टर ने पूछा।

स्वामीनाथन इस प्रश्न के उत्तर की तलाश करने लगा—हैडमास्टर का काम लड़कों के माता-पिता के पत्र प्राप्त करना हो सकता है; उसका काम जिंदा एब्नेजरों की खाल उधेड़ना भी हो सकता है; उसका काम हर सोमवार को दोपहर 12 बजे छड़ी के छह वार करना भी हो सकता है। लेकिन सबसे बड़ी बात कि यह सवाल क्यों ?

"पता नहीं सर," स्वामीनाथन ने भोलेपन से जवाब दिया।

"मैं यहां तुम्हारी देखभाल के लिए हूं।" हैडमास्टर ने कहा।

स्वामीनाथन को यह जानकर राहत मिली कि सवाल का जवाब इतना आसान था।

हैडमास्टर आगे बोले, "इसलिए तुम्हें किसी मदद की जरूरत हो तो अपने पिता के पास जाने से पहले मेरे पास आओ।" स्वामीनाथन ने नजर बचाकर एब्नेजर की तरफ देखा जो अपनी कुर्सी पर बैठे छटपटा रहे थे।

हैडमास्टर बोलते गये, "मुझे अफसोस है कि तुम इस मामूली सी बात को लेकर अपने पिता के पास गये। मैं इसकी जांच करूंगा। यह पत्र अपने पिता को दे देना।"

स्वामीनाथन ने पत्र लिया और राहत की सांस लेते हुए गोली की तरह कमरे से बाहर निकल गया।

दो

राजम और मणि

1

सरयू नदी मालगुड़ी की शान थी। शहर की आखिरी गली एल्लामन से, जिसमें ज्यादातर तेल बेचने वाले रहते थे, यह करीब दस मिनट की पैदल दूरी पर थी। सरयू के रेतीले तट शहर के लोगों के लिए शाम के सैर-सपाटे के काम आते थे। नगर निगम के अध्यक्ष विशिष्ट अतिथियों को टाऊन-हाल की छत पर ले जाते थे और बड़े गर्व के साथ उत्तर में पसरी सरयू नदी दिखाते थे जो चांदनी रात में चांदी की तरह दमकती दिखाई देती थी।

हमेशा की तरह सरयू के रेतीले तटों पर शाम की भीड़ थी। स्वामीनाथन और मणि अकेले, नदी की सीढ़ियों पर बैठे थे और पानी में टांगें झुला रहे थे। नदी के ऊपर झुकी हुई पीपल की शाखाएं धीरे-धीरे सरसरा रही थीं। हल्की-हल्की बयार उनकी टहनियों से अठखेलियां करती पत्तों को नदी-प्रवाह में बिखेर रही थी। हवा में पक्षियों का कलरव भरा हुआ था। दूर, नाल्लपा के आम के बाग के पास मवेशियों का एक झुंड नदी पार कर रहा था। फिर एक बैलगाड़ी निकली जिसका गाड़ीवान कुछ गुनगुना रहा था। सूरज को डूबे लगभग 15 मिनट हो गये थे और पश्चिम में हल्की लालिमा बनी हुई थी।

"यहां पानी बहुत गहरा है न ?" मणि ने पूछा।

"हां, क्यों ?"

"मैं राजम को यहां लाऊंगा और गठरी बांधकर उसे नदी में फेंक दूंगा।"

राजम पहली फार्म-'ए' का नया छात्र था। वह स्कूल के दूसरे सत्र के पहले दिन आया और बेफिक्री से चलकर आखिरी बेंच पर मणि के साथ बड़े आराम से बैठ गया— जब तक मणि ने उसकी पसलियों में कोंचा नहीं जिसका उसने भी उसी तरह जवाब दे दिया। उसने पहले ही दिन सारी क्लास पर रौब जमा दिया था। वह नया-नया आया था। उसने अच्छे कपड़े पहन रखे थे। वह क्लास का एकमात्र लड़का था जिसने बूट-जुराबें पहन रखी थीं, टाई लगा रखी थी, फर वाली टोपी, बढ़िया कोट और निकर पहन रखी थी। वह कार में बैठकर स्कूल आया था। इन सब बातों के अलावा वह बहुत अच्छा

छात्र भी सिद्ध हुआ था। उड़ती सी खबर थी कि वह मद्रास के किसी अंग्रेजी स्कूल से आया था। वह बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलता था, ठीक यूरोपियनों की तरह, जिसका मतलब था कि स्कूल में बहुत कम लोग उसकी बात समझ सकते थे। उसके कई सहपाठी उससे बातें करने की हिम्मत नहीं करते थे, क्योंकि उनकी टूटी-फूटी अंग्रजी का कोष बहुत सीमित था। क्लास का सबसे प्रतिभाशाली छात्र शंकर ही उसका सामना करने का साहस दिखाता था, हालांकि उसकी अंग्रेजी राजम की तुलना में कमजोर थी और अटक-अटककर निकलती थी।

यह राजम मणि का प्रतिद्वंद्वी था। मणि के साथ व्यवहार में उसने जो सहजता दिखायी मणि उसका आदी नहीं था। मणि ने कोंचा तो राजम ने भी कोंचा। मणि ने मुंह चिढ़ाया तो राजम ने भी मुंह चिढ़ाया। मणि ने लात मारी तो राजम ने भी लात मारी। अगर मणि क्लास का दादा था तो राजम भी कम न था। उस पर मजा यह कि राजम हमेशा 70 प्रतिशत के आसपास अंक लेनेवाला था और क्लास में शंकर के बाद उसका नंबर आता था। इस बात के स्पष्ट संकेत थे कि राजम क्लास में एक नयी शक्ति बन गया था। मणि के देखते-देखते, यह बात साफ होने लगी थी कि उसके जीवन में एक नया खतरा पैदा हो गया है।

नदी की सीढ़ियों पर बैठे-बैठे राजम को गठरी बनाकर नदी में फेंकने का जो निर्णय उसने लिया था उसके पीछे यही सब बातें थीं। स्वामीनाथन ने जरा डरते हुए कहा, "तुम यह बात भूलते हो कि उसके पिता पुलिस अधीक्षक हैं।" मणि थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला, "इसकी कौन परवाह करता है ? मैं किसी दिन उसके कंधे अपने मुगदरों से तोड़ डालूंगा।"

"मैं तुम्हारी जगह होता तो पुलिस वालों के चक्कर से दूर ही रहता। वे बहुत खतरनाक होते हैं।" स्वामीनाथन ने कहा।

"तुम मेरी जगह! हुं...! लेकिन ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं तुम्हारी तरह दूध के दांतवाला डरपोक नही हूं।"

स्वामीनाथन ने अपने होंठ काटकर लंबी सांस भरी। "इससे मुझे याद आया," मणि बोला। "तुम्हें भी कुछ चेतावनी देने की जरूरत है। तुम राजम के आसपास कुछ ज्यादा ही मंडराने लगे हो। जरा अपनी हड्डी-पसली का ध्यान रखना। बस, मैं इतना ही कहूंगा।"

स्वामीनाथन ने इसका जोरदार प्रतिवाद किया। क्या मणि यह समझता है कि स्वामीनाथन अपने पुराने प्यारे दोस्त मणि के अलावा किसी दूसरे का सम्मान कर सकता है ? मणि ने क्या सोचकर यह बात कही ? जहां तक स्वामीनाथन को याद पड़ता था, वह राजम के तीन गज निकट भी नहीं गया। वह तो उससे घृणा करता है। वह कमीना कल का छोकरा! मणि ने कब उसे राजम के साथ देखा ? हां, सोमवार को ड्राइंग के पीरियड में देखा होगा। तब राजम उसके पास आया था हालांकि उसने उपेक्षा से उसकी

तरफ देखा था। उस गधे ने पैंसिल छीलने के लिए शार्पनर मांगा था और उसने सलाह दी थी कि इतनी ही जरूरत है तो दुकान से खरीद क्यों नहीं लेता। क्या राजम और मणि में कोई तुलना हो सकती है ?

मणि इससे बहुत खुश हुआ। उस शाम वह पहली बार हंसा और वह भी ठहाका लगाकर। उसने स्वामीनाथन को झकझोर दिया और प्यार से उसका कान इस तरह मरोड़ा कि स्वामीनाथन के मुंह से लंबी चीख निकल गयी। फिर अचानक मणि ने पूछा "मैंने जो चीज मंगायी थी, वह लाये हो ?"

"ओह मणि। मैं तुम से सौ बार माफी चाहता हूं। मेरी मां सारा समय रसोईघर में रही। नहीं ला सका।" (बात नींबू के अचार की थी।)

"तुम बहुत डरपोक हो— ओह! यह नदी का किनारा और यह बढ़िया शाम। कितना मजा आता अगर...।"

2

स्वामीनाथन को राजम और मणि के बीच संवाद-सूत्र बनना पड़ा। वे क्लास में बेंच पर पीली दीवार की तरफ पीठ किये बैठे थे। स्वामीनाथन राजम और मणि के बीच बैठा हुआ था। उनकी किताबें सामने डेस्क पर थीं, लेकिन उनके मन किसी और काम में लगे हुए थे। मणि ने पर्ची पर लिखा 'क्या तुम आदमी हो ?' और पर्ची स्वामीनाथन को दी। स्वामीनाथन ने चेहरे पर यथासंभव नाराजगी का भाव लाकर पर्ची राजम की तरफ सरका दी। राजम ने उसे पढ़ा और मरोड़ कर फेंक दिया। मणि ने एक और पर्ची में वही प्रश्न लिखा और आगे जोड़ा 'अगर तुमने इसका जवाब नहीं दिया तो मैं समझूंगा कि तुम कुत्ते के बच्चे हो।' पर्ची जब राजम को मिली तो स्वामीनाथन की तरफ देखकर वह फुसफुसाया, "बदमाश, मुझे परेशान मत करो।" और उसने पर्ची फिर से मरोड़ दी।

आगे की कार्रवाई रुक गयी।

"स्वामीनाथन, खड़े हो जाओ!" अध्यापक की आवाज आयी। स्वामीनाथन आदरपूर्वक खड़ा हो गया।

"लिस्बन किसलिए प्रसिद्ध है ?" अध्यापक ने पूछा।

स्वामीनाथन थोड़ा झिझका, फिर बोला, "स्पेन की राजधानी होने के कारण।" अध्यापक ने अपनी मूंछें चबाकर दूसरा सवाल किया, "भारत की जलवायु के संबंध में तुम क्या जानते हो ?"

"गर्मियों में गर्म और सर्दियों में ठंडी।"

"बेंच पर खड़े हो जाओ।" अध्यापक ने गरजकर कहा और स्वामीनाथन चुपचाप बेंच पर खड़ा हो गया। उसे खुशी हुई कि छड़ी की मार की जगह उसे यह घटिया मानी

जाने वाली सजा मिली।

अध्यापक ने अपना पाठ जारी रखा: "अफ्रीका जंगलों का देश है। नील नदी यहां की सबसे महत्वपूर्ण नदी है। समझ गये ना मैंने क्या कहा ?" उन्होंने पहले बेंच पर बैठे लड़के को जवाब देने के लिए कहा। लड़के ने तुरंत उत्तर दिया कि नील अफ्रीका की सबसे महत्वपूर्ण नदी है और अध्यापक संतुष्ट हो गये। "नील क्या है ?" (एक लड़के ने फुर्ती से जवाब दिया, 'अफ्रीका की सबसे महत्वपूर्ण नदी।' उस लड़के को झिड़क दिया गया कि उसे बगैर पूछे जवाब नहीं देना चाहिए था।) "खामोश! खामोश! क्लास में इतना शोर क्यों हो रहा है ? और शोर मचाओ। देखना, परीक्षा में तुम्हे बड़ा-सा अंडा मिलेगा। मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।"

स्वामीनाथन ने शेष पाठ की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। उसका मन भटकने लगा। बेंच पर खड़ा वह सारी क्लास में काफी ऊपर था। उसे कई सिर दिखाई दे रहे थे और वह टोपियों के अनुसार उनका वर्गीकरण कर रहा था। चार लाल टोपियां, पच्चीस गांधी टोपियां, दस फरवाली टोपियां, आदि। छुट्टी हुई तो स्वामीनाथन, मणि और राजम एकांत में यह बताने के लिए इकट्ठे हुए कि उनके मन में क्या है। स्वामीनाथन दोनों के बीच खड़ा हो गया और संवाद-सूत्र के रूप में काम करने लगा। वे इतने निकट थे कि फुसफुसाकर बात करने पर भी एक-दूसरे को सुन सकते थे। किंतु दो शत्रुओं के बीच तीसरे के माध्यम से ही बात हो सकती थी। मणि ने स्वामीनाथन के सामने घूमकर पूछा, "तुम आदमी हो ?" राजम ने गुस्से से कहा, "किस कुत्ते को मेरे आदमी होने में संदेह है ?" स्वामीनाथन ने मणि की तरफ मुड़कर उग्रतापूर्वक कहा, "किस कुत्ते को मेरे आदमी होने में संदेह है ?"

"क्या तुममें हिम्मत है कि अपने को आदमी साबित कर सको ?" मणि ने पूछा। स्वामीनाथन राजम की तरफ मुड़ा और सवाल दोहरा दिया।

"कैसे ?"

"कैसे ?" स्वामीनाथन ने मणि से पूछा।

"कल शाम मुझे नालप्पा के बाग के पास नदी पर मिलो।"

"नालप्पा के बाग के पास..." स्वामीनाथन ने खुशी से दोहराया।

"किसलिए ?" राजम ने पूछा।

"यह देखने के लिए कि तुम मेरा सिर फोड़ सकते हो या नहीं।"

"अरे! टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा," राजम बोला।

अब स्वामीनाथन की सेवाएं लेना बंद हो गया। दोनों ने अपने शब्दों को दोहराने का उसे मौका ही नहीं दिया। राजम उसके एक कान में चीखता था और मणि दूसरे में।

"तो हम कल नदी के पास तुम्हारा इंतजार करेंगे," स्वामीनाथन बोला।

"जरूर," राजम ने उन्हें आश्वासन दिया।

मणि जानना चाहता था कि राजम अपने रक्षकों के साथ आयेगा या अकेला। जवाब मिला, अकेला आयेगा। मणि ने अपना एक और संदेह प्रकट किया, "अगर तुम्हें कुछ हो गया तो क्या वायदा करते हो कि अपने पिता को नहीं बताओगे ?" राजम ने यह वायदा भी किया, और ऐसे सुझाव को ही घटिया बताया।

3

नालप्पा का बाग उनसे कुछ गज की दूरी पर था। छह से ऊपर का समय था और नदी के तटों के बीच यातायात बंद हो गया था। शाम की भीड़ बहुत पीछे रह गयी थी। स्वामीनाथन और मणि रेत पर बैठे हुए थे। दोनों चुप थे। मणि लकड़ी का छोटा मुगदर बगल में दबाये जमीन पर नजरें गड़ाये था। वह सोच रहा था—थोड़ी ही देर में मैं राजम का सिर फोड़कर उसे नदी में फेंक दूंगा। अगर किसी को पता चल गया तो ? वे कैसे जानेंगे कि यह काम मैंने किया है ? लेकिन अगर राजम का भूत मुझे रात को तंग करने लगा तो ? दादा की मौत के बाद अकेला ही सोता हूं। अगर राजम रात को आकर मेरे बाल नोचने लगा तो ? अच्छा होगा कि उसे जान से न मारा जाये। मैं सिर्फ उसकी हड्डी-पसली तोड़ूंगा और उसे अपनी किस्मत पर छोड़ दूंगा। अगर मैं उसका सिर तोड़ूंगा तो इसका पता किसको चलेगा ? अगर... उसने कनखियों से स्वामीनाथन की ओर देखा जो बड़ी मासूमियत से आंखें मिचमिचा रहा था, अगर स्वामीनाथन पुलिस को खबर न करे।"

बूटों की चरमराहट सुनकर वे मुड़े और उन्होंने देखा कि राजम आ गया है। वह खाकी कपड़े पहने हुए था और उसके हाथ में एक हवाई बंदूक थी जो उसे कुछ महीने पहले जन्मदिन पर उपहार में मिली थी। वह अकड़कर खड़ा हो गया और बोला, "मैं तैयार हूं।"

"तुम देर से आये।"

"हां।"

"शुरू करें।"

राजम ने बंदूक कंधे पर रखी और हवा में फायर किया। मणि चौंक गया। वह अपना मुगदर नीचे किये खड़ा रहा।

"गोली की आवाज सुनी ?" राजम ने पूछा। अगर तुम सचमुच लड़ने पर उतारू हो तो दूसरी गोली तुम्हारे शरीर में होगी।"

"लेकिन यह तो इंसाफ नहीं है। मेरे पास बंदूक नहीं है और तुम्हारे पास है... लड़ाई तो हाथों से होनी थी, कुश्ती।"

"तो फिर तुम मुगदर क्यों लाये हो ? तुमने कल इसके बारे में कुछ नहीं कहा था।"



मणि ने सिर झुका लिया।

"मैंने क्या किया है जो तुम इतने नाराज हो ?" राजम ने पूछा।

"तुमने किसी के सामने मुझे डरपोक कहा था।"

"यह झूठ है।"

थोड़ी देर अजीब सी चुप्पी रही।

"अगर तुम्हारी नाराजगी का यही कारण है तो इसे भूल जाओ। मुझे दोस्ती करने में एतराज नहीं है।"

"मुझे भी नहीं है।" मणि ने कहा।

स्वामीनाथन हैरानी से मुंह बाये देखता रहा। मणि के सामने नाटक करने के बावजूद वह राजम की मन ही मन बहुत प्रशंसा करता था और उससे दोस्ती करना चाहता था। सारे अनचाहे लड़ाई-झगड़े का यह अंत बहुत सुखद था। वह खुशी से नाचने लगा। राजम ने अपनी बंदूक नीचे कर ली और मणि ने अपना मुगदर नीचे फेंक दिया। अपनी सद्भावना दिखाने के लिए राजम ने अपनी जेब से आधा दर्जन बिस्कुट निकाले।

नदी की हल्की कलकल ध्वनि, पीपल के पत्तों की सरसराहट, शाम का धुंधलका और बिस्कुट खाते हुए तीन दोस्त जिनके चेहरे नयी दोस्ती से खिले हुए थे। स्वामीनाथन की दुनिया में अब पूरी शांति थी।

तीन

स्वामी की दादी

1

बैठक और भोजन-कक्ष के बीच कम हवादार अंधेरे गलियारे की बंद सी कोठरी में स्वामीनाथन की दादी अपने सारे सामान के साथ रहती थी। उसका सामान था—पांच दरियों, तीन चादरों, पांच तकियों वाला भारी-भरकम बिस्तर, पटसन के रेशे का बना एक वर्गाकार बक्सा और लकड़ी का एक छोटा बक्सा जिसमें तांबे के सिक्के, इलायची, लौंग और सुपारी पड़े रहते थे।

रात के भोजन के बाद स्वामीनाथन दादी के पास उसकी गोद में सिर रखे लौंग, इलायची की गंध भरे वातावरण में अपने को बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था।

बड़ी प्रसन्नता से भरकर वह बोला, "ओह दादी! तुम नहीं जानती, राजम कितनी ऊंची चीज है।" उसने दादी को राजम और मणि की पहले दुश्मनी और फिर दोस्ती की कहानी कह सुनायी।

"तुम्हें पता है उसके पास सचमुच की पुलिस की वर्दी है," स्वामीनाथन बोला।

"सच... ? उसे पुलिस की वर्दी क्यों चाहिए ?" दादी ने पूछा।

"उसके पिता पुलिस अधीक्षक हैं। वह यहां की सारी पुलिस का अफसर है।" दादी काफी प्रभावित हुई। उसका सच में काफी बड़ा दफ्तर होगा। फिर उसने उन दिनों की कहानी सुनानी शुरू की जब स्वामीनाथन के दादा रौबदार सब-मैजिस्ट्रेट थे, जिनके दफ्तर में पुलिसवाले कांपते हुए खड़े रहते थे, और उनसे डरकर खूंखार से खूंखार डाकू तक भाग खड़े होते थे। स्वामीनाथन अधीर होकर उसकी कहानी खत्म होने का इंतजार करने लगा लेकिन दादी बोलती ही गयी, इधर-इधर भटकती हुई और अलग-अलग समय पर घटी घटनाओं को गड्डमड्ड करती हुई।

"बस, काफी है दादी।" उसने रूखे स्वर में कहा, "मैं तुम्हें राजम के बारे में कुछ बताना चाहता हूं। जानती हो, उसे गणित में कितने नंबर मिलते हैं ?"

"सारे नंबर मिलते होंगे। है न ?" दादी ने पूछा।

"नहीं, बुद्धू। उसे सौ में से नब्बे नंबर मिलते हैं।"

"अच्छा है। लेकिन तुम्हें भी मेहनत करके उसकी तरह नंबर लेने चाहिए... तुम्हें पता है तुम्हारे दादा कभी-कभी ऐसे उत्तर लिखते थे कि परीक्षकों को भी चकित कर देते थे। किसी सवाल का जवाब देने में वे दूसरों के मुकाबले दसवां हिस्सा वक्त लेते थे। और फिर उनके जवाब इतने शानदार होते थे कि कभी-कभी उनके अध्यापक उन्हें दो सौ नंबर तक दे देते थे।... जब उन्होंने एम. ए. किया तो उन्हें इतना बड़ा मैडल मिला था। मैं कई सालों तक उसे गले में पहनती रही। पता नहीं, मैंने कब उसे उतारा।



हां, जब तुम्हारी बुआ पैदा हुई।... नहीं, तुम्हारी बुआ नहीं, तुम्हारे पिता। याद आया, तब बच्चा दस दिन का था। अरे नहीं, मैंने पहले ठीक कहा था। तुम्हारी बुआ ही पैदा हुई थी। पता है, वह मैडल अब कहां है ? मैंने वह तुम्हारी बुआ को दिया और उस बेवकूफ ने उसे गलवाकर चार चूड़ियां बनवा लीं। और वह भी इतनी मामूली-सी चूड़ियां कि...। मैं हमेशा कहती रही हूं कि हमारे परिवार में उस जैसा महामूर्ख कोई नहीं, और...।"

"अब बस भी करो दादी! तुम बेकार की पुरानी कहानियां सुनाती रहती हो। क्या तुम राजम के बारे में नहीं सुनना चाहती ?"

"हां, हां, बोलो।"

"दादी, जब राजम छोटा-सा लड़का था तो उसने शेर मारा था।"

"सच ? बड़ा बहादुर लड़का है।"

"तुम यह बात मुझे खुश करने के लिए कह रही हो। तुम्हें यकीन नहीं हुआ होगा।" स्वामीनाथन ने बड़े उत्साह से कहानी शुरू की, "राजम के पिता एक जंगल में डेरा डाले हुए थे। उनका लड़का उनके साथ था। अचानक दो शेर उन पर झपटे और एक ने पीछे से हमला कर के पिता को गिरा दिया। दूसरे ने राजम का पीछा किया। राजम एक झाड़ी के पीछे छुप गया और वहीं से गोली चलाकर शेर को मार डाला। दादी! क्या तुम सो गयी ?" उसने कहानी खत्म होने पर पूछा।

"नहीं बेटा, सुन रही हूं।"

"अच्छा बताओ, कितने शेर आये थे ?"

"दो शेर राजम पर झपटे थे।" दादी ने जवाब दिया।

स्वामीनाथन दादी के गलत जवाब से चिढ़ गया। "मैं तुम्हें इतनी जरूरी बातें बता रहा हूं और तुम नींद में न जाने क्या-क्या ऊलजुलूल कल्पना किये जा रही हो। अब मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा। मैं जानता हूं, तुम क्यों ऐसा कर रही हो। तुम राजम को पसंद नहीं करती।"

"नहीं, नहीं, वह तो बहुत प्यारा लड़का है।" दादी ने बड़े विश्वास से कहा, हालांकि उसने राजम को देखा तक नहीं था। स्वामीनाथन खुश हो गया। दूसरे ही क्षण उसके मन में एक नया संदेह पैदा हुआ। "दादी, शायद तुम्हें शेर की कहानी पर विश्वास नहीं हो रहा है।"

"मैं एक-एक शब्द पर विश्वास करती हूं," दादी ने स्वर में मिठास भरकर कहा। स्वामीनाथन को इससें खुशी हुई, लेकिन उसने चेतावनी के तौर पर जोड़ा, "जो भी उसे झूठा कहेगा वह उसे गोली मार देगा।"

दादी ने इसका समर्थन किया और हरिश्चंद्र की कहानी सुनाने की बात कही जिसने वचन का पालन करने के लिए सिंहासन, पत्नी और बच्चे को खो दिया और अंत में उसे

सब कुछ वापस मिल गया। उसने कहानी आधी ही सुनायी थी कि स्वामीनाथन खर्राटे लेने लगा। दादी भी रुक-रुक कर बोलने लगी, फिर वह भी सो गयी।

2

शनिवार की शाम। चूंकि शनिवार और रविवार कभी-कभी आते थे, स्वामीनाथन को ये दिन घर में बैठै दादी या मां से गपशप करने में या गणित के सवाल हल करने में बर्बाद करना बहुत बेतुका लगता था। पिता का स्पष्ट आदेश था कि स्वामीनाथन दोपहर को घूमने न जाये और घर पर रहकर स्कूल का काम करे। किंतु इस आदेश का पालन कभी-कभार ही होता था।

स्वामीनाथन अधीर सा अपने पढ़ाई के कमरे में 'इंगलिश रीडर' की एक कविता का अर्थ निकालने की कोशिश कर रहा था। पिता शीशे के सामने खड़े होकर सिर पर पगड़ी बांध रहे थे। उन्होंने रेशमी कोट पहन लिया था। अब चश्मा लगाना बाकी था। स्वामीनाथन इन सारे कामों के पूरा होने के क्रम को ध्यान से देख रहा था। अब उन्होंने चश्मा भी लगा लिया। अब सिर्फ घड़ी बांधना बाकी था।

स्वामीनाथन खुश था। घड़ी पहनने के बाद पिता अदालत के लिए चल देंगे। मां एक हाथ में पानी का गिलास और दूसरे में पान-सुपारी की प्लेट लिए आयी। पिता ने पानी पिया और हाथ आगे बढ़ाया। मां ने उन्हें कुछ सुपारी और सफाई से लपेटे हुए आधा दर्जन पान के पत्ते दिये। उन्होंने पत्ते मुंह में डाल लिए और बड़े संतोष से उन्हें चबाने लगे। स्वामीनाथन ने ऊन देने वाली भेड़ की कविता ऊंचे स्वर में पढ़नी शुरू कर दी। पिता ने चांदी की सुंघनी की डिबिया और धब्बों वाले रूमाल के लिए, जो घर की सबसे मैली चीज थी, हड़बड़ाहट दिखायी। फिर उन्होंने छतरी को बांह में लटकाया। यह उनके चल पड़ने का आखिरी संकेत था। स्वामीनाथन तब तक पुस्तक बंद करके उठ गया था। पिता कमरे से लगभग बाहर निकल गये थे। किंतु स्वामीनाथन ने मेज के नीचे अपना पांव जोर से पटका—मां ने पिता को रोककर कहा, "मुझे कुछ छुट्टे पैसे चाहिए। आज दर्जी आयेगा। चार दिन से वह पैसों के लिए तंग कर रहा है।"

"उसे कहो कल आए।" पिता ने कहा लेकिन मां जिद करती रही। पिता अपनी अलमारी के पास वापस आये। चाबियां ढूंढ़ी और उसे खोला। बटुआ निकालकर छुट्टे पैसे दिये। "पता नहीं महीने के बाकी दिनों का खर्च कैसे चलेगा," कहकर उन्होंने बटुए के अंदर झांका। फिर अलमारी का ताला लगाकर उन्होंने सिर की पगड़ी शीशे के सामने ठीक की। सुंघनी की बड़ी चुटकी नाक में डाली और रूमाल से नाक पोंछकर कमरे से बाहर हो गये। स्वामीनाथन ने चैन की लंबी सांस ली।

"दरवाजा बंद कर लो," गली के दरवाजे से पिता की आवाज आयी। स्वामीनाथन

ने चिटकनी बंद करने की आवाज सुनी। खिड़की पर बैठकर उसने पिता को नुक्कड़ से मुड़ते देखा और अपनी जगह से उठ गया।

मां रसोई में नौकर को शाम की काफी के बारे में कुछ हिदायतें दे रही थी। दादी अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी। स्वामीनाथन को देखकर बोली, "इधर आओ, बेटा।"

"मैं नहीं आ सकता। समय नहीं है।"

"आओ तो, मैं तुम्हें तीन पैसे दूंगी।"

स्वामीनाथन ने प्रस्ताव की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और बाहर निकल गया।

"कहां जा रहे हो ?" मां ने पूछा।

"जाना जरूरी है," स्वामीनाथन ने गंभीर चेहरा बनाकर कहा।

"धूप में मटरगश्ती करने जा रहे हो न ?"

"बिल्कुल नहीं।" उसने संक्षिप्त उत्तर दिया।

"इधर-उधर भटकोगे और बुखार चढ़ा लोगे।"

"नहीं मां, मैं इधर-उधर भटकने नहीं जा रहा ।"

"तुम्हारे पिता ने तुमसे यह नहीं कहा था कि छुट्टी के दिन घर पर रहना ?"

"हां, कहा था। लेकिन मुझे ड्राइंग मास्टर ने बुलाया है। लगता है, फिर भी मुझे नहीं जाना चाहिए," कटुता से भरकर उसने कहा। "ड्राइंग में फेल हो गया तो तुम्हें खुशी होगी!"

3

स्वामीनाथन ने दौड़कर ग्रोव स्ट्रीट पार की। फिर दायीं ओर मुड़ा और आबू लेन से होते हुए नीची छत वाले एक मैले से मकान के पास खड़े होकर हल्की सी सीटी बजायी। एक सैकेंड रुककर उसने फिर सीटी बजायी। दरवाजे की सांकल खटकी फिर दरवाजा जरा सा खुला और मणि ने सिर निकालकर कहा, "बेवकूफ, मेरी मौसी यहीं है, अंदर मत आना। उधर जाओ और मेरा इंतजार करो।"

स्वामीनाथन वहां से चला गया और एक पेड़ के नीचे खड़ा इंतजार करने लगा। धूप तेज थी और गली लगभग सुनसान थी। एक गधा गटर की नाली के पास खड़ा होकर बड़े धैर्य से अपनी परछाईं देख रहा था। एक गाय केले के हरे-चौड़े पत्ते को चबा रही थी। तभी मणि दबे पांव घर से निकल आया।

राजम के पिता लाली एक्सटेंशन में रहते थे। (इसका नाम सर फ्रेडरिक लाली नामक महान इंजीनियर के नाम पर पड़ा था, जो मालगुड़ी मंडल के एक समय सुपरिटेंडिंग इंजीनियर रह चुके थे।) इस बस्ती में पचास के लगभग साफ-सुथरे बंगले थे, जिनमें अधिकतर सरकारी अफसर रहते थे। त्रिचनापल्ली की बड़ी सड़क मकानों से कुछ ही दूर थी।



स्वामीनाथन और मणि राजम के घर तक जाने वाली छोटी सड़क पर डरते-डरते बढ़ रहे थे। वर्दी पहने पुलिस के एक सिपाही ने चिल्लाकर उन्हें रुकने को कहा और फिर दौड़कर उनके पास आया। स्वामीनाथन की इच्छा हुई कि भाग जाये। उसने मणि से कहा कि वह सिपाही से बात करे। सिपाही ने पूछा कि वे वहां क्या कर रहे हैं। मणि ने ऐसी आवाज में जवाब दिया जिसमें बनावटी लापरवाही का भाव साफ झलक रहा था। वह बोला, "अगर राजम घर में हो तो उससे कहो हम मिलने आए हैं। उसने हमें आने को कहा था।" सिपाही का व्यवहार तुरंत बहुत नरम पड़ गया और वह उन्हें राजम के कमरे में ले गया।

मणि और स्वामीनाथन को कमरा बहुत बड़ा लगा। उसमें कुर्सियां थीं, असली कुर्सियां और बड़ी मेज भी, जिस पर राजम की किताबें करीने से सजी हुई थीं। उन्हें सब से ज्यादा प्रभावित किया मेज पर रखी घड़ी ने। इतने छोटे लड़के के पास घड़ी! उन्हें लगा राजम के पिता असाधारण आदमी हैं।

तभी राजम कमरे में आया। उसे पता लग गया था कि उसके दोस्त इंतजार कर रहे हैं। लेकिन वह उनसे कुछ मिनट इंतजार करवाना चाहता था, जैसा कि उसने अपने पिता को करते देखा था। अत: वह साथ वाले कमरे में कुछ देर खड़ा-खड़ा नाखून चबाता रहा था। जब वह और खड़ा न रह सका तो अपने दोस्तों के सामने प्रकट हुआ।

"बैठो, बैठो...," उन्हें खड़ा देखकर वह बोला। कुछ ही क्षणों में वे तरह-तरह की बातों में उलझ गये, जैसे उनके अध्यापक, सहपाठी, उनके माता-पिता, खिलौने और खेल, आदि।

राजम उन्हें अलमारी तक ले गया और उसे खोल दिया। उसमें कई आश्चर्यचकित कर देने वाली चीजें थीं— छोटी रेलगाड़ियां, मोटर कारें, चाबी वाले खिलौने, जादुई लालटेन और स्लाइडें, बहुत सी चित्र-पुस्तकें और सैकड़ों दूसरी चीजें। मणि को सबसे अधिक कोने में रखी हवाई बंदूक ने आकर्षित किया। राजम ने कहा कि वे जिस चीज से चाहें खेल सकते हैं। थोड़ी ही देर में स्वामीनाथन कमरे में इंजन चला रहा था। मणि कमान से सामने की दीवार पर एक के बाद एक तीर छोड़ रहा था। जब वह इससे थक गया तो उसने बंदूक उठायी और सिक्के की गोलियां चलाकर आसपास के फर्नीचर को बरबाद कर डाला।

"तुममें से किसी को भूख तो नहीं लगी है ?" राजम ने पूछा।

"नहीं।" उन्होंने आधे मन से कहा।

"अरे सुनो!" राजम ने जोर से आवाज लगायी। एक सिपाही अंदर आया।

"रसोइये से कहो तीन जनों के लिए कॉफी और नाश्ता ले आए।" जिस अधिकार और सहजता के साथ राजम ने सिपाही को हुक्म दिया उससे उसके दोस्त आश्चर्य और प्रशंसा भाव से भर गये।

रसोइया मिठाई-नमकीन की बड़ी प्लेट लेकर दाखिल हुआ। उसने प्लेट मेज पर रख दी। राजम को लगा कि उसे अपने रौब का प्रदर्शन करना चाहिए।

वह रसोइये पर दहाड़ा, "इसे मेज से हटाओ, बेवकूफ!" रसोइये ने प्लेट को वहां से उठाकर कुर्सी पर रख दिया।

"गधा कहीं का... उठाओ इसे। यहां मत रखो।"

"राजू, तो फिर मैं इसे कहां रखूं ?" रसोइये ने पूछा।

राजम बरस पड़ा, "बदमाश, जबान चलाता है ?" रसोइया मुंह बनाकर कुछ बड़बड़ाया।

"इसे मेज पर रखो।" राजम ने आदेश दिया। रसोइये ने आदेश का पालन करते हुए धीरे से कहा, "अगर तुम इस तरह बोलोगे तो मैं तुम्हारी मां से कह दूंगा।"

"जाओ कह दो। मैं किसी की परवाह नहीं करता।" राजम ने रूखेपन से कहा। उसने एक कप के अंदर झांका और रसोइये को गंदा कप लाने के लिए कोसा। रसोइया थोड़ी देर देखता रहा फिर चुपचाप प्लेट उठाकर यह कहते हुए चल दिया, "कुछ खाना हो तो किचन में आकर ले लेना।"

मणि और स्वामीनाथन को इससे बड़ी निराशा हुई, क्योंकि खाने की चीजों को देखकर उनके मुंह में पानी आ रहा था। राजम के लिए तो यह सदमा था। दोस्तों के सामने उसे नौकर ने हरा दिया था। वह थोड़ी देर चुप बैठा रहा और फिर कृत्रिम हंसी हंसकर बोला, "रसोइया बेवकूफ है। एक मिनट रुको।" और बाहर चला गया। थोड़ी देर में वह प्लेट उठाये अंदर आया। उसके दोस्त उसकी हार पर हैरान थे। साफ था कि वह रसोइये पर अपनी हेकड़ी नहीं चला सका था। स्वामीनाथन समझ नहीं पा रहा था कि राजम ने रसोइये को गोली क्यों नहीं मार दी और मणि राजम से कहना चाह रहा था कि वह कुछ मिनट के लिए रसोइये को ठीक करने की उसे अनुमति दे दे। लेकिन राजम ने यह कहकर दोनों को शांत कर दिया, "मुझे खुद इसे लाना पड़ा। मैंने रसोइये को इस बदतमीजी के लिए इतनी जोर से लात मारी कि वह रसोई में बेहोश पड़ा है।"

चार

पूंछ क्या है ?

1

बुधवार को भूगोल के अध्यापक नहीं आये और पहली फार्म-ए के लड़कों के लिए तीन बजे से पौने चार बजे तक का समय मौज-मस्ती का था।

किसी वजह से स्वामीनाथन अपने दोस्तों के साथ न होकर अकेला था। वह शिशु-कक्षाओं के बरामदे में टहल रहा था। स्वामीनाथन को जो स्वयं चार फुट से ऊंचा नहीं था, शिशु कक्षाओं के लड़के बहुत ही छोटे लग रहे थे। उनकी तुलना में वह अपने को बहुत बड़ा और श्रेष्ठ मान रहा था। उन्हें गीली मिट्टी से खेलते और खिलौने बनाते देख उसने नाक-भौं सिकोड़ी। स्कूल में ऐसा काम करना उसे अर्थहीन लगा। क्या वे अपने घर के पिछवाड़े हाथी, आम या इसी तरह की दूसरी चीजें नहीं बना सकते हैं ? ये काम करने के लिए वे इतनी दूर स्कूल क्यों आते हैं ? स्कूल गंभीर चीजों के लिए होता है, जैसे भूगोल, गणित, बाइबिल और अंग्रेजी।

एक कमरे में उसने सब बच्चों को मिलकर तमिल के पहले दो अक्षर रटते हुए पाया। उसने दोनों कान बंद कर लिये और सोचा कि अध्यापक इतना शोर कैसे सहन करते हैं। वह आगे बढ़ा। एक अन्य कमरे में उसने बेढंगे कपड़े पहने शोर मचाते छोटे बच्चों की भीड़ देखी। बेंचों पर बैठकर टांगें झुलाते वे इतना शोर कर रहे थे कि उसका दिमाग चकराने लगा। उसने माथे पर बल डालकर इस आशा से मुंह बिचकाया कि अध्यापक को उसकी नाराजगी का अनुमान हो जाये, लेकिन दुर्भाग्य से अध्यापक स्वामीनाथन की तरफ पीठ किये बैठा था।

वह सीढ़ियों के नीचे रुका जो ऊपर दूसरी और तीसरी फार्म की बड़ी कक्षाओं तक जाती थीं। वह ऊपर जाकर उन कक्षाओं को देखना चाहता था, जिनमें पहुंचने की वह उत्सुकता से राह देख रहा था। वह दो-तीन सीढ़ियां चढ़ा और फिर उसका मन बदल गया। सोचा, कहीं हैडमास्टर ऊपर न हों, क्योंकि वे अक्सर बड़ी कक्षाओं को पढ़ाते थे। इन कक्षाओं के अध्यापक भी बहुत कठोर होते हैं और लड़कों का तो कहना ही क्या ? वे घमंडी भी होते हैं और दादागीरी भी दिखाते हैं। उसे दूर से चप्पलों की चीं-चीं आवाज

सुनाई दी और उसने हैडमास्टर की पद्चाप को पहचान लिया। वह वहां पकड़ा नहीं जाना चाहता था वरना उसे कई झूठमूठ के बहाने गढ़ने पड़ते।

सुखद आश्चर्य हुआ कि वह अपने ही दोस्तों से टकरा गया, जिनके बारे में वह सोच रहा था कि वे स्कूल में नहीं हैं। राजम और मणि को छोड़कर बाकी सब वहां थे। इमली के बड़े पेड़ के नीचे वे कोई खेल खेल रहे थे। स्वामीनाथन धीमी आवाज में किलकारी मारकर दोस्तों के साथ जा मिला। लड़कों पर इसकी जो प्रतिक्रिया हुई उससे उसे निराशा हुई। उन्होंने फीकी मुस्कान से उसकी तरफ देखा और अपने खेल में लग गये। स्वामीनाथन को सबसे अधिक आश्चर्य इस बात से हुआ कि हमेशा हंसमुख रहने वाला सोमू भी गंभीर था। स्वामीनाथन ने सोचा, जरूर कुछ गड़बड़ है। उसने ऊंचे स्वर को सहज बनाकर पूछा, "क्या मेरे लिए खेल में कोई जगह है ?"

किसी ने जवाब नहीं दिया। स्वामीनाथन ने जैसे घोषणा की, कि वह भी खेल में शामिल होने का इंतजार कर रहा है।

"लेकिन हम किसी और को नहीं ले सकते," शंकर ने तीखेपन से कहा। "कुछ लोग पूंछ के रूप में बहुत काम के होते हैं।" यह बात मटर ने कही थी। सब लड़के इस पर हंस पड़े।

"क्या कहा, पूंछ ?" शंकर बोला, "यह पूंछ की बात कहां से आ गयी ?"

"मेरी मरजी, कह दिया। तुम क्यों परेशान होते हो ? यह तुम्हारे ऊपर तो लागू नहीं होता।" मटर का उत्तर था।

"मुझे यह जानकर खुशी हुई। लेकिन क्या यह बात यहां किसी पर लागू होती है ?" शंकर ने फिर पूछा।

"हो भी सकती है।"

"पूंछ क्या है ?"

"वह लंबी सी चीज, जो गधे या कुत्ते के पीछे लटकी होती है।"

स्वामीनाथन को कुछ समझ नहीं आया, सिवाय इसके कि किसी बात के लिए उस पर कटाक्ष किया जा रहा है। उसके गाल सुर्ख हो गये ओर उसका मन हुआ कि रो दे।

तभी घंटी बजी और सब अपनी कक्षा की तरफ भागे। स्वामीनाथन भी अपनी सीट पर सुर्ख चेहरा लिए दुबक गया।

यह वेदनायकम का अंग्रेजी का पीरियड था। वे उस बूढ़े की कहानी पढ़ रहे थे, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए पेड़ लगा रहा था और राजा ने उसे दस रुपये दिये थे। स्वामीनाथन के भेजे में एक भी शब्द नहीं घुस रहा था, क्योंकि दिमाग एक उदास पीड़ा तथा खालीपन से भरा हुआ था। अगर उस समय उससे सवाल पूछा जाता तो उससे भारी गलती होना निश्चित था और शेष समय बेंच पर खड़े होकर बिताना पड़ता। लेकिन उसका भाग्य अच्छा था।



पीरियड खत्म हुआ। वह धीरे-धीरे अकेला घर जा रहा था। उसका मन बहुत परेशान था। उसके आगे कुछ गज की दूरी पर सोमू जा रहा था। स्वामीनाथन ने आवाज लगायी, "सोमू सोमू! रुकोगे नहीं ?" सोमू रुका और स्वामीनाथन उसके पास आ गया।

कुछ देर चुप रहने के बाद स्वामीनाथन ने कांपती आवाज में पूछा, "तुम लोगों को यह क्या हो गया है ?"

"कुछ खास नहीं," सोमू ने उत्तर दिया। फिर बोला, "वैसे तुम्हें बता दूं कि तुम्हें नया नाम दिया गया है। पूंछ, राजम की पूंछ। मुझे लगता है कि तुम्हारी नजर में हम अच्छे नहीं हैं। लेकिन हर लड़का पुलिस अफसर का बेटा कैसे हो सकता है ?" यह कह कर सोमू आगे बढ़ गया।

स्वामीनाथन की जिंदगी का यह शायद पहला सदमा था। उसके सोचने की सारी क्षमता को जैसे लकवा मार गया। जब उसके दिमाग ने फिर काम करना शुरू किया तो उसने सोचा कि वह सपना तो नहीं देख रहा था। शांत, हंसमुख, चाचा सोमू! क्या यह वही सोमू था जिसने कुछ देर पहले उससे बात की! राजम को चाहने और उसके साथ घूमने में बुरा क्या है ? इससे से वे लोग नाराज क्यों हुए ?

वह घर पहुंचा। कोट, टोपी और पुस्तकें मेज पर पटककर उसने वहां रखी ठंडी कॉफी जल्दी-जल्दी गले से नीचे उतारी और मुंडेर पर बैठकर विनायक मुदाली स्ट्रीट की शोभा बढ़ाने वाले गंदे नाले के काले घुमावों को खाली नजरों से देखता रहा। काले पानी का रेला बहे जा रहा था और कागज के टुकड़ों, पत्तों, तिनकों आदि को अपने साथ बहाये लिये जा रहा था। टीन का एक छोटा टुकड़ा भी धीरे-धीरे बहता जा रहा था। स्वामीनाथन की इच्छा हुई कि इसे हाथ डालकर निकाल ले। लेकिन उसने उसे जाने दिया। उसका मन निष्क्रिय था। उसने उस चमकती हुई चीज को बह जाने दिया। अब टीन कंपाऊंड की दीवार के सिरे पर था; अब वह पेड़ के नीचे पहुंच गया था। जब एक ईंट ने उसका रास्ता रोका तो स्वामीनाथन को थोड़ी चिढ़ हुई। उसने सोचा कि या तो ईंट को भी साथ बहना चाहिए या एक तरफ हट जाना चाहिए ताकि यातायात बिना बाधा के चलता रहे। टीन के टुकड़े ने अब अपने को छुड़ा लिया था। वह तेजी से आगे बढ़ा और गली के नुक्कड़ पर एक मोड़ के पीछे ओझल हो गया। स्वामीनाथन दौड़कर घर के अंदर गया और एक कागज लेकर उसकी नाव बनायी। उसने देखा कि एक चींटा बेमतलब घूम रहा है। उसने सावधानी से उसे पकड़ा, नाव में डाला और नाव को नाले में बहा दिया। बड़े उत्साह से वह इसकी तेज गति को देखने लगा। उसने सांस रोक ली जब नाव अपने यात्री के साथ उस खतरनाक क्षेत्र के करीब पहुंची जो अटके हुए तिनकों, पत्तों आदि से बना था। नाव ने दायीं ओर खूबसूरत मोड़ काटा और इस तरह उसने अपने को नष्ट होने बचा लिया। वह फिर आगे और आगे बढ़ती गयी। अब वह एक अत्यंत खतरनाक जगह पर पहुंची जहां पानी भंवर के रूप में घूम रहा था। स्वामीनाथन को यकीन हो गया कि

अब उसकी नाव का अंत समय आ गया है। उसे संदेह नहीं रहा कि उसकी नाव भंवर में डूब जायेगी। नाव डगमगाती हुई झटके खाती रही। सौभाग्य से पड़ोस के किसी घर की रसोई से पानी का नया रेला आया और वह नाव को खतरे से बाहर आगे बहाकर ले गया। अब वह बहुत तेज रफ्तार में बहे जा रही थी और स्वामीनाथन को लगा कि वह उलट जायेगी। फिर वह शांत हो गयी और अपनी सामान्य गति से आगे बढ़ने लगी। लेकिन जब वह एक पेड़ के नीचे पहुंची तो एक मोटा, सूखा पत्ता उसके ऊपर आ गिरा और वह उलट गयी। स्वामीनाथन दौड़कर उस जगह पहुंचा कि कम से कम चींटे को तो बचा ले। उसने पानी में बड़ी देर तक ढूंढ़ा, लेकिन चींटे का पता न था। नाव और उसका यात्री दोनों नष्ट हो गये थे। उसने धूल की चुटकी उठायी, चींटे की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना में कुछ कहा और फिर उसे नाले में डाल दिया।

2

कुछ ही दिनों में स्वामीनाथन ने सोमू और दूसरे लड़कों के दुश्मन के रूप में अपनी स्थिति को सहज ढंग से स्वीकार कर लिया।

फिर भी, कभी-कभी अपने पुराने मित्रों से बात करने की उसकी तीव्र इच्छा होती थी। जब बाइबिल पढ़ाने वाला अध्यापक होंठ सिकोड़कर नाक खुरचता था तो स्वामीनाथन में तीव्र ललक उठती थी कि मटर की टांग कुचल कर हंसे क्योंकि इस मजाक का वे कई सालों से आनंद लेते रहे थे। लेकिन अब स्वामीनाथन इस इच्छा को दबा लेता था और अकेले ही दबी हंसी हंस लेता था। इसी तरह जब लाल टोपी वाला लड़का अपनी सीट पर ऊंघता था और हर बार जब उसका सिर नीचे गिरता और वह झटके से जागता तो स्वामीनाथन की इच्छा मटर के कान में यह कहने की होती, "पहली बेंच की तीसरी सीट पर लाल टोपी को देखो, वह नीचे गिरनेवाला है।" लेकिन उसे होंठ काटकर चुपचाप बैठे रहना पड़ता।

सोमू उसी की तरफ देख रहा था। स्वामीनाथन को लगा कि उसकी नजरों में दोस्ती का भाव है। एक क्षण के लिए यह सोचकर उसका मन खुशी से भर गया कि सोमू फिर से दोस्ती करना चाहता है। दोनों कुछ देर एक-दूसरे को टकटकी बांधकर देखते रहे, और जैसे ही स्वामीनाथन के चेहरे पर दोस्ती के मधुर भाव उभरने को हुए, सोमू का चेहरा कठोर हो गया ओर उसने नजरें फेर लीं।

स्वामीनाथन कंपाऊंड में मटरगश्ती कर रहा था। तभी उसे पीछे परिचित आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़ा तो देखा कि सोमू, शंकर और मटर उसके पीछे आ रहे थे। स्वामीनाथन यह निर्णय नहीं कर सका कि रुककर उनके साथ हो लेना चाहिए या उन्हें निकल जाने देना चाहिए और फिर दूसरी तरफ चल देना चाहिए। कानों के पीछे तीन जोड़ी शत्रुतापूर्ण

आंखों के बारे में सोचते हुए उसे काफी परेशानी हो रही थी। उसे लगा कि उसके शरीर की हर मामूली सी हलचल पर भी पीछे-पीछे आने वाले पुराने दोस्त व्यंग्य भरे शब्द कह रहे होंगे। उसे यह भी लगा कि उनकी आंखें उसकी चाल पर या उसके पुस्तकें उठाने के ढंग पर हंस रही हैं। उसकी गर्दन पर जरा-जरा खुजली होने लगी। उसका हाथ उठने को हुआ लेकिन उसने यह सोचकर इच्छा को दबा दिया, कि उसके गर्दन खुजलाने को छह आंखें ध्यान से देख रही होंगी।

वह दायीं ओर मुड़कर स्कूल के हाल में प्रवेश करना चाहता था। लेकिन इसे कायरता मान लिया जाता। लड़के सोचते कि वह उनसे डरकर ऐसा कर रहा है। वह भाग जाना चाहता था, लेकिन वह भी अच्छा न होता। वह वापस मुड़कर उलटी दिशा में जाना चाहता था, किंतु इससे वह उन लड़कों के आमने-सामने पड़ जाता। अत: उसके सामने एकमात्र रास्ता था कि हिम्मत से चलता जाये और यह व्यक्त न होने दे कि वह पीछे आने वालों के प्रति सचेत है। यही लड़के एक दिन पहले क्या थे ओर अब कितने खतरनाक बन गये हैं। स्वामीनाथन इस परिवर्तन पर चकित था।

अब यह सब असह्य लगने लगा था। उसे लगा कि उसकी टांगें हिचकोले खाने लगी हैं और चलते-चलते उसके पैर एक-दूसरे से उलझ रहे हैं। अब मुड़कर स्कूल के हाल में प्रवेश करने का समय नहीं था। वह समय निकल चुका था। अब बचने का एक ही रास्ता था और वह यह कि वह भाग खड़ा हो। यह बहुत जरूरी था। उसने एक चाल चली। वह अचानक खड़ा हो गया। दांए-बाएं घूमकर किसी चीज को ढूंढ़ने का प्रयास किया और फिर जोर से बोला, "मेरी कापी कहीं रह गयी।" फिर उसने हाथ उठाया और हिरण की तरह दौड़ पड़ा।

पांच

पिताजी का कमरा

1

आज शनिवार था और राजम ने शाम को आने का वायदा किया था। स्वामीनाथन उत्साह से भरा हुआ था। लेकिन उसकी मेजबानी कहां की जाये ? उसका अपना कमरा ठीक रहेगा। लेकिन इसमें तो पिताजी अक्सर कपड़े बदलने आ जाते हैं। फिर स्वामीनाथन को यह सोचकर राहत मिली कि इस बीच वे अदालत में रहेंगे। उसने अपनी मेज को अच्छी तरह साफ किया और किताबों को ठीक से लगाया। उसके पिता ने कमरा देखा तो चकित रह गये और इसके लिए स्वामीनाथन की प्रशंसा की। इसके बाद स्वामीनाथन दादी के पास गया और बोला, "दादी! मैंने तुम्हें राजम के बारे में बताया था न...!"

"हां...हां, वही न जो खूब हट्टाकट्टा है, लेकिन परीक्षा में कभी पास नहीं होता ?"

"नहीं, नहीं, नहीं। वह तो मणि है।"

"अच्छा याद आया, वह जिसे चना या जाने क्या कहते हैं। छोटा सा मजाकिया लड़का।"

स्वामीनाथन ने माथा पीटकर कहा, "देखो दादी, तुम मटर को राजम समझ रही हो। मेरा मतलब उससे है जिसने शेर मारे हैं और जिसके पिता पुलिस अधीक्षक हैं ओर जो महान है।"

"अच्छा, वह लड़का...।" दादी ने जैसे चिल्लाकर कहा, "क्या वह यहां आ रहा है ? मुझे यह जानकर खुशी हुई।"

"हूं... लेकिन दादी, मुझे तुमसे एक बात कहनी है।"

"क्या तुम उसे मेरे पास लाओगे ? मैं उससे मिलना चाहती हूं।"

"देखते हैं...," स्वामीनाथन लापरवाही से बोला। "मैं वायदा नहीं करता। लेकिन मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि जब तक वह मेरे साथ हो, तब तक न तो तुम मुझे बुलाना और न मेरे कमरे में आना।"

"ऐसा क्यों ?" दादी ने पूछा।

"बात यह है...कि...कि तुम बहुत बूढ़ी हो गयी हो," स्वामीनाथन ने क्रूर निश्छलता से उत्तर दिया। दादी ने अपनी स्थिति को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

स्वामीनाथन के मन में यही बात घूम रही थी कि उसे अपने दोस्त को कुछ अच्छी चीज खाने के लिए देनी चाहिए। वह अपनी मां के पास गया जो मटर लिए बैठी थी और उसके पास केले के पत्तों का बंडल था। वह पास बैठकर घबराहट में एक पत्ते को तोड़ने-मरोड़ने और उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके बिखेरने लगा।

"यह सब यहां फर्श पर मत बिखेरो। मैं अब झाड़ू नहीं लगा सकती," मां ने कहा।

"मां, तुम आज शाम नाश्ते में क्या बना रही हो ?"

"शाम अभी दूर है, सोचूंगी।" मां ने उत्तर दिया।

"कोई अच्छी चीज बना दो न, मीठी और स्वादिष्ट। शाम को राजम आ रहा है। वैसी कॉफी मत बनाना, जैसी तुम हमेशा मुझे पिलाती हो। बहुत अच्छी और गरम होनी चाहिए।" उसे याद आया कि राजम के घर में हर चीज रसोइया कमरे में लाया था। "मां, तुम्हें बुरा तो नहीं लगेगा अगर मैं कॉफी, नाश्ता लेने किचन में न आऊं ? क्या तुम कॉफी वगैरह मेरे कमरे में भेज सकती हो ?" फिर वह रसोइये की तरह मुड़कर बोला, "देखो मेरे कमरे में इस मैली धोती में न आना। तुम्हें साफ उजली धोती-कमीज पहननी होगी।" कुछ देर बाद वह बोला, "मां, क्या तुम पिताजी से कह कर उनका कमरा एक या दो घंटे के लिए मुझे दिला सकती हो ?" मां ने कहा, "मुझे फुरसत नहीं है। खुद ही क्यों नहीं पूछ लेते ?"

"तुम कहोगी तो वे आसानी से दे देंगे," स्वामीनाथन का जवाब था।

फिर वह खुद ही पिताजी के पास पहुंचा और बोला, "पिताजी, आपसे एक बात कहनी है।"

पिताजी ने कागजों से नजर उठायी जिन पर वे झुके हुए थे।

"पिता जी, मुझे आपका कमरा चाहिए।"

"क्यों ?"

"मेरा एक दोस्त आनेवाला है।"

"तुम्हारे पास अपना कमरा तो है," पिता ने कहा

"मैं राजम को वह नहीं दिखा सकता।"

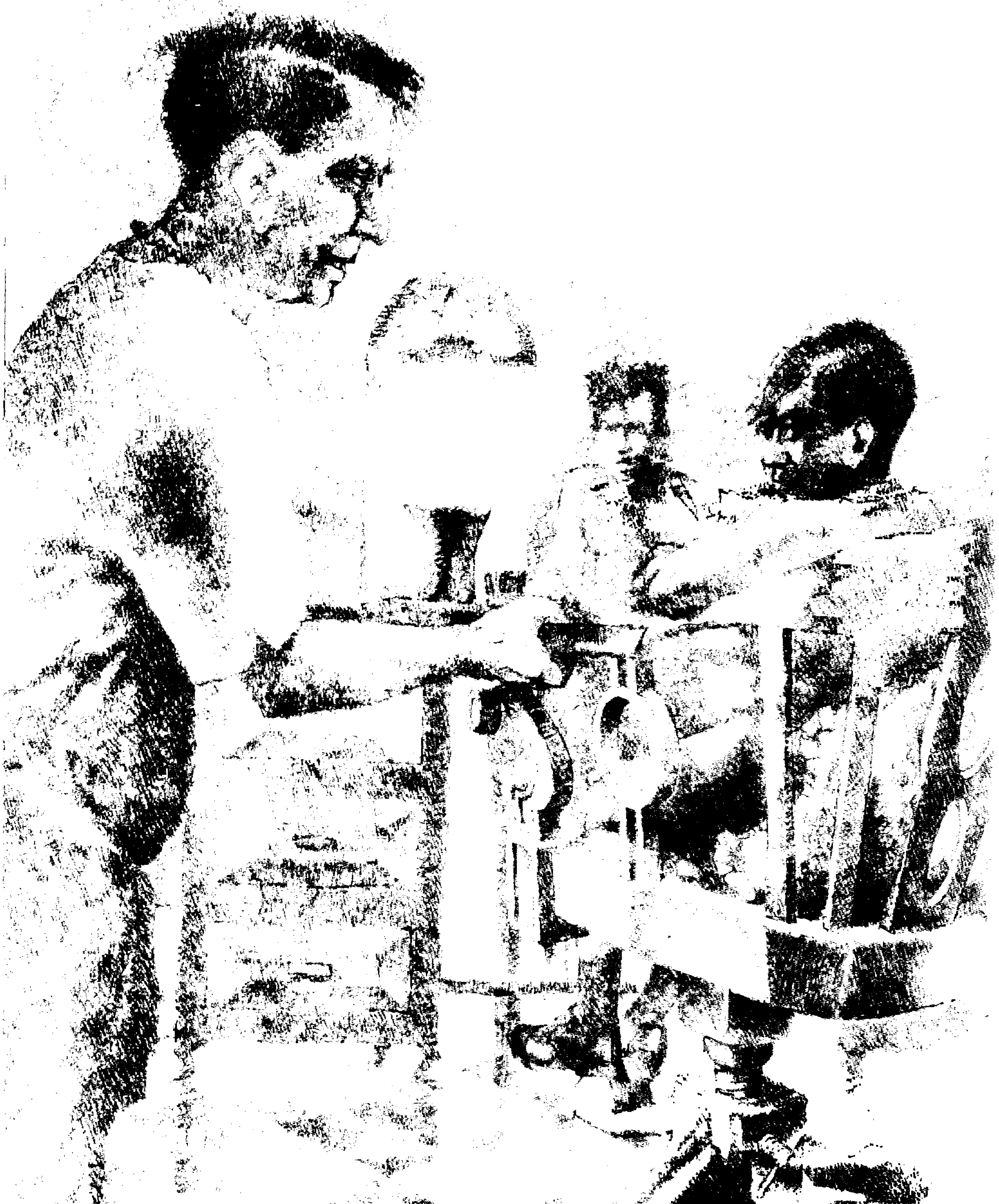
"कौन है यह राजम ? क्या बहुत बड़ा आदमी है ?"

"वह पुलिस अधीक्षक का बेटा है। वह...वह मामूली लड़का नहीं है।"

"अच्छा, अच्छा! ले लेना मेरा कमरा, लेकिन ध्यान रखना, चीजें उलट-पलट न हों।"

"मैं पूरा ध्यान रखूंगा। पिताजी, आप बहुत अच्छे हैं।

पिताजी ने ठहाका लगाया और कहा, "अब भागो और जाकर अपनी पढ़ाई करो।"



2

राजम का आगमन स्वामीनाथन के अनुमान से कहीं ज्यादा सहज रहा। पिताजी ने अपना कमरा खुला छोड़ दिया था। मां ने गेहूं, आलूचा और चीनी से बहुत स्वादिष्ट पकवान बनाया था। कॉफी तो बहुत ही अच्छी थी। दादी ने अपना वायदा पूरा किया और अपना बूढ़ा चेहरा राजम को नहीं दिखाया। स्वामीनाथन को केवल इस बात का मलाल रहा कि रसोइये ने अपनी धोती नहीं बदली थी।

स्वामीनाथन ने राजम को पिताजी की घूमती कुर्सी पर बिठाया। उसे आये तीन घंटे हो गये थे। उन्होंने सभी विषयों पर चर्चा की—मणि, एब्नेजर, रेलगाड़ियां, शेर का शिकार, पुलिस और भूत, आदि।

"तुम्हारा कमरा कहां है ?" राजम ने पूछा।

स्वामीनाथन ने गंभीर चेहरा बनाकर कहा, "यह मेरा ही कमरा है, क्यों ?"

राजम को इसे स्वीकार करने में कुछ देर लगी, "क्या तुम ऐसी किताबें पढ़ते हो ?" उसने मेज पर रखी चमकीले किनारों वाली बड़ी-बड़ी कानून की किताबों पर निगाहें दौड़ायीं। स्वामीनाथन परेशानी में पड़ गया।

राजम ने एक और सवाल से उसकी स्थिति पहले से ज्यादा खराब कर दी। उसने पूछा, "तुम्हारी किताबें कहां हैं ? उसके चेहरे पर जरा सी मुस्कान प्रकट हुई।

"बात यह है," स्वामीनाथन ने कहा, "कि यह मेज पिताजी की है और जब मैं बाहर होता हूं तो पिताजी यहां अपने मुवक्किलों से मिलते हैं।"

"लेकिन तुम अपनी किताबें कहां रखते हो ?"

स्वामीनाथन ने उस प्रसंग को बदलने की हताश कोशिश की, "राजम, तुमने मेरी दादी को देखा है ?"

"नहीं, मुझे दिखाओगे ?" मैं उनसे मिलना चाहता हूं।"

"अच्छा जरा रुको," और वह बाहर भाग गया। उसे उम्मीद थी कि दादी सोई होगी। किसी दोस्त को सोई हुई दादी दिखाना बहुत सुरक्षित था लेकिन स्वामीनाथन ने देखा कि वह बिस्तर पर आराम से बैठी हुई है। उसे निराशा हुई। वह उसकी ओर टकटकी बांधे देखता रहा और विचारों में खोया रहा।

"क्या बात है, बेटे ?" दादी ने पूछा, "तुम्हें कुछ चाहिए ?"

"नहीं, तुम सोई नहीं, दादी ?" कुछ क्षण बाद वह बोला, "मैं राजम को तुमसे मिलाने लाया हूं।"

"लाये हो ?" दादी उत्साह से बोली, "पास आओ राजम! मैं तुम्हारी शक्ल ठीक से देख नहीं पा रही हूं। तुम जानते हो, मैं बूढ़ी हूं और मुझे कुछ सुझाई नहीं देता।"

स्वामीनाथन को बहुत गुस्सा आया। उसने दांत पीसकर मन में कहा कि दादी को

राजम के सामने यह बकबक करने की क्या जरूरत थी।

राजम उसके बिस्तर पर बैठ गया। दादी ने उसके बालों में हाथ फेरा और कहा, "तुम्हारे बाल बहुत मुलायम हैं।" लेकिन असल में वे छोटे और कंटीले थे। फिर उसने पूछा कि क्या उसकी मां के पास बहुत से गहने हैं ? राजम ने बताया कि उसकी मां के पास एक काला ट्रंक है, जो गहनों से भरा हुआ है और एक हरा ट्रंक है जिसमें सोने-चांदी के बर्तन हैं। फिर राजम ने दादी को मद्रास के बारे में बताया—वहां के प्रकाश-गृह, समुद्र, ट्रामें और बसें, और सिनेमाघर। उन चीजों के बारे में सुनकर दादी आश्चर्यचकित रह गयी।

3

जब स्वामीनाथन ने कक्षा में प्रवेश किया तो चारों ओर बेंचों पर दबी हंसी सुनाई दी। वह अपनी सीट पर यह आशा करते हुए जा बैठा कि इस दबी हंसी का संबंध उससे नहीं है। लेकिन हंसी जारी रही। उसने आसपास देखा। उसकी नजर ब्लैकबोर्ड पर गयी और उसके गाल सुर्ख हो गये। ब्लैकबोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों से **पूंछ** लिखा था। स्वामीनाथन ब्लैकबोर्ड के पास गया और उसे अपने हाथों से मिटा दिया। उसने मुड़कर देखा। शंकर का सिर अपनी कापी पर झुका था और मटर अपना बस्ता खोल रहा था। बिना कुछ कहे स्वामीनाथन मटर के निकट गया और उसके गाल पर खींचकर थप्पड़ दे मारा। मटर रो पड़ा और कसम खाकर बोला कि उसने यह शरारत नहीं की। उसने तिरछी नजर शंकर पर डाली जो किसी काम में खोया था। स्वामीनाथन ने उसके पास जाकर एक थप्पड़ उसे भी जड़ दिया।

देखते ही देखते वहां हुड़दंग मच गया। शंकर, स्वामीनाथन और मटर गुत्थम-गुत्था होकर एक-दूसरे को नोचते हुए लात-घूंसे मार रहे थे। तभी घंटी बजी और राजम, सोमू तथा मणि ने कक्षा में प्रवेश किया। अध्यापक भी हक्का-बक्का हो खड़े रहे। वह देखने और बड़बड़ाने के सिवा कुछ नहीं कर सके। अध्यापक बूढ़े तमिल पंडित थे, जो स्कूल में सबसे दयनीय माने जाते थे।

सोमू और मणि ने लड़ने वालों को अलग किया। अध्यापक प्लेटफार्म पर चढ़कर अपनी कुर्सी पर बैठ गये। कक्षा शांत हो गयी। सोमू उठकर बोला, "सर, हमें बाहर जाने दीजिए। हम क्लास में बाधा नहीं डालना चाहते हैं।" अध्यापक ने शांत मुद्रा बनाये रखी, लेकिन मणि क्लास से बाहर निकल चुका था और जाते-जाते स्वामीनाथन तथा मटर को भी धक्का मारकर बाहर ले जा चुका था। सोमू और शंकर भी उसके पीछे-पीछे बाहर चले गये।

वे स्कूल के पास वाले खेतों की सुनसान जगह पर पहुंच गये। कुछ क्षण तनावपूर्ण शांति रही, फिर मणि ने कहना शुरू किया, "क्या हुआ है तुम लोगों को ? बदमाश कहीं

के! बोलो!" तीनों एक साथ बोलने लगे। स्वामीनाथन की आवाज सबसे ऊंची थी, "इसने, मटर के बच्चे ने ब्लैकबोर्ड पर 'पूंछ', बड़े-बड़े अक्षरों में पूंछ लिख दिया था।"

"नहीं, मैंने नहीं लिखा था," मटर ने चीखकर कहा।

"तो फिर इन दोनों ने लिखा होगा," स्वामीनाथन ने शंकर की तरफ इशारा किया।

"बदमाश! तुमने मुझे देखा था ?" शंकर गरजकर बोला। मणि ने उनके मुंह अपने हाथों से बंद कर दिये, "पूंछ का आखिर मतलब क्या है ?" उसने पूछा। उसे अब तक इसकी कोई जानकारी नहीं थी।

"इन्होंने मुझे राजम की पूंछ कहा," स्वामीनाथन ने रोते-रोते बताया। मणि का चेहरा कठोर हो गया। उसने पूछा, "राजम के बारे में बोलने की हिम्मत किसने की ?"

"ओह! हिम्मत... ?" सोमू ने दोहराया।

डर से कांपते शंकर और मटर की तरफ देखते हुए मणि बोला, "अगर तुममें से किसी ने यह हरकत की है तो...।"

"तो क्या ? तुम क्या करोगे ?" सोमू ने घृणा से मुस्कराकर पूछा।

"तुम्हारा क्या मतलब है सोमू ? क्या मतलब है तुम्हारा ?"

"देखो मणि," सोमू बोला। "बहुत दिनों से मैं तुम्हें यह बताने का मौका ढूंढ़ रहा था। तुम अपने को बड़ा बहादुर समझते हो न ?"

तभी मणि का हाथ उठा और सोमू की गर्दन पर गिरा। सोमू ने झटककर उसे पीछे हटा दिया। मणि ने सोमू को लात मारने की कोशिश की ताकि वह लुढ़क जाये। सोमू ने वार बचाकर मणि को लात मारी, जिसने मणि को लगभग दोहरा कर दिया।

सामने खड़े तीन लड़के अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। सोमू और मणि की लड़ाई! इनका दिमाग फिर गया है। उन्हें लगा कि सोमू और मणि एक-दूसरे की जान ही ले लेंगे। वे आपस में एक दूसरे को दोष देने वाली नजरों से देख रहे थे। फिर वे तीनों स्कूल की ओर भागे।

वे हैडमास्टर के कमरे में जा घुसे। हैडमास्टर ने बड़ी मुश्किल से उनकी बातों से जाना कि पास के खेत में इसी क्षण दो हत्याएं होने वाली हैं। पहले तो सुनकर उनका हंसने का मन हुआ। लेकिन लड़कों के गंभीर और उत्तेजित चेहरे देखकर उन्होंने हंसी रोक ली और अपनी ठोड़ी खुजलायी। फिर चपरासी को बुलाया और उसके साथ खेत की ओर लपके।

खेत में दोनों योद्धा गुत्थम-गुत्था हो रहे थे। हैडमास्टर और चपरासी ने आसानी से उन्हें अलग कर दिया। स्वामीनाथन को इससे बड़ी हैरानी हुई, क्योंकि तब तक वह सोचता था कि सोमू और मणि में इतनी ताकत है कि दुनिया में कोई भी उनकी बराबरी नहीं कर सकता।

छह

संकट में काम आनेवाला मित्र

1

तीन हफ्ते बाद एक शाम स्वामीनाथन ने मणि के घर के सामने खड़े होकर धीमे से सीटी बजायी। मणि उसके साथ हो लिया। दोनों यह अटकल लगाते हुए राजम के घर की तरफ चल पड़े कि राजम के घर पर उन्हें क्या अचरज देखने को मिलेगा। राजम ने कहा था कि उस शाम वे घर आएं तो वह उन्हें एक अनोखी चीज दिखायेगा।

स्वामीनाथन बोला, "मेरा ख्याल है, राजम यूं ही मजाक कर रहा था। यह हमें घर बुलाने की एक चाल भर है।" यह संदेह व्यक्त करने के लिए मणि ने उसे गटर में लगभग धकेल ही दिया।

"शायद उसने बंदर या ऐसी ही कोई चीज खरीदी है," स्वामीनाथन ने फिर एक अटकल लगाने का साहस किया। इस बार मणि ने उसकी बात मान ली। फिर उन्होंने उन सारी चीजों की कल्पना की, जो उन्हें आश्चर्य में डाल सकती थीं और फिर अंत में अटकलें लगाने की कोशिश छोड़ दी।

अब वे अपने दुश्मनों के बारे में बातें करने लगे। मणि ने कहा, "जानते हो, मैं क्या करने वाला हूं ? मैं सोमू की कमर तोड़ डालूंगा। मैं जानता हूं, वह कहां रहता है। मार्किट के पीछे कबीर गली में। मैंने उसे अक्सर रात के समय पान लेने मार्किट में दुकान पर जाते देखा है। पहले मैं पत्थर मारकर नगरपालिका की बत्ती बुझा दूंगा। तुम नहीं जानते, कबीर गली में कितना अंधेरा होता है।... मैं अपना मुगदर लेकर खड़ा रहूंगा और जैसे ही वह आता दिखाई देगा, टूटी हड्डियों के साथ धूल में पड़ा होगा।" स्वामीनाथन इस विचार से कांप उठा। मणि कहता गया, "इतना ही नहीं, मैं उस मटर के बच्चे को एड़ी के नीचे दबाकर जमीन में गाड़ दूंगा। और शंकर को उसकी चोटी से सरयू के किनारे वाले पीपल की जटा से बांधकर, उसे फांसी पर लटका दूंगा...।"

राजम के घर के पास पहुंचते ही उनकी बातचीत बंद हो गयी। गेट बंद था। वे दीवार फांद कर अंदर आ गये। एक नौकर दौड़ा-दौड़ा उनकी ओर आया और बोला, "तुम लोगों ने दीवार क्यों फांदी ?"

"क्या तुम दीवार के मालिक हो ?" मणि ने पूछा और जोर से हंस दिया।

"हड्डी-पसली टूट जाती तो... ?" नौकर ने कहा।

"तुम्हें इससे क्या मतलब ? तुम्हारी हड्डी-पसली तो सही सलामत है न ?" स्वामीनाथन ने उद्दंडता से पूछा और हंस दिया।

"एक बात और," मणि ने पूछा। "कहीं तुम पुलिस सुपरिंटेंडेंट साहब के बेटे तो नहीं ?"

"नहीं, नहीं," नौकर हकलाकर बोला।

"तो फिर सुनो," मणि ने उत्तर दिया, "हम पुलिस सुपरिंटेंडेंट साहब के बेटे से मिलने आये हैं।" नौकर तुरंत पीछे हट गया।

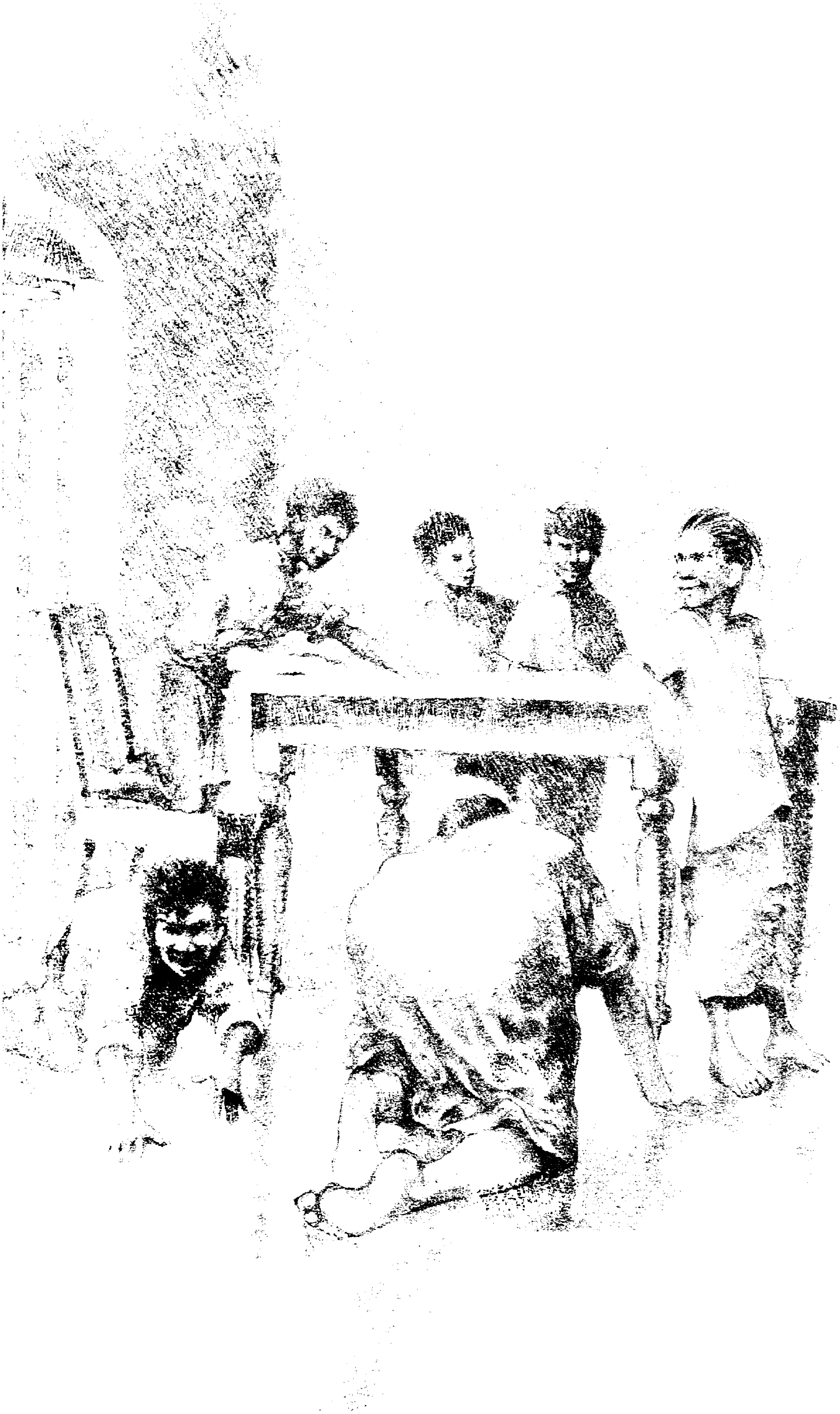
उन्होंने राजम के दरवाजे पर मुक्कों से दस्तक दी। जब अंदर से चिटकनी की आवाज आयी तो दोनों खंभे के पीछे छिप गये। राजम ने बाहर झांका और फिर दरवाजा बंद कर लिया।

वे आड़ से बाहर आकर दरवाजे के पास खड़े सोचने लगे कि आगे क्या किया जाये। स्वामीनाथन ने चाबी के छेद के साथ मुंह सटाकर बिल्ली की नकल में 'म्याऊं' की आवाज की। मणि ने उसे पीछे खींचकर अपना मुंह छेद के पास ले जाकर कुत्ते की आवाज निकाली। चिटकनी की आवाज फिर आयी और दरवाजा जरा सा खुला। मणि ने स्वामीनाथन के कान में कहा, "तुम अंधी बिल्ली बन जाओ और मैं अंधा पिल्ला बन जाऊंगा।"

मणि ने हाथों और घुटनों के बल जमीन पर चलते हुए आंखें बंद कर लीं और दरवाजे को सिर से धक्का देकर अंधे पिल्ले का अभिनय करते हुए राजम के कमरे में दाखिल हुआ। उसके पीछे स्वामीनाथन भी आंखें बंद किये बिल्ली का अभिनय करता अंदर आ गया। वे दोनों बिल्ली-कुत्ता बने कमरे में चक्कर लगाने लगे और राजम भी उनके स्वर में 'म्याऊं, म्याऊं' या 'भौं भौं' करके खेल को अधिक रोचक बनाने लगा। अंधे पिल्ले ने एक टांग से अपनी पीठ खुजायी और यह सोचकर कि यह टांग राजम की है, पिंडली को हल्के से काटा। आंखें खोलने पर उसने आश्यर्च से देखा कि वह अपने दुश्मन, सोमू की टांग को काट रहा था। उधर अंधी बिल्ली बने स्वामीनाथन ने एक दूसरी टांग को खुरचा और आंखें खोलने पर देखा कि वह उसके दुश्मन शंकर की टांग थी।

मणि कुछ देर हक्का-बक्का सा देखता रहा, फिर हड़बड़ा कर खड़ा हो गया। उसने चारों ओर देखा। उसका चेहरा लज्जा और क्रोध से तमतमा उठा था। उसने देखा कि शरारत से आंखें मिचमिचाता हुआ मटर भी एक कोने में बैठा था। मणि की इच्छा हुई कि उसका गला दबोच दे। मुड़कर देखा, राजम उसे गौर से देख रहा था और उसके होंठ दबी हंसी से अब भी कांप रहे थे।

जहां तक स्वामीनाथन की बात थी, वह चाह रहा था कि मेज या कुर्सी के नीचे के अंधेरे में वह गुम हो जाये।



"राजम, यह सब क्या है ?" मणि ने पूछा।

"तुम इतने बौखला क्यों गये हो ?"

"यह तुम्हारा कसूर है," मणि ने जोर देकर कहा, "मैं नहीं जानता था।"। उसने अपने चारों ओर निगाह डाली।

"अच्छा, अच्छा! लेकिन तुम्हें पिल्ले की तरह चलने और भौंकने के लिए मैंने तो नहीं कहा था।"

सोमू और उसके दोस्त हंस पड़े। मणि ने गुस्से से आसपास देखकर कहा, "मैं जा रहा हूं। यह जगह मेरे लिए नहीं है।"

राजम ने उत्तर दिया, "अगर तुम मुझसे फिर कभी मिलना और बोलना नहीं चाहते तो जा सकते हो।"

मणि सकपकाया। राजम उसे एक तरफ ले गया और शांत किया। इसके बाद वह स्वामीनाथन की ओर मुड़ा जो गहरे दुख में डूबा हुआ था। राजम ने उसे समझाया और यह कहकर उसकी प्रशंसा की, कि बिल्ली और कुत्ते की ऐसी अच्छी नकल उसने जिंदगी में कभी नहीं देखी। उसने स्वीकार किया कि थोड़ी देर तो वह उन्हें असली बिल्ली-कुत्ता ही समझता रहा। अगर वे मेले में ऐसा करतब करें तो उन्हें इनाम मिल सकता है। "अगर स्वामीनाथन और मणि एक बार फिर यह नकल करके दिखाएं तो मुझे खुशी होगी और मैं पिताजी को भी यह तमाशा देखने के लिए कहूंगा।"

इसका अच्छा असर हुआ। स्वामीनाथन और मणि को अपने पर गर्व हुआ। नाश्ता लेने के बाद वे खुश थे लेकिन कमरे में अन्य तीन लड़कों की उपस्थिति को वे निगल नहीं पा रहे थे।

वे इसी मन:स्थिति में थे कि राजम ने दोस्ती पर भाषण देना शुरू किया। उसने दोस्ती के संबंध में बहुत सी अच्छी बातें कहीं और मरणासन्न बूढ़े आदमी और लकड़ियों के गट्ठर की कहानी का उदाहरण देते हुए सिद्ध किया कि एकता में शक्ति होती है। जो मुश्किल के वक्त काम आये वही सच्चा मित्र है। फिर उसने दुश्मनी करने वाले को मिलने वाले दंड का रोंगटे खड़े करने वाला विवरण दिया। उसने कहा कि वेदों में लिखा है, जो आदमी दुश्मनी बढ़ाये उसे, मृत्यु के बाद, एक छोटे से कमरे में बंद रखा जायेगा। उसे नंगा करके तपते लोहे की चौकी पर खड़ा किया जायेगा। उसके चारों ओर मधुमक्खियों के छत्ते होंगे और उनमें नींबू जितनी बड़ी-बड़ी मधुमक्खियां होंगी। अगर वह चौकी से नीचे उतरने की कोशिश करेगा तो उसे कमरे में रेंगते हजारों बिच्छुओं तथा कनखजूरों के ऊपर पांव रखने पड़ेंगे।—

(सारे लड़कों को झुरझुरी आ गयी।)

— पापी को एक महीने तक बिना खाये-सोये इसी तरह खड़ा रखा जायेगा। महीने के अंत में उसे दूसरी जगह ले जाया जायेगा, जहां उबलते तेल की झील के ऊपर एक

बहुत संकरा पुल होगा, इतना संकरा कि वह एक बार में एक ही पांव उस पर रख सकेगा। इस पुल पर भी बहुत से भिड़ों के छत्ते और कांटेदार नागफनी के पौधे होंगे और पीछे से नुकीले भाले से धकेलकर उसे पुल पर चलाया जायेगा। उसे युगों-युगों तक उबलती झील में गिरने से बचने के लिए कभी एक पैर पर खड़ा होना पड़ेगा तो कभी दूसरे पैर पर और अनंतकाल तक उसे इसी तरह आगे बढ़ते रहना पड़ेगा।...

सभी उसके इस भाषण से बहुत प्रभावित हुए। इसके बाद राजम ने सबसे कहा कि वे आगे आयें और कहें कि वे किसी को दुश्मन नहीं बनायेंगे। अगर शंकर यह बात कहेगा तो उसे जिल्दवाली एक कापी इनाम में मिलेगी। अगर स्वामीनाथन यह वायदा करेगा तो उसे चाबी से चलने वाला इंजिन मिलेगा। सोमू कहेगा तो उसे एक बेल्ट मिलेगी। मणि प्रतिज्ञा करेगा तो उसे एक बढ़िया जेबी चाकू मिलेगा और अगर मटर यह वायदा करेगा तो उसे एक खूबसूरत सा पेन दिया जायेगा।

राजम ने अलमारी का दरवाजा खोलकर सारे इनाम दिखा दिये। कुछ देर चुप्पी छायी रही और सब लड़के बैठे नाखून चबाते रहे। राजम दोस्ती कराने के अपने अभियान में पसीना-पसीना हो गया।

सबसे पहले 'मटर' उठा। वह आलमारी के पास खड़ा होकर बोला, "मुझे पेन देखने दो।" राजम ने पेर उठाकर उसके हाथ में दे दिया। मटर ने उसे घुमा-फिराकर देखा और फिर कुछ कहे बिना राजम को लौटा दिया।

"तुम्हें यह पसंद नहीं ?" राजम ने पूछा।

मटर अलमारी में टकटकी लगाये देखता रहा, फिर बोला, "क्या मैं वह डिब्बा ले सकता हूं। उसने छोटे से डिब्बे की ओर इशारा किया जिस पर कई काले-पीले निशान और डिजाइन बने थे और ढक्कन पर ताजमहल का लघुचित्र था। राजम ने कहा, "नहीं, मैं यह नहीं दे सकता। इसे मैं रखूंगा।" वह रुका। याद आया कि उसके ट्रंक में इसी तरह के दो और डिब्बे थे। उसने अपना इरादा बदला और कहा, "नहीं, मुझे इसकी जरूरत नहीं है। तुम चाहो तो यह डिब्बा ले सकते हो।"

कुछ ही क्षणों में मणि अपनी हथेली पर चाकू को तेज कर रहा था। शंकर जिल्द वाली कापी को सहला रहा था और स्वामीनाथन इंजिन को ईर्ष्यापूर्वक अपने सीने से चिपकाये खड़ा था।

सात

नया मेहमान

1

मां दो दिनों से बिस्तर में पड़ी थी। स्वामीनाथन किचन में उसकी अनुपस्थिति से बहुत असुविधा अनुभव कर रहा था। उसे मां के कमरे में ले जाया गया, जहां उसने मां को अस्तव्यस्त और कमजोर हालत में बिस्तर में पड़ा पाया। मां ने उसे पास बुलाया। उसने स्वामीनाथन से पूछा कि वह इतना कमजोर क्यों दिखाई दे रहा है और क्या वह ठीक से खा-पी और सो नहीं रहा है। स्वामीनाथन टकटकी लगाये मां को देखता रहा। यह अलग ही मां लग रही थी। उससे बात करते समय स्वामीनाथन का व्यवहार ठंडा और संकोचपूर्ण था। मां का चेहरा देखकर उसके मन में उदासी भर गयी। उसने अपने को मां की पकड़ से छुड़ाया और बाहर भाग गया।

उसकी दादी ने बताया कि उसका एक भाई आनेवाला है। जानकर उसे कोई प्रसन्नता नहीं हुई।

उस रात उसे दीदी के बिस्तर में सोने को कहा गया। सारी रात बत्तियां जलती रहीं। जब भी उसकी आंख खुलती, उसे बाहर लोगों के जल्दी-जल्दी चलने की आवाजें सुनाई देतीं। देर रात को स्वामीनाथन की नींद टूटी तो उसने बड़े कमरे में एक लेडी डाक्टर को देखा। वह इस तरह पेश आ रही थी जैसे सारा घर उसी का हो। वह मां के कमरे में गयी और फिर कमरे से फुसफुसाहट तथा दबी कराहों की मिली-जुली आवाजें आयीं। वह गंभीर चेहरा लिए कमरे से बाहर आयी और सबको आदेश देने लगी। उसने पिताजी को भी किसी काम का आदेश दिया। पिताजी एक मिनट के लिए कहीं गायब हुए, फिर एक छोटी बोतल हाथ में लिए प्रकट हुए। वे बेचैनी से टहलने लगे। दबे-दबे स्वर, भागमभाग, गंभीरता, सरगर्मी, गरम पानी और दवाएं— एक नये प्राणी को संसार में लाने के लिए की जाने वाली ये सारी तैयारियां—स्वामीनाथन की समझ से बाहर थीं। इस बीच दादी पास से गुजरने वाले हर व्यक्ति से कुछ पूछ रही थी, किंतु कोई भी उसकी बात का जवाब नहीं दे रहा था।

स्वामीनाथन ने सोचा, यह किसलिए है ? दादी के बिस्तर की पांच दरियां काफी

आरामदेह थीं। उसके पांच तकिए नरम और गुदगुदे थे। दादी की निकटता में वह सुरक्षित अनुभव कर रहा था। इसके अलावा उसकी पलकें भारी हो रही थीं। उसे और क्या चाहिए था ? वह सो गया।



2

तमिल पंडित बिना दाढ़ी बने चेहरे और नाक पर चांदी के फ्रेमवाली तिरछी ऐनक लटकाए क्लास को तमिल व्याकरण की बारीकियां समझा रहे थे। समझाने वाले में समझने वालों की अपेक्षा ज्यादा उत्साह था। हवा में लगातार भिनभिनाहट भर रही थी। लड़के छोटे-छोटे समूहों में इक्ट्ठे होकर आपस में बातें कर रहे थे। पंडितजी बार-बार मेज पर हाथ मारकर क्लास को चुप कराने की कोशिश कर रहे थे। कुछ देर बाद उन्होंने कोशिश छोड़ दी और अपना भाषण जारी रखा। उनकी आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी। शंकर और कुछ दूसरे लड़के सामने के बेंच पर बैठे हुए थे। उनके कान खड़े थे और पेंसिलें काम कर रही थीं।

स्वामीनाथन और मटर सबसे पीछे की बेंच पर बैठे थे।

स्वामीनाथन ने कहा, "अरे सुनो मटर, मुझे आज सुबह नया भाई मिला है।" मटर की उत्सुकता जागी, "तुम्हें कैसा लगा ?"

"कैसा ? वह तो कुछ है ही नहीं। अजीब सा प्राणी है।" और स्वामीनाथन ने अपने भाई की नकल करते हुए आंखें मींचीं, होंठ भींचे, हाथों को मोड़कर छाती पर रखा, जीभ बाहर निकाली और सिर को इधर-उधर घुमाया। मटर की हंसी रुक नहीं पा रही थी। स्वामीनाथन आगे बोला, "उसके हाथ बहुत सुंदर हैं, छोटे-छोटे और कोमल। लेकिन उसका चेहरा तो भयानक है, मिर्च की तरह लाल।"

कुछ देर तक वे अध्यापक का भाषण सुनते रहे। मटर ने कहा, "स्वामी, बच्चे बड़ी तेजी से बढ़ते हैं। मैंने भी एक बच्चा देखा है, जो तुम्हारे भाई जितना ही था। लेकिन जब मैंने उसे अगली छुट्टियों में देखा तो मैं उसे पहचान ही नहीं पाया।"

आठ

परीक्षा से पहले

1

अप्रैल में, परीक्षाओं से केवल दो सप्ताह पहले स्वामीनाथन को लगा कि पिताजी का मिजाज बहुत खराब होता जा रहा है। वे बात का बतंगड़ बनाने लगे थे, जैसे उन्होंने अचानक अपने बेटे को तंग करने का फैसला कर लिया हो। अगर वह दादी से गपशप कर रहा होता है तो उससे कहा जाता है, "याद रखो, परीक्षा नजदीक है। तुम्हारी दादी इंतजार कर सकती है लेकिन परीक्षा इंतजार नहीं करेगी।" अगर वह मां के पीछे-पीछे भागता नजर आयेगा तो उसे ढुंढ़वाकर पढ़ाई करने का आदेश दिया जायेगा। अगर तालुका दफ्तर के घंटे के नौ बजाने के बाद उसकी आवाज कहीं सुनाई देगी तो पिता के कमरे से आवाज आयेगी, "स्वामी, तुम अभी सोये नहीं ? तुम्हें सुबह जल्दी उठना और पढ़ना है।" स्वामीनाथन के जीवन का यह बहुत कठिन समय था। एक दिन उसने चिढ़कर पिता से कहा, "आप परीक्षा को लेकर इतने परेशान क्यों हैं ?"

"तुम फेल हो गये तो ?"

"मैं फेल नहीं हो सकता।"

"नहीं हो सकते, लेकिन तब जब तुम पढ़ोगे और सवालों का ठीक जवाब दोगे। मान लो कि तुम फेल हो जाते हो और तुम्हारे सहपाठी तुम्हें पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं तो ? जिस दिन परीक्षा खत्म हो उस दिन से फिर अपनी मनमर्जी के काम कर सकते हो।"

स्वामीनाथन ने सोचा, मान लो मटर, मणि, राजम और शंकर मुझे छोड़कर दूसरी फ़ार्म-ए में चले गये तो ? पिताजी ठीक कहते हैं। फिर पिता ने और भी डराने वाली बात कही, "मान लो, तुमसे नीचे के पांचवीं के लड़के तुम्हारे सहपाठी बन गये, तो ?"

स्वामीनाथन ने आधा घंटा दशमलव के सवालों में लगाया।

2

स्कूल में सभी परीक्षा को लेकर चिंतित दिखाई दिये। कई सप्ताहों से किसी ने शंकर



के चेहरे पर मुस्कान नहीं देखी थी। सोमू बहुत फुर्तीला हो गया था और सिर्फ काम की बात करता था। मटर मजाक को समझने में काफी देर लगाता था और खुद तो कभी-कभार ही कोई चुटकुला सुनाता था। जहां तक राजम की बात थी वह पहली घंटी बजते ही स्कूल आ जाता था और आखिरी घंटी तक बैठा रहता था। अध्यापकों की सारी बातों को नोट करता था और मुश्किल से एक दर्जन शब्द ही बोलता था। मणि भी चिंतित दिखने लगा था और मौका पाकर शंकर को अलग ले जाकर, पाठ पढ़ते समय उठी शंकाओं को दूर करता था। वह स्कूल क्लर्क के पीछे-पीछे लगा रहता था। आमतौर पर माना जाता था कि क्लर्क सब कुछ जानता है और परीक्षा के प्रश्न-पत्रों की भी उसे पूरी जानकारी होती है।

एक दिन मणि क्लर्क के घर गया और ताजे बैंगनों से भरा थैला उसके चरणों में रखा। क्लर्क खुश हो गया और उसने मणि को अंदर ले जाकर स्टूल पर बिठाया।

क्लर्क बहुत अपनापन दिखा रहा था और मणि को लगा कि इस समय वह जो भी पूछेगा, वह बता देगा। क्लर्क पास बैठी अपनी मरियल सी बिल्ली के बारे में कुछ बड़बड़ा रहा था। उसकी अधिकांश बातें मणि के दिमाग में नहीं जा रही थीं। वह बड़ी बेचैनी से प्रश्न-पत्रों का प्रसंग छेड़ने का मौका ढूंढ़ रहा था। क्लर्क अब बिल्ली का प्रसंग बदलकर मक्खियों की बात करने लगा था। लेकिन मणि को इससे फर्क नहीं पड़ा जो उसके रुकते ही अपनी बात कह डालने की ताक में था। क्लर्क ने कहा, "मक्खियों को कभी आंख के पास नहीं भिनभिनाने देना चाहिए। आंख आने की बीमारी की जड़ यही हैं। जब तुम्हारी आंख आये तो तुम एक ही काम कर सकते हो, कच्चे प्याज का टुकड़ा ले लो।"

मणि को लगा कि क्लर्क कभी रुकेगा नहीं, तो वह बात काटकर बोल पड़ा, "सर, परीक्षा में एक हफ्ता रह गया है..."

क्लर्क कुछ सकपका कर बोला, "हां, हां, एक हफ्ता और है...तुम्हें ध्यान से रस वाला, बड़ा प्याज चुनना होगा, छोटा प्याज नहीं..."

"सर...," मणि बीच में रस भरे प्याज की बात अनसुनी करके बोला, "मैं परीक्षा के बारे में बहुत चिंतित हूं।" उसने दयनीय चेहरा बनाया।

"मुझे खुशी है। ध्यान से पढ़ोगे तो जरूर पास हो जाओगे।" क्लर्क ने भविष्यवक्ता की तरह कहा।

"सर मैं बहुत परेशान हूं। परीक्षा की बात सोचते-सोचते रात भर नींद नहीं आती है। अगर आप कुछ महत्वपूर्ण सवाल बता दें... पढ़ने को ढेर सारी चीजें हैं। मैं ऐसी चीजें नहीं पढ़ना चाहता हूं जो परीक्षा के लिए जरूरी न हों। इस तरह वह घुमा-फिराकर बातें करता रहा। क्लर्क ने समझ लिया कि वह क्या कहना चाहता है। उसने कहा, "अपने सारे पाठ पढ़ो, पास हो जाओगे।" मणि समझ गया कि घुमा-फिराकर बात करना उसके वश की बात नहीं है, अत: उसने साफ-साफ कहा, 'सर, मुझे परीक्षा में आने वाले कुछ

प्रश्न बता दीजिए।"

क्लर्क ने कहा उसे प्रश्न-पत्रों की कोई जानकारी नहीं है। मणि ने चापलूसी करते हुए कहा, "आप नहीं जानेंगे तो कौन जानेगा ?" थोड़ी और खुशामद करने पर क्लर्क कुछ 'बहुमूल्य संकेत' देने के लिए राजी हो गया। बावजूद इस बात के कि उसे पहली फार्म की पाठ्य-पुस्तकों की जानकारी नहीं थी, उसने सलाह दी, "तुम्हें भूगोल पर खास ध्यान देना चाहिए। शायद तुम्हें मानचित्र बनाने पर अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। और गणित में इस बात का ध्यान रखो कि तुम्हें हर रोज पांच सवाल करने हैं और तब तुम्हारे लिए गणित इतना आसान हो जायेगा जैसे केला निगलना।"

"और अंग्रजी... ?"

"उसकी चिंता मत करो। क्या तुमने सारे पाठ पढ़े हैं ?"

"जी सर...," मणि ने पूरे विश्वास के बिना कहा।

"फिर तो ठीक है। तुम्हे सभी जरूरी पाठ दोबारा पढ़ने चाहिए और समय मिले तो एक बार फिर पढ़ने चाहिए। बस, इतना काफी होगा।"

इन बातों से मणि को बहुत संतोष मिला। घर जाते समय मन ही मन मुस्कराकर उसने कहा—बैंगन पर चार आने खर्च करना बेकार नहीं गया।

3

मणि को अपने पर गर्व हुआ। मन ही मन उसे अपने सहपाठियों पर तरस आया जो श्रम को कम करने वाले बहुमूल्य संकेतों के बिना धैर्य से काम किये जा रहे थे। उसे लगा कि उसे स्रोत की जानकारी दिए बिना स्वामीनाथन को यह राज बताना चाहिए। वे स्कूल से घर जा रहे थे। अलग होने से पहले वे कुछ देर विनायक मुदाली और ग्रोव स्ट्रीट के चौराहे पर रुके और बातें करने लगे। मणि ने कहा, "मुन्ना! परीक्षा में क्या आ रहा है, इसका कोई अंदाजा है तुम्हें ?"

"पाठ्य-पुस्तकों के बाहर से तो कुछ आयेगा नहीं।" मणि ने इस मजाक की परवाह नहीं की। वह बोला, "मेरी बात ध्यान से सुनो। जानते हो पिछली रात सात से दस बजे मैंने क्या किया ?"

"मूंगफलियां खायी होंगी।"

"बेवकूफ, मजाक की बात नहीं है। मैंने दो मानचित्र भारत के, दो अफ्रीका के और एक यूरोप का बनाया।"

"यह कहो न कि एटलस के सारे मानचित्र बना डाले।"

स्वामी की टिप्पणी मणि को अच्छी नहीं लगी, फिर भी वह बोला, "हो सकता है...लेकिन मैं यह काम एक निश्चित उद्देश्य से कर रहा हूं।... हो सकता है मुझे परीक्षा

में आनेवाले एक-दो सवालों की जानकारी हो। लेकिन किसी को बताना मत, नहीं तो मैं मुसीबत में पड़ जाऊंगा।"

स्वामीनाथन उसकी गंभीरता से प्रभावित हुआ और उसने उससे सीख ग्रहण की।

4

घर पहुंचने पर स्वामीनाथन को कुछ ऊब-सी हुई। मां घर पर नहीं थी। दादी बातें करने के मूड में नहीं थी। उसने दादी को दिन भर की कुछ मजेदार घटनाएं सुनायीं। "दादी, जानती हो आज स्कूल में क्या हुआ। फर्स्ट-सी के एक लड़के ने दूसरे को बांह में चाकू मार दिया।"

"क्यों ?" दादी ने बिना उत्साह दिखाए पूछा।

"वे आपस में दुश्मन थे।" यह जानकर कि दादी पर इसका कोई असर नहीं हुआ, उसने उस दिन की दूसरी बड़ी घटना सुनायी, "दादी, दादी, एक और बात हुई। हैडमास्टर को दरवाजे की चौखट से ठोकर लगी और उनका पांव खून-खून हो गया। सारा दिन वे स्कूल में लंगड़ाते हुए चलते रहे। वे तीसरी फार्म की क्लास भी नहीं ले सके और लड़कों को छुट्टी मिल गयी। उनके तो मजे आ गये।"

"अच्छा!" दादी ने पूछा।

स्वामीनाथन ने माथा पीटा और यह मान लिया कि दादी सोने के मूड में है। वह थोड़ी देर अपने छोटे भाई के झूले के पास टहलता रहा। हालांकि शुरू-शुरू में वह अपने इस भाई की शक्ल-सूरत और संभावनाओं के बारे में उत्साहित नहीं था, अब दिनों-दिन उसकी भाई में रुचि बढ़ने लगी थी। अब वह छह महीने का हो गया था और सुंदर लगने लगा था। उसकी क़ई उपलब्धियां थीं। किसी के दिखाई पड़ने पर वह जोर-जोर से चिल्लाने लगता था। वह अपनी मुट्ठियां मुंह में डाल लेता था और कुहनी तक अपनी गोल-मटोल बांह को गीला कर लेता था। वह बड़ी जोर से हवा में पैर चलाता था। बार-बार मुस्कराकर अपने लाल मसूड़े दिखाता था। स्वामीनाथन को अब उसकी सब बातें प्यारी लगती थीं। वह घंटों झूले के किनारे बैठकर उसे 'स्वामीनाथन' बोलना सिखाता था। नन्हा भाई गले से कुछ आवाज निकालता था और स्वामीनाथन खुशी से चीख पड़ता था जैसे कि वह उसी का नाम ले रहा हो।

उसने झूले में झांककर देखा और यह जानकर निराश हो गया कि नन्हा भाई सोया हुआ है। वह यह सोचकर जोर से गला साफ करके खांसा कि उसका भाई जाग जाये। लेकिन वह सोया रहा। स्वामीनाथन ने थोड़ी देर इंतजार किया, फिर दबे पांव चला गया। उसे याद आया कि उसे सोने देना ही अच्छा है, क्योंकि नींद से जागने पर वह हमेशा घंटों तक घर में कुहराम मचाये रहता है।

शाम के समय घर पर रहना बहुत ही चिढ़ाने वाला होता था। सरयू के रेतीले किनारों और मणि की याद आते ही उसने ठंडी सांस भरी। पिताजी ने परीक्षा समाप्त होने तक उसे घर से बाहर जाने को मना किया था। कई बार उसे लगा कि वह पिताजी को बता दे कि वह उनके बारे में क्या सोचता है। लेकिन जाने क्यों, हम कोई काम करने के लिए पूरी तरह तैयार होकर भी कर नहीं पाते। उसे सिर्फ एक ही हफ्ते के लिए तो यह सब सहना है।... इस विचार ने उसे नयी शक्ति दी कि यह पीड़ा उसे ज्यादा से ज्यादा एक हफ्ता झेलनी पड़ेगी।

वह अपनी मेज पर जा बैठा और एटलस निकाल ली। उसने यूरोप का राजनैतिक मानचित्र खोला और उसे ध्यान से देखने लगा। उसे यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि इस टेढ़े-मेढ़े देश में लोग कैसे रहते होंगे। खाड़ी की तरह संकरी जगहों में रहने वाले लोगों का आकार-प्रकार कैसा होगा और वे संकरी भूमि के बीच दम घुटने से कैसे बचते होंगे। फिर एक और गुत्थी, जिस पर वह अक्सर सोचता था, उसे परेशान करने लगी — इन मानचित्र बनाने वालों ने कैसे जाना कि किसी देश का आकार कैसा है ? उन्हें कैसे पता चला कि यूरोप ऊंट के सिर जैसा है। शायद उन्होंने किसी ऊंचे मीनार पर खड़े होकर देखा हो, फिर उसकी नकल की हो। उसने सोचा कि शायद टाऊन हाल की चोटी पर खड़े होकर वह भारत को वैसा देख सके जैसा वह मानचित्र में दिखाई देता है। वह टाऊन हाल की छत पर कभी नहीं गया था और न ही जाना चाहता था। रंगा दर्जी कहता था (हालांकि स्वामीनाथन इस पर विश्वास नहीं करता था) कि टाऊन हाल की सबसे ऊपर की मंजिल में एक जेलखाना था, जहां पठान बच्चों को फुसलाकर ले जाते थे।

विचारों के ताने-बाने से अपने को अलग करके उसने यूरोप का मानचित्र बनाया। फिर मूल मानचित्र और खुद के बनाये मानचित्र को साथ-साथ रखकर देखा और इतना सही मानचित्र बनाने के लिए अपने को बधाई दी, यद्यपि उसके मानचित्र की बाहरी रेखा से एक अजीब सा जानवर बन रहा था जिसका आधा चेहरा सांड का और आधा ऊंट का था।

सात बज गये थे। पिता घर लौट आये थे। वे अपने बेटे को काम में लगा देखकर बहुत खुश हुए। मानचित्र पर नजर डालकर उन्होंने कहा, "बेटे, यह बहुत अच्छा बना है।" स्वामीनाथन को लगा कि वह क्षण उसकी सारी यातनाओं का पुरस्कार है। उसने पन्ने पलटे और अफ्रीका का मानचित्र खोल लिया।

5

परीक्षा से दो दिन पहले वह जरूरी चीजों की सूची बनाने बैठ गया। एक कागज पर उसने लिखा :



बग़ैर रूल का सफेद कागज	20 पन्ने
निबें	6
स्याही	2 शीशी
क्लिप	-
पिन	-

पेंसिल को दांतों में चबाते हुए उसने सूची दोबारा पढ़ी। उसे सूची बहुत निराशाजनक लगी। उसने सोचा भी नहीं था कि उसकी जरूरतें इतनी कम हैं। जब वह सूची बनाने बैठा था तो उसने सोचा था कि दो-तीन पन्ने भर जायेंगे। लेकिन कागज पर अभी पांच ही लाइनें लिखी गयी थीं। उसने सूची को फिर ध्यान से देखा। बग़ैर रूल का सफेद कागज—20 पन्ने। उसने अपने से पूछा, बग़ैर रूल का कागज ही क्यों ? यह बात तो तय थी कि वह जितनी भी कोशिश कर ले, कागज के दाएं कोने तक पहुंचते-पहुंचते लाइन नीचे मुड़ जायेगी। परीक्षा में यह ठीक नहीं। उसे लाइनदार कागज भी अपने पास रखने चाहिए। और निबें ? परीक्षा के लिए कितनी निबें चाहिए ? एक ? दो ? पांच ?... स्याही के कालम ने भी उसे परेशानी में डाला। कितनी स्याही खरीदनी चाहिए ? फिर क्लिपों और पिनों को लेकर उलझन हुई। उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि कितने क्लिपों और पिनों की जरूरत पड़ेगी, बल्कि उसे यह भी पता नहीं था

कि ये चीजें कम से कम कितनी मात्रा में खरीदी जा सकती हैं। क्या बिना नाराज किए दुकानदार से 6 पिनें और 6 क्लिप मांगे जा सकते हैं ?

अंत में संशोधित सूची इस प्रकार बनी :

बगैर रूल का सफेद कागज	20 पन्ने
रूलदार कागज	10 पन्ने
काली स्याही	1 शीशी
क्लिप	~~3~~ - ~~6~~ - 12
पिन	~~6~~ - 12

सूची अब भी संतोषजनक नहीं थी। विचार करने के बाद उसने उसमें 'कार्डबोर्ड पैड-एक' और 'एक रुपया अतिरिक्त खर्च के लिए' जोड़ा।

पिताजी काम में व्यस्त थे। स्वामीनाथन सूची हाथ में लेकर उनके सामने जा खड़ा हुआ। पिताजी काम में खोए हुए थे और उन्हें पता ही नहीं चला कि स्वामी खड़ा है। स्वामीनाथन को अचानक लगा कि पिता के पास किसी और समय आना चाहिए। अगर वह खाना खाने के बाद बात करेगा तो पिताजी सहानुभूति से सुनेंगे। दबे पांव वह बाहर निकला। अभी दरवाजे से बाहर निकला ही था कि पिताजी ने आवाज लगायी, "कौन है ?" उनकी आवाज में मिठास नहीं थी। "मैं पूछता हूं कौन है ?" पिताजी की दहाड़ सुनायी दी और इससे पहले कि स्वामीनाथन निर्णय कर सके कि निकल भागूं या रुककर जवाब दूं, पिताजी क्रुद्ध मुद्रा में उसके पास आ खड़े हुए।

"तुम थे ?"

"जी।"

"अरे बेवकूफ, 'कौन है, कौन है' चिल्लाते-चिल्लाते मेरा गला बैठ गया और तुम चुप्पी साधे रहे ? इस घर में तो एक सैकेंड के लिए भी चैन नहीं है। मैं यहां काम कर रहा हूं और हर पांचवे सैकेंड कोई न कोई अपना बेवकूफी भरा सवाल लेकर अंदर चला आता है। यह कैसे चलेगा ? जाओ, अपनी मां से कहो कि वह मेरे कमरे में न आये। अगर तेल बेचने वालों और सब्जी बेचने वाली औरतों की पूरी फौज भी पैसा मांगने आयी हो तब भी मैं परवाह नहीं करूंगा। उससे कहो कि उन्हें बाहर से ही भगा दे। तुम्हारी मां सोचती है...यह तुम्हारे हाथ में क्या कागज है ?"

"कुछ नहीं पिताजी," स्वामीनाथन ने जवाब दिया और जल्दी से कागज अपनी जेब में डाल लिया।

"क्या है यह ?" पिताजी ने ऊंची आवाज में कहा और कागज छीन लिया। त्यौरियां चढ़ाते हुए कागज पढ़ा और वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठे।

"यह क्या चीज है ?"

स्वामीनाथन को आवाज निकालने के लिए दो बार खांसना पड़ा, "यह ..

मेरी ... परीक्षा की सूची है।"

"कैसी परीक्षा-सूची ?"

"मेरी परीक्षा परसों शुरू हो रही है, आप को पता ही होगा।"

"और फिर भी तुम आवारा गधे की तरह घर में इधर-उधर घूम रहे हो। और यह क्या बेकार की सूची है। क्या तुम समझते हो कि रुपये, आने, पैसे आसमान से गिरते हैं ? स्वामीनाथन ठीक ऐसा नहीं सोचता था, लेकिन वह जो भी सोचता था वह लगभग ऐसा ही था। पिताजी ने मेज की दराज खींची और उसमें झांककर देखा, "तुम्हें जो भी चाहिए मुझसे ले सकते हो। क्लिप मेरे पास नहीं हैं और तुम्हें भी उनकी जरूरत नहीं है। और पैड ? पैड क्यों चाहिए ? क्या तुम्हारे स्कूल में डेस्क नहीं है। हम तो स्लेटों से ही काम चला लेते थे। आजकल तुम्हें पेन भी चाहिए, कागज भी चाहिए और कागज रखने के लिए पैड भी...," उन्होंने खौफनाक लाल पेंसिल निकाली और 'पैड' को सूची में से काट दिया। सूची लगभग फट गयी। उन्होंने कागज स्वामीनाथन की ओर फेंक दिया। स्वामीनाथन ने सूची को बड़ी उदास नजरों से देखा। कितने मजे से उसने सोचा था कि वह पैसे खनखनाता अमीर मार्ट में जायेगा और ये चीजें खरीदेगा।

वह बाहर जा ही रहा था कि पिताजी ने उसे वापस बुलाया और कहा, "हाल से बच्चे को, भगवान के लिए, कहीं और ले जाओ। मैं उसका चीखना-चिल्लाना सहन नहीं कर सकता।... उसे हो क्या गया है ?... तुम्हारी मां बहरी हो गयी है या उसे किसी की चिंता ही नहीं है ?... बच्चा रोते-रोते बेहोश हो जाये लेकिन उसे परवाह नहीं है...।"

नौ

स्कूल की छुट्टियां

1

एक तरफ सूखे होंठ, सूखा गला, स्याही से रंगी उंगलियां और थकान, और दूसरी तरफ परीक्षा समाप्त होने की खुशी के साथ स्वामीनाथन अंतिम दिन परीक्षा भवन से बाहर निकला।

बरामदे में खड़े होकर उसने पीछे हाल पर नजर डाली और थोड़ी बेचैनी महसूस की। अगर सभी लड़कों ने उसकी तरह बीस मिनट पहले अपनी उत्तर-पुस्तिकाएं दे दी होतीं तो उसे अधिक राहत महसूस होती। बायां कंधा दीवार से टिकाकर शंकर खोया-खोया सा बैठा था। राजम दूसरे रोशनदान के नीचे तीसरी फार्म के दो लड़कों के बीच बैठा था और मशीन की तरह कलम चलाये जा रहा था। मणि छत की कड़ियों पर निगाह टिकाये कलम से ठोड़ी खुजा रहा था। मटर सीट से पीठ टिकाये अपने उत्तर दोहरा रहा था। एक पर्यवेक्षक कुर्सी पर ऊंघ रहा था और दूसरा अबूझ दृष्टि लिए एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहल रहा था। निबों की रगड़, कागजों की खड़खड़ाहट और गला साफ करने की आवाजें चुप्पी भरे हाल से आ रही थीं।

स्वामीनाथन को अचानक लगा कि उसे इतनी जल्दी बाहर नहीं आना चाहिए था। लेकिन वह हाल में और कैसे रुक सकता था ? तमिल का पेपर पांच बजे तक चलने वाला था। उसने आखिरी सवाल की आखिरी पंक्ति साढ़े चार बजे तक लिख ली थी। छह प्रश्नों में से पहला प्रश्न उसने संतोषजनक रूप से किया था, दूसरे के बारे में उसे संदेह था, तीसरा ठीक था और चौथे के बारे में उसे साफ पता था कि वह गलत है (लेकिन उसे सही उत्तर का भी पता न था)। छठा उत्तर सबसे अच्छा था। इसका उत्तर देने में उसे एक मिनट लगा था। उसने यह सवाल साढ़े चार बजने में दो मिनट पहले पढ़ा, एक मिनट बाद उसने उत्तर लिखना शुरू किया और ठीक साढ़े चार बजे खत्म कर दिया। प्रश्न था—ब्राह्मण और शेर की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ? (एक ब्राह्मण तालाब के किनारे से गुजर रहा था। दूसरे किनारे से एक शेर ने उसे आवाज लगायी और उसे सोने की चूड़ी देने की बात कही। ब्राह्मण ने पहले तो चूड़ी लेने से मना कर दिया। किंतु जब शेर ने अपने को भोला-भाला और सच्चा बताया तो ब्राह्मण पानी में चलकर उसके

पास आ गया। इससे पहले कि वह चूड़ी लेने के लिए हाथ बढ़ाता वह शेर के पेट में पहुंच गया।) स्वामीनाथन ने कभी सोचा ही नहीं था कि इस कहानी में कोई शिक्षा है। लेकिन अब उसे लगा कि उसमें शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि प्रश्न-पत्र में कहा गया है। उसे यह निर्णय करने में एक मिनट लगा कि कहानी की शिक्षा यह है कि 'जब शेर सोने की चूड़ी दे तो हमें नहीं लेनी चाहिए' या 'सोने की चूड़ी का प्यार आदमी की जान ले लेता है'। उसने दूसरे जवाब में अधिक शिक्षा देखी और उसे लिख दिया। लिखने के बाद उसने हाल की बड़ी दीवार-घड़ी की ओर देखा। आधा घंटा और! वह आधा घंटा यहां क्या करेगा ? लेकिन सबसे पहले हाल से निकलते हुए उसे अटपटा-सा लगा। दूसरे लड़के भी उसकी तरह जल्दी और सही-सही उत्तर क्यों नहीं दे पा रहे ?

उसे समय काटना मुश्किल लगा। पेपर तीन घंटे की बजाए ढाई घंटे का क्यों नहीं रखा गया ? उसने बाहर बरामदे की ओर बड़ी आतुरता से देखकर सोचा था कि किसी तरह उसमें इतनी हिम्मत आ जाये कि वह उत्तर-पुस्तिका पर्यवेक्षक को देकर बाहर चला जाये— उसे काफी लंबे समय तक कोई परीक्षा नहीं देनी होगी... वह जो चाहे कर सकेगा... शहर में सुबह, शाम, दोपहर घूमा करेगा... किताबें फेंक देगा और दादी से खत्म न होने वाली कहानियां सुनेगा।

उसने देखा कि एक पर्यवेक्षक ध्यान से उसे देख रहा था। उसने तुरंत उत्तर-पुस्तिका में व्यस्त होने का बहाना किया। उसने सोचा, ऐसा करते हुए वह उत्तर-पुस्तिका को थोड़ा दोहरा भी सकता है। उसने पहले सवाल के जवाब की कुछ पंक्तियां पढ़ीं और उक्ता गया। फिर पन्ने पलटते हुए आखिरी सवाल के जवाब पर नजरें गड़ायीं। उसे दोहराने का बहाना करना पड़ा। वह शेर की कहानी की शिक्षा को ध्यान से देखता रहा, यहां तक कि सब अर्थहीन लगने लगा। उसने कलम से काम लेना शुरू किया। उसने अंतिम पंक्ति के बाद समाप्ति-सूचक डैश (-) को सुधारने का प्रयास किया जिससे डैश एक जटिल रेखाचित्र बन गया।

उसने यह सोचते हुए फिर दीवार-घड़ी की ओर देखा कि शायद अब पांच बज गये होंगे। किंतु साढ़े चार के बाद 10 मिनट और बीते थे। दो-तीन लड़कों को पेपर देते और बाहर जाते देखा तो वह खुश हुआ। उसने जल्दी से पेपर को मोड़ा और फ्लैप पर सुंदर मोटे अक्षरों में लिखा :

'तमिल तमिल
डब्ल्यू. एस.. स्वामीनाथन
फर्स्ट फार्म, 'ए' सेक्शन
एल्बर्ट मिशन स्कूल
मालगुड़ी
दक्षिण भारत
एशिया।'

2

घंटी बजी। दो-दो, तीन-तीन की टोलियों में लड़के हाल से निकले। पिछले तीन घंटों का वातावरण एकाएक बदल गया। चारों ओर उत्साहपूर्ण बातचीत का कोलाहल भर गया।

स्वामीनाथन ने एक सहपाठी से पूछा, "तुमने आखिरी सवाल के जवाब में क्या लिखा ?"

"कौन सा ? शिक्षा वाला ? तुम्हें याद नहीं है, अध्यापक ने क्लास में क्या बताया था ? सोने के लालच में ब्राह्मण की जान गयी।"

"सोना वहां कहां था ?" स्वामीनाथन ने आपत्ति की, "वहां तो सिर्फ सोने की चूड़ियां थीं। तुमने इसका जवाब कितना लंबा दिया ?"

"एक पृष्ठ," सहपाठी ने उत्तर दिया।

स्वामीनाथन को यह उत्तर अच्छा नहीं लगा। उसने सिर्फ एक पंक्ति लिखी थी। "क्या ? तुम्हें इतना लंबा जवाब नहीं लिखना चाहिए था।"

थोड़ी देर बाद उसे राजम और शंकर मिले, "हां भई, तुम लोगों को पेपर कैसा लगा ?"

"तुम्हें कैसा लगा ?" शंकर ने पूछा।

"बुरा नहीं था," स्वामीनाथन बोला।

"मुझे तमिल से ही डर लग रहा था," राजम ने कहा। "अब लगता है मैं बच गया। पास होने लायक नंबर तो मिल ही जायेंगे।"

"नहीं, ज्यादा मिलेंगे, ए क्लास," शंकर बोला।

"अरे सुनो," स्वामीनाथन कहने लगा, "एक बेवकूफ ने शिक्षा वाले सवाल के जवाब में पूरा पृष्ठ लिख डाला है।"

"मैंने तो तीन-चौथाई पृष्ठ ही भरा," राजम बोला।

"और मैंने आधे से कुछ ज्यादा," शंकर ने कहा जो इन मामलों का विशेषज्ञ माना जाता था।

"मैंने भी इतना ही लिखा, लगभग आधा पृष्ठ," स्वामीनाथन अपनी अंतरात्मा के घाव पर जैसे मरहम लगाते हुए झूठ बोल गया और उस क्षण के लिए उसने अपने झूठ पर विश्वास भी कर लिया।

"अरे, तुम लोग जानते हो न, कल से स्कूल की छुट्टी...।"

"तो फिर कल क्या करोगे ?" किसी ने पूछा।

"मैं अपनी किताबें चूल्हे में डाल दूंगा," स्वामीनाथन बोला।

शंकर ने कहा, "मेरे पिता ने छुट्टियों में पढ़ने के लिए कई किताबें मुझे खरीद दी हैं। जहाजी सिंदबाद, अलीबाबा, आदि।"

मणि हाथ ऊपर उठाकर रोता-झींकता हुआ आया, "वक्त बहुत ही कम था। वरना मैं आखिरी सवाल को तो उड़ा सकता था।"

मटर भी कहीं से प्रकट हुआ। उसके बाएं गाल पर स्याही की बड़ी लकीर थी, "हैलो शंकर, फर्स्ट डिवीजन ?"

"नहीं, मुश्किल से 35 मिलेंगे।"

"अरे बदमाश झूठ बोलते हो ? अगर तुम्हें फर्स्ट डिवीजन मिली तो मैं तुम्हारी चुटिया काट दूंगा। ठीक ?"

पंद्रह मिनट बाद फिर घंटी बजी। सारा स्कूल हाल में इकट्ठा हो गया। सबके चेहरे पर खुशी थी और बातों में अच्छी दोस्ती की झलक थी। अध्यापक भी अपनापन दर्शाते हुए खुश लग रहे थे। अध्यापक एब्नेजर ने मणि को देखकर पूछा, "कहो बुद्धूराम, तुम अपनी छुट्टियां कैसे बरबाद करोगे ?"

"सर, मैं सोऊंगा," मणि दोस्तों की तरफ आंख मारकर बोला।



"क्या स्कूल वापस आने तक तुम्हारे दिमाग में कुछ सुधार होगा ?"

"यह कैसे हो सकता है सर, जब तक कि आप शंकर का सिर काटकर मुझे भेंट नहीं करते ?" इस पर जोर का ठहाका लगा। आज तो किसी भी बात पर ठहाका लग सकता था। वातावरण ही ऐसा था। ड्राइंग मास्टर लड़कों के पैरों की कतार के साथ अपनी छड़ी से लकीर खींच रहा था, क्योंकि उसे लगा था कि कुछ लड़कों के पैरों की उंगलियां असाधारण रूप से लंबी हो रही हैं।

हैडमास्टर मंच पर आये और शोर के थमने का इंतजार करने के बाद उन्होंने छोटा सा भाषण दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल जून की 19 तारीख तक बंद रहेगा और 20 जून को खुलेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि लड़के अपना समय नष्ट नहीं करेंगे और कहानियों की किताबें पढ़ते रहेंगे तथा अगली क्लास की किताबों पर नजर डालते रहेंगे, क्योंकि वे आशा करते हैं कि सब अगली क्लास में जायेंगे। अब एक मिनट और। प्रार्थना होगी और उसके बाद सब लड़के अपने-अपने घर जा सकते हैं।

प्रार्थना के अंत में जैसे तूफान आ गया। ऊंची आवाजों और चिल्लाहटों का झुंड रेले की तरह हाल से बाहर निकला। इस सारी भगदड़ में स्वामीनाथन मणि के साथ लगा रहा क्योंकि स्कूल में यह आम धारणा थी कि आखिरी दिन दुश्मन एक-दूसरे को छुरे मारते हैं। जहां तक उसे याद है, स्वामीनाथन का कोई दुश्मन नहीं था। लेकिन कौन जाने ? स्कूल बुरी जगह है।

मणि ने स्कूल के गेट पर तेज़ी से काम किया। किसी का कलम छीना, किसी की दवात और उन्हें तोड़ दिया। उसके आसपास लड़कों की खुशी और उत्तेजना से भरी भीड़ थी। एक-एक चीज के टूटने पर खुशी की चीत्कार उठती थी। एक-दो छोटे बच्चों ने दबे स्वर में विरोध किया लेकिन मणि ने उनके हाथों से दवातें छीन लीं। फिर ढक्कन खोलकर स्याही उन्हीं के कपड़ों पर गिरा दी। इस काम में उसके सहायकों का एक छोटा दल भी था, जिसमें स्वामीनाथन प्रमुख था। उस क्षण के उत्साह में आकर उसने अपनी दवात खुद ही अपने सिर पर उलट ली थी और बहती स्याही से उसकी आंखों के नीचे काले दायरे पड़ गये थे।

पुलिस का एक सिपाही सड़क से गुजरा। मणि ने उसे आवाज दी, "सिपाही जी, सिपाही जी, इन लड़कों को गिरफ्तार कर लो।" इसके साथ ही सैकड़ों कंठों से निकले विजय-घोष से आसमान गूंज उठा। फिर कुछ और दवातें फोड़ी गयीं तथा कुछ और कलम तोड़े गये। इस सारे तमाशे के बीच मणि जोर से बोला, "कोई सिंगाराम की पगड़ी ले आये, मैं उसे रंग दूंगा।"

स्कूल का चपरासी सिंगाराम एकमात्र व्यक्ति था जो आजादी के इस उत्साह से प्रभावित नहीं था। जैसे ही उसके कानों में भनक पड़ी कि उसकी पगड़ी को रंगने की योजना बन रही है, वह डंडा लेकर भीड़ की तरफ दौड़ा और उधम मचाने वालों को तितर-बितर कर दिया।

दस

गाड़ीवान का लड़का

1

स्वामीनाथन के दो तरह के रिश्ते थे। एक तो था सोमू, शंकर और मटर के साथ जो विशुद्ध स्कूली था और स्कूल का गेट बंद होने के साथ अपने आप खत्म हो जाता था। दूसरा था राजम और मणि के साथ, जो मानवीय अधिक था। अब चूंकि स्कूल बंद था और उनके पास समय ही समय था तथा सभी हमेशा साथ-साथ रहते थे, अत: उन्होंने छुट्टियां बिताने का बहुत अच्छा कार्यक्रम बनाया।

स्वामीनाथन के जीवन की एक बड़ी साध थी कि वह एक पहिया ले। वह रात-दिन इसी के सपने देखता था। वह साइकिल के पुराने पहिये की कल्पना करके खुश होता था, जिसमें न टायर हो, न तारें। बस लकड़ी की छड़ी को खांचे में फंसाओ और पहिया हवा से बातें करने लगता है। उसे ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलता देख, और सफाई से मोड़ काटते देख कितना मजा आता है। दौड़ते समय उससे ऐसी आवाज निकलती है जो कानों को संगीत का आनंद देती है। स्वामीनाथन ने सोचा कि उस संगीत को सुनकर मालगुड़ी में कोई भी एक मील दूर से जान सकता था कि स्वामीनाथन आ रहा है। कभी-कभी वह रात साढ़े दस बजे तक पहिये के बारे में सोचता हुआ जागता रहता था। अपने पिता के दोस्तों से लेकर जान-पहचान के सफाई कर्मचारियों तक सबसे कहता फिरता था कि कोई उसे साइकिल का पहिया ला दे। वह किसी भी बढ़िया साइकिल को देखते समय उसके पहियों के बारे में सोचता रहता था। एक रात उसने सपना देखा कि वह अपने पहिये पर बैठकर नालप्पा के बाग के निकट से सरयू पार कर गया है। लोहे का पहिया आगे बढ़ने की कोशिश में नदी की रेत में धंस गया, लेकिन जब वह दूसरे किनारे पर पहुंचा तो पहिया एक तरह का घोड़ा बन गया था। वह एक छलांग में उसे घर ले आया, फिर रसोई में, फिर उसके बिस्तर पर ले गया और उसके पास लेट गया। यह सब तो बहुत अजीब था, लेकिन सपने का शुरू का भाग काफी सच था। सुबह जागने पर पहिया न पाकर उसे बहुत निराशा हुई।

अत्यंत निराशा में उसने एक दिन अपने मन की बात थोड़ी-सी जान-पहचान वाले

गाड़ीवान से कही। गाड़ीवान ने सहानुभूति दिखायी। उसने माना कि पहिये के बिना जीना सचमुच मुश्किल है। फिर उसने कहा कि वह कुछ घंटों में ही पहिया लाकर दे सकता है, अगर स्वामीनाथन उसे पांच रुपये दे। यह बहुत बड़ी रकम थी और स्वामीनाथन इसकी आशा दूर भविष्य में अपने पिता जितना ऊंचा होने पर ही कर सकता था। उसने यही बात गाड़ीवान से कही। इस पर गाड़ीवान ने उसे बताया कि पहिया कैसे मिल सकता है। शुरू में उसे छह पाइयां चाहिए। थोड़े समय बाद उसके छह आने बन जायेंगे और उसके बाद उन्हें छह रुपयों में बदला जा सकता है। इन छह रुपयों में से पांच रुपये स्वामीनाथन पहिये पर खर्च कर सकता है और छठा रुपया अपनी इच्छा के अनुसार खर्च सकता है। स्वामीनाथन ने कहा कि छठा रुपया गाड़ीवान को देकर उसे बहुत खुशी होगी। अगर स्वामीनाथन के मन में कोई संदेह था भी तो गाड़ीवान की लच्छेदार बातों ने उसे दूर कर दिया। गाड़ीवान का पाई से आना-रुपया बनाने का तरीका इस प्रकार था। उसके पास घर में एक खास धातु का बर्तन है जिसमें वह तांबे के सारे सिक्के रखता है। इसमें एक चमत्कारी जड़ी-बूटी डाली जाती है (इस जड़ी-बूटी का नाम वह किसी को नहीं बता सकता था, चाहे कोई कितनी ही धमकी दे)। उसने बताया कि वह सिक्कों के बर्तन को जमीन में गाड़ता है और फिर आधी रात के वक्त उस पर बैठकर योग-क्रिया करता है और इस तरह समय आने पर तांबा चांदी में बदल जाता है। वह सोना भी बना सकता है, किंतु उसके लिए जो जड़ी-बूटी चाहिए उसे ढूंढ़ने उसे ढाई सौ मील दूर अनजान जगहों पर जाना पड़ेगा और इतने कष्ट उठाना उसे लाभदायक नहीं लगता।

स्वामीनाथन ने उससे पूछा कि वह फिर कब उससे मिलने आये, क्योंकि उसे छह पाई प्राप्त करने के लिए कोई योजना बनानी पड़ेगी और उसे कार्यरूप देना पड़ेगा। गाड़ीवान ने कहा कि उसे तुरंत पैसे नहीं मिले तो वह कई हफ्तों तक नहीं मिलेगा, क्योंकि उसका मालिक बाहर जा रहा है और उसे भी साथ जाना होगा। स्वामीनाथन ने बड़ी खुशामद करके उससे छह घंटे का समय मांगा और घर की तरफ भाग लिया।

पहले उसने दादी से मांगे। दादी ने लगभग आंसू बहाकर कहा कि उसके पास पैसे नहीं है और उसने खाली डिब्बा उलटकर दिखा दिया कि वह कितनी तंगी में चल रही है।

"दादी, मैं जानता हूं तुम्हारे तकिये के नीचे बहुत से पैसे हैं।"

"नहीं बेटा, चाहो तो तलाशी ले लो।"

स्वामीनाथन ने दादी से कहा कि वह बिस्तर से नीचे उतरे और तब तकियों और दरियों के नीचे ढूंढ़ने लगा।

"तुम्हें इस वक्त पैसे क्यों चाहिए ?" दादी ने पूछा।

"अगर तुम्हारे पास हैं तो मुझ पर उपकार कर दो। नहीं तो बेकार के सवाल क्यों पूछती हो ?"

दादी ने मां को आवाज दी, "तुम्हारे पास पैसे हों तो लड़के को छह पाई दे दो।" लेकिन स्वामीनाथन पर उपकार करने को कोई तैयार नहीं था। पिताजी ने तो एक सैकेंड में मना कर दिया। स्वामीनाथन ने इस पर सोचा कि वे अपने मुवक्किलों से जो इतने पैसे लेते हैं, वे सब कहां चले जाते हैं।

अंत में उसे एक रास्ता दिखाई दिया। वह लेट गया और ठंडे सीमेंट के फर्श से गाल सटाकर पिता की भारी-भरकम अलमारी के नीचे की अंधेरी जगह में कुछ ढूंढ़ने लगा। उसे यूं ही ख्याल आया कि इस जगह कुछ सिक्के बिखरे मिल सकते हैं। उसने अलमारी के नीचे हाथ डालकर चारों तरफ टटोला। उसके हाथ एक पुराना लिफाफा लगा जिस पर धूल, मकड़ी का जाला, एक तिलचट्टा और कुछ चुटकी धूल थी।

कभी-कभी उसे लगता था कि वह पूरी लगन से काम करे तो जादू का करतब भी कर सकता है। उसे अध्यापक एब्नेजर की यह बात भी याद थी कि प्रार्थना करने पर भगवान मदद करता है।

उसने गत्ते का एक छोटा डिब्बा लिया और उसमें दो कंकड़ रखकर उसे रेत और पत्तों से ढंक दिया। फिर उस डिब्बे को वह पूजाघर में ले गया और उसे एक कोने में रख दिया। यह एक छोटा सा कमरा था, जिसकी दीवारों पर कुछ देवी-देवताओं की तस्वीरें थीं और कुछ पीतल और कांसे की मूर्तियां छोटे नक्काशीदार लकड़ी के ताक से स्वामीनाथन को घूर रही थीं। हवा में फूलों, कपूर और धूप की गंध फैली थी।

स्वामीनाथन देवी-देवताओं के सामने खड़ा हो गया और पूरे दयनीय भाव से उसने देवी देवताओं को बताया कि डिब्बे में क्या है और आशा व्यक्त की, कि दो कंकड़ दो-तीन पाई के सिक्कों में बदल जायें। साथ ही उसने यह भी बताया कि ये पैसे उसे तत्काल क्यों चाहिए। उसने वायदा किया कि देवताओं ने उसकी मदद की तो वह अपना अंगूठा चबाना बंद कर देगा। आंखें बंद करके उसने कहा, "श्रीराम, तुमने रावण को मारा था हालांकि उसके दस सिर थे। क्या तुम मुझे छह पाई भी नहीं दे सकते ?... अगर मैं तुम्हें अभी छह पाइयां दूं तो तुम मुझे पहिया कब दोगे ? मैं चाहता हूं तुम मुझे उस जड़ी-बूटी का नाम बता दो... मणि क्या मैं तुम्हें पहिया प्राप्त करने का रहस्य बताऊं ? हे राम, मुझे छह पाइयां दो, मैं एक साल तक अंगूठा चबाना छोड़ दूंगा...।"

इसके बाद वह घर के पिछवाड़े यूं ही टहलता रहा। अपने आप को दिलासा देता रहा कि कुछ मिनट बाद जब वह पूजाघर में जायेगा तो कंकड़ सिक्कों में बदले मिलेंगे। उसने आधे घंटे का समय इसके लिए निश्चित किया।

दस मिनट बाद वह पूजाघर में आया। उसने देवी-देवताओं को दंडवत प्रणाम किया, फिर उठा और डिब्बा उठाकर पिछवाड़े एकांत जगह पर आ गया। धड़कते दिल से डिब्बा खोला। फिर उसे जमीन पर उलट दिया। रेत-पत्तों में उसकी उंगलियां घूमी और अंत में उसके हाथ में दो कंकड़ आ गये। जब उसने गत्ते के डिब्बे, बिखरे पत्तों और कंकड़ों

को ज्यों का त्यों देखा तो उसका मन क्रोध से भर गया। देवताओं की उदासीनता पर उसे बड़ा गुस्सा आया और उसकी आंखों में आंसू आ गये। उसने देवताओं को गाली देनी चाही। लेकिन ऐसा करने में उसे डर लगा। इसकी बजाय उसने सारा गुस्सा गत्ते के डिब्बे पर उतारा और उसे ठोकर मारकर दूर फेंका तथा पत्तों और रेत को पैरों के नीचे कुचल दिया। फिर रुककर उसने सोचा कि देवता इस काम को पसंद करेंगे या नहीं। उसे डर लगा कि इससे देवता नाराज न हो जायें। वह पैसों के बिना काम चला सकता है लेकिन देवता नाराज हो गये तो खतरनाक बात होगी। वे उसे परीक्षा में फेल कर सकते हैं, माता-पिता, दादी और छोटे भाई को मार सकते हैं। उसने डिब्बे को उठाकर फिर उसमें रेत, पत्तियां और कंकड़ डाल दिये, जिन्हें एक मिनट पहले उसने पैरों से मसल-कुचल दिया था। उसने केले के पेड़ के नीचे एक गड्ढा खोदा और बड़ी श्रद्धा से डिब्बे को उसमें दबा दिया।

2

दस मिनट बाद वह आबू लेन में मणि के घर के बाहर खड़ा था। उसने दो या तीन बार सीटी बजायी। मणि नहीं आया। स्वामीनाथन ने सीढ़ियां चढ़कर दरवाजा खटखटाया। अंदर से सांकल खुलने की आवाज आयी और वह उत्सुकता में डूबा खड़ा रहा। उसे डर था कि मणि की जगह किसी और ने दरवाजा खोला तो वह अपने आने का कारण नहीं बता सकेगा। दरवाजा खुला और उसका दिल डूब गया। घनी भौंहों वाला एक भारी-भरकम आदमी उसके सामने था। उसने पूछा, "तुम कौन हो ?"

स्वामीनाथन ने जवाब में पूछा, "आप कौन हैं ? मणि कहां है ?" सवाल का अभिप्राय था कि वह मणि से मिलने आया था, किंतु वह सामने खड़े आदमी को नहीं जानता और न जानना चाहता था कि वह कौन है। किंतु हड़बड़ी में वह इस अभिप्राय को अच्छे ढंग से नहीं कह पाया।

"तुम मुझसे मेरे ही घर में पूछते हो कि मैं कौन हूं ?" घनी भौंहों वाला आदमी गरजा। स्वामीनाथन मुड़ा और सीढ़ियां फलांगकर भागा। किंतु घनी भौंहों वाले आदमी ने आदेश दिया, "ऐ बच्चे, इधर आओ।" उस आदेश का पालन न करना असंभव था। स्वामीनाथन धीरे-धीरे सीढ़ियों की तरफ बढ़ा। डर के मारे उसकी आंखें फटी जा रही थीं। उस आदमी ने कहा, "भाग क्यों रहे हो ? अगर तुम मणि से मिलने आये हो तो मिलते क्यों नहीं ?" यह बिल्कुल कायदे की बात थी।

"कोई बात नहीं," स्वामीनाथन ने बिना मतलब के यूं ही कह दिया।

"अंदर जाओ और मिल लो।"

स्वामीनाथन ने डरते-डरते घर में प्रवेश किया। मणि दरवाजे के पीछे भीगी बिल्ली बना खड़ा था। दोनों एक दूसरे की ओर टकटकी लगाकर देखते रहे। किसी के भी मुंह

से एक शब्द नहीं निकला। घनी भौंहों वाला आदमी दरवाजे पर उनकी तरफ पीठ किये खड़ा गली की तरफ देख रहा था। स्वामीनाथन ने उंगली उसकी तरफ उठायी और सिर को जरा-सा झटका देका पूछा, "यह कौन है ?" मणि ने फुसफुसाकर कहा, "चाचा।" अचानक चाचा ने मुड़कर कहा, "तुम यहां एक दूसरे पर टकटकी लगाये क्यों खड़े हो ? क्या तुम इसीलिए आये थे ? अरे, जीभ तो हिलाओ।" इस सलाह के बाद वह आदमी दो कुत्तों को भगाने के लिए गली में उतर गया। कुत्ते आपस में लड़ते-लड़ते घर के बाहर आकर गुत्था-गुत्था हो रहे थे। अब वह इतनी दूर चला गया था कि लड़कों की आवाज वहां नहीं पहुंच सकती थी। स्वामीनाथन बोला, "तुम्हारे चाचा ? मैं तो जानता ही नहीं था। मणि, क्या तुम अभी बाहर नहीं चल सकते ?... नहीं ? मैं एक जरूरी काम से आया हूं। मुझे... बहुत जरूरी... छह पाइयां चाहिए... किसी भी तरह... गाड़ीवान कई हफ्तों के लिए बाहर चला जायेगा... फिर मौका नहीं मिलेगा... नहीं जानता पहिये के बिना क्या करूंगा...," वह रुक गया। मणि का चाचा कुत्तों के आसपास मंडरा रहा था, उन्हें गालियां दे रहा था और बेसब्री से पत्थर ढूंढ़ रहा था। स्वामीनाथन ने अपनी बात जारी रखी, "मेरी जिंदगी इसी पर टिकी है। तुम नहीं दोगे तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा। जल्दी करो।"

"मेरे पास नहीं हैं, मुझे कोई पैसा नहीं देता," मणि ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे चाचा पैसे कहां रखते हैं ? बक्से में देखो...।"

"मैं नहीं जानता।"

"मणि यहां आओ," चाचा ने गली से आवाज लगायी, "इन शैतानों को भगाओ। पत्थर ढूंढ़ कर लाओ।"

3

"राजम, क्या तुम मुझे एक सिपाही दे सकते हो ?" स्वामीनाथन ने दो सप्ताह बाद पूछा।

"सिपाही! क्यों ?"

"इस शहर में एक बदमाश है। उसने मुझे ठग लिया है।" उसने गाड़ीवान से हुए सौदे की बात राजम को बता दी। स्वामीनाथन कहता गया, "और अब वह जब भी मुझे देखता है, मुझे न पहचानने का बहाना करता है। मैं उसके घर जाता हूं तो मुझसे कहा जाता है कि वह घर पर नहीं है। मैं घर के अंदर उसे किसी को गाली देते सुन सकता हूं। अगर मैं अपनी बात पर अड़ा रहता हूं तो वह कहला भेजता है कि वह कुत्ते की जंजीर खोल देगा और वह मुझे मार डालेगा।"

"क्या उसके पास कुत्ता है ?" राजम ने पूछा।

"मैंने तो कभी नहीं देखा।"

"तो फिर घर में घुसकर उसे एक लात क्यों नहीं जमाते ?"



"कहना आसान है। जब भी मैं उसके घर जाता हूं, डर के मारे कांपता रहता हूं। गाड़ीवानों के घरों में क्या-क्या होता है, किसे पता ? वह अपना घोड़ा मेरे ऊपर छोड़ सकता है।"

"छोड़ने दो, घोड़ा तुम्हें खा नहीं जायेगा।" मणि बोला।

"घोड़ा खाता नहीं ? मुझे यह जानकर खुशी हुई। एक दिन मेरे साथ रंगा दर्जी के पास चलो और सुनो कि वह घोड़ों के बारे में क्या-क्या बताता है। घोड़े कभी-कभी शेरों से भी ज्यादा भयानक होते हैं।" स्वामी ने बड़ी गंभीरता से कहा।

"तुम किसी दिन उसके घर के बाहर इंतजार करो और बाहर निकलते ही उसे दरवाजे पर पकड़ लो।" राजम ने सुझाव दिया।

"मैंने कोशिश की थी। लेकिन जब भी वह घर से निकलता है, अपनी गाड़ी पर होता है। मुझे देखते ही वह लंबी चाबुक निकल लेता है। मैं उसकी पहुंच से दूर होकर चिल्लाता हूं, लेकिन उसका कोई लाभ नहीं होता। घोड़ा हवा से बातें करने लगता है। और सोचो, उसने मेरे दो आने ठग लिये।"

"तुम तो छह पाइयां बता रहे थे। नहीं ?"

"लेकिन उसने मुझसे छह-छह पाइयां दो बार और ठग ली हैं।"

"तो फिर डेढ़ आना हुआ," राजम बोला।

"नहीं राजम, दो आने थे।"

"अरे भाई, बारह पाई का एक आना होता है। तुमने तीन बार छह-छह पाइयां दीं। कुल 18 पाइयां हुईं, यानी डेढ़ आना।

"यह बेकार की बहस है। इसकी परवाह कौन करता है कि कितनी पाइयों का आना होता है," स्वामीनाथन बोला।

"लेकिन पैसे के मामले में सही-सही हिसाब होना चाहिए। अच्छा आगे बताओ।"

"गाड़ीवान ने पहले मुझसे छह पाइयां लीं—इस वायदे के साथ कि दो दिन में वे चांदी के सिक्के बन जायेंगी। चार दिन तक वह मुझे चकमा देता रहा और तब उसने छह पाइयां और मांगी—यह कहकर कि उसने 12 पाइयों के लिए जड़ी-बूटी जमा की है। उसने फिर मुझे चकमा दिया और यह कहकर कि इनके बिना सारा प्रयोग बेकार हो जायेगा, छह पाइयां और मांगी। उसके बाद मैं जब भी उसके पास जाता हूं, वह कोई न कोई बहाना बनाकर मुझे टरका देता है। कई बार उसने शिकायत की कि मौसम की खराबी की वजह से काम बहुत धीरे-धीरे चल रहा है। दो दिन पहले उसने कहा वह मुझे तथा पैसों के बारे में कुछ नहीं जानता। अब तुम खुद देख लो कि वह किस तरह पेश आ रहा है—मुझे पैसों की परवाह नहीं, लेकिन मैं उसके लड़के से नफरत करता हूं—वह काला-कलूटा बदमाश! जब भी मुझे देखता है, मेरी ओर देखकर मुंह बिचकाता है और उसने मुझे धमकी दी है कि गंदी नाली के पानी की बाल्टी मेरे सिर पर उलट देगा। एक दिन उसके हाथ में मैंने खुला चाकू देखा। मैं उसकी पिटाई करना चाहता हूं। उसका बाप मेरे-दो आने तभी वापस करेगा।"

4

अगले दिन स्वामीनाथन और मणि गाड़ीवान के घर की तरफ चल दिये। स्वामीनाथन को इस बात पर पश्चात्ताप होने लगा था कि उसने दोस्तों को सारी बात क्यों बतायी। मामला काबू से बाहर होता जा रहा था। इस बात को देखते हुए कि राजम और मणि इस मामले में इतनी रुचि ले रहे थे, कोई नहीं कह सकता था कि मामला कहां तक पहुंचेगा।

राजम ने गाड़ीवान के लड़के का अपहरण करने की योजना बनायी थी। मणि को इस पर अमल करना था। योजना के अनुसार मणि गाड़ीवान के लड़के को दोस्त बनायेगा। इस शुरू के दौर में स्वामीनाथन को कुछ खास नहीं करना था। उसे मणि को गाड़ीवान का घर दिखाना भर था।

गाड़ीवान स्वामीनाथन के घर से एक मील दूर पश्चिम की ओर कीलाचेरी में रहता था, जहां करीब एक दर्जन झोंपड़ियां थीं, जिनके मैले धुएं से काले पड़े बदबूदार कमरे बेतरतीबी से साथ-साथ सटे हुए थे।

अब वे उस जगह से कुछ गज दूर थे। स्वामीनाथन ने प्रतिशोध के चक्के को रोकने की आखिरी बार कोशिश की।

"मणि, मुझे लगता है कि गाड़ीवान के लड़के ने पैसे वापस कर दिये हैं।"

"क्या ?"

"मुझे लगता है..."

"तुम्हें सचमुच लगता है। दिखाओ मुझे।"

स्वामीनाथन ने अनुरोध किया, "उसे छोड़ दो मणि। तुम नहीं जानते उस लड़के से छेड़खानी करके क्या-क्या मुसीबत खड़ी होगी...।"

"बकवास बंद करो, नहीं तो मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूंगा।"

"मणि, पुलिस और वह लड़का सभी बहुत भयानक हैं, कुछ भी कर सकते हैं।" उसके मन में गाड़ीवान के लड़के का बहुत डर बैठा हुआ था। कभी-कभी रात में उसे एक काला, गंदा और क्रूर चेहरा दिखाई दे जाता था और वह डर के मारे कांपने लगता था। यह चेहरा गाड़ीवान के लड़के का होता था।

"वह तीसरे घर में रहता है," स्वामीनाथन ने इशारा किया।

अंतिम क्षण में मणि ने अपनी योजना बदली और स्वामीनाथन पर जोर डाला कि वह भी गाड़ीवान के घर तक चले। स्वामीनाथन इसके विरोध में सड़क पर बैठ गया। लेकिन मणि अपनी बात पर अड़ा रहा। वह स्वामीनाथन को घसीटकर गाड़ीवान के घर तक ले गया और उसे जोर-जोर से डांटने लगा।

"मणि, मणि, तुम्हें क्या हो गया है ?"

"गधे के बच्चे!" वह स्वामीनाथन की तरफ देखकर गरजा और अपना हाथ उसे मारने के लिए उठाया।

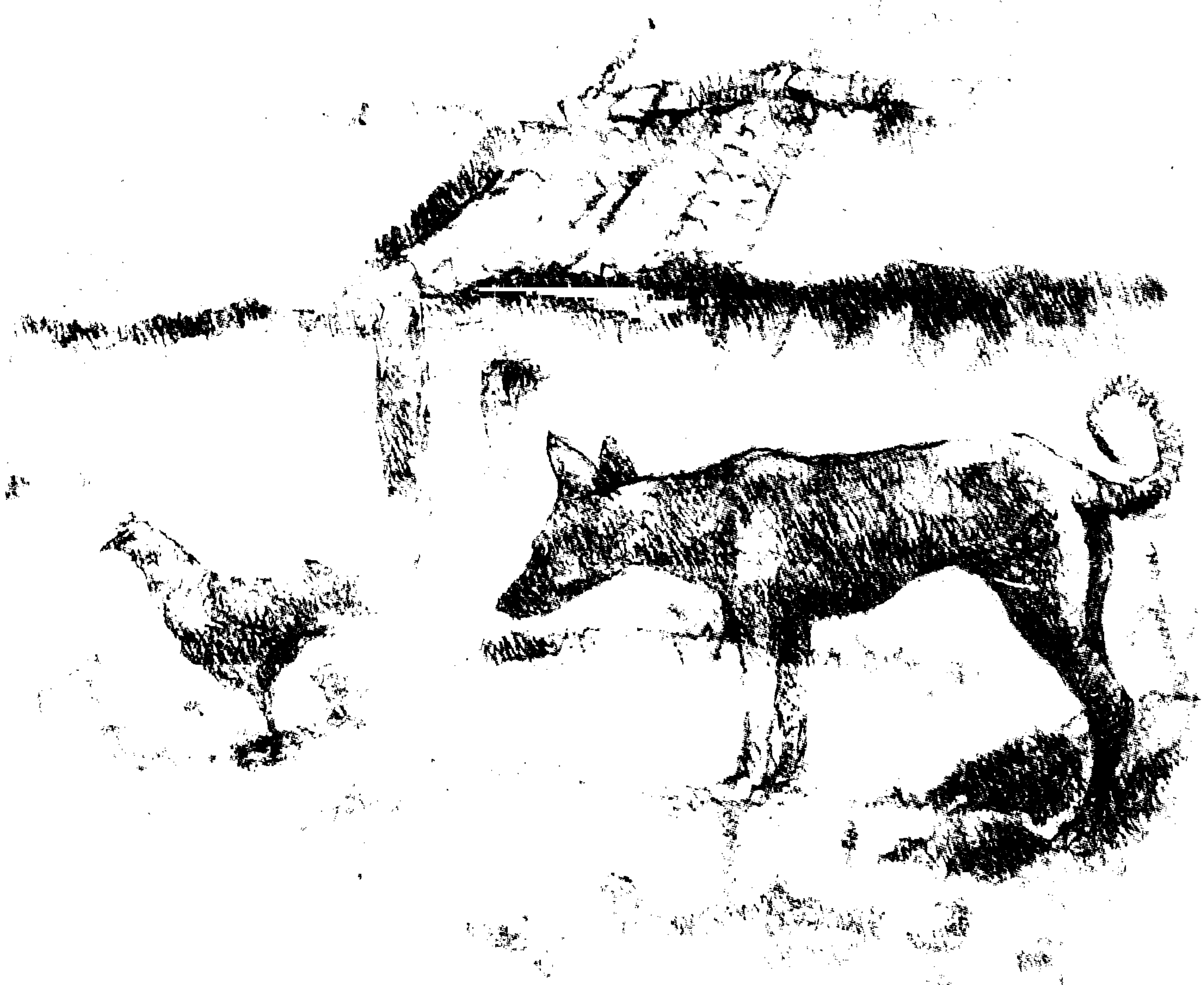
स्वामीनाथन रोने लगा। मणि ने उसका गला दबाने की कोशिश की। उनके आसपास तरह-तरह के लोगों की भीड़ जमा हो गयी—फूले हुए पेट वाले बच्चे, काली सूरत वाली औरतें और उनके मरद। मुर्गी के गंदे चूजे चीं-चीं करके इधर-उधर भागे। धूप तेज थी। दो-तीन कुत्ते पेड़ की छाया में ऊंघ रहे थे। मुर्गीखाने और मैले कपड़ों की दुर्गंध चारों तरफ फैली हुई थी।

तभी उस घर से, जिसे स्वामीनाथन ने गाड़ीवान का घर बताया था, करीब तीन फुट लंबा, मैला-कुचैला, फटे कपड़े पहने एक लड़का निकला। भीड़ में रास्ता बनाकर वह अच्छी जगह आकर खड़ा हो गया और अंगूठा चूसते हुए लड़ाई का मजा लेने लगा। मणि ने स्वामीनाथन की तरफ इशारा करके भीड़ की तरफ देखकर तिरस्कार से कहा, "यह छोकरा, मैं नहीं जानता यह कौन है, अचानक मुझसे दो आने मांग रहा है। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा। यह कहता है मैंने इससे दो आने लिए हैं।" मणि इसी तरह पंद्रह मिनट तक बोलता रहा। इसके बाद गाड़ीवान के लड़के ने अंगूठा मुंह से निकाला और बोला, "इसे जेल भेजना चाहिए।" इस पर मणि ने मुस्कराकर उसकी बात का अनुमोदन किया और पूछा, "क्या तुम इसे थाने ले जाने में मेरी मदद करोगे ?"

"नहीं," गाड़ीवान का लड़का बोला। थाने से वह भी डरता था।

मणि ने उससे पूछा, "तुम कैसे जानते हो कि इसे थाने ले जाना चाहिए ?"

"मैं जानता हूं।"



"क्या तुम्हें भी कभी इसने इसी तरह तंग किया है ?" मणि ने पूछा।

"नहीं," लड़का बोला।

"वो दो आने कहां हैं जो तुम्हारे बाप ने मुझसे लिए थे ?" स्वामीनाथन ने आंसुओं से भीगे चेहरे से उस लड़के की तरफ देखा। इस बीच भीड़ समझौता कराने की बेमन की कोशिश करके छंट गयी थी। अचानक मणि ने उस लड़के से पूछा, "क्या तुम यह लट्टू लोगे ?" उसने लाल चमकदार लट्टू उसे दिखाया। लड़के ने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया।

मणि बोला, "मैं इसे नहीं दे सकता। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं इससे भी बड़ा लट्टू तुम्हें दे सकता हूं। आओ, हम दोस्ती कर लें।"

लड़के को कोई एतराज नहीं था, "क्या तुम इसे दिखाओगे भी नहीं ?" उसने पूछा।

मणि ने लट्टू उसे दे दिया। लड़के ने दो-तीन बार उसे हाथ में लेकर घुमाया और फिर पलक झपकते ही वहां से चंपत हो गया। सारी स्थिति को समझने में मणि को कुछ समय लगा। उसने दूर एक झोंपड़ी में लड़के को घुसते देखा। वह उसके पीछे भागा।

मणि झोंपड़ी के पास पहुंचा तो दरवाजा बंद हो चुका था। मणि ने एक दर्जन बार दरवाजा खटखटाया और तब एक रूखा सा आदमी बाहर आकर बोला कि लड़का वहां नहीं है। दो-तीन खतरनाक पड़ोसी भी आये और उन्होंने उसे धमकी दी कि अगर उसने उन्हीं के इलाके में आकर उन्हें तंग करने की हिम्मत की तो वे उसे जिंदा गाड़ देंगे। स्वामीनाथन बार-बार मणि से कह रहा था कि वह वापस आ जाये। किंतु उसे हटाने के लिए बहुत कुछ करना पड़ा। वह दरवाजा पीटता रहा।

पड़ोसी कुछ गज की दूरी पर हाथ में पत्थर लिए खड़े हो गये और पेड़ के नीचे सोये कुत्तों को जगा दिया गया।

जब कुत्ते उनकी तरफ दौड़ते आये, तब जाकर मणि ने स्वामीनाथन से कहा, "भागो," और खुद भी तेजी से भागा।

कुछ पत्थर स्वामीनाथन की पीठ पर आ लगे। एक दो मणि पर भी पड़े। एक धारदार पत्थर से मणि की दायीं एड़ी छिल गयी। वे ऐसे भागे कि सामने की सड़क के सिवा न उन्हें कुछ दिखाई पड़ा और न सुनाई।

ग्यारह

पिता की उपस्थिति में

1

गर्मियों में दक्षिण भारत के सारे शहरों में मालगुड़ी को सबसे अधिक नापसंद किया जाता है। कभी-कभी तापमान छांव में 110 डिग्री से ऊपर चला जाता है और गर्मी के किसी भी दिन 12 से 3 बजे के बीच धूल भरी सड़कें सुनसान हो जाती हैं। अधिकतर आवारा घूमने वाले जानवर, गधे और कुत्ते भी गली के नुक्कड़ पर ऐसी जगह आ जाते हैं जहां तपते सूरज के पश्चिम की तरफ ढलने पर मकानों की थोड़ी-बहुत छाया पड़ती है।

लेकिन इस गर्मी की एक अजीब बात है। यह उन्हीं को प्रभावित करती है जो इसके बारे में सोचते हैं। स्वामीनाथन, मणि और राजम को तब हैरानी होती, जब कोई यह सिद्ध करने की कोशिश करता कि मालगुड़ी की गर्मी असह्य होती है। उन्हें दोपहर और दोपहर बाद का समय सबसे अधिक आकर्षक लगता था। जो धूप मिल के मैनेजर मिस्टर हेंटल के सिर को चुभती थी और उसे कोडाइकनाल भागने को मजबूर करती थी, जो कार्यकारी इंजीनियर मिस्टर कृष्णन की पगड़ी को झुलसाती थी और उसे यह शिकायत करने पर मजबूर करती थी कि धूल-तूफान और चिलचिलाती धूप में घूमने की उसकी नौकरी बहुत सख्त है, वही धूप स्वामीनाथन के घुंघराले बालों, मणि के घने बालों और राजम के कांटों जैसे छोटे-छोटे बालों पर पड़कर कोई असर नहीं करती थी। वही धूप जो जमीन को इतना तपा देती थी कि यूरोपियनों में सबसे अधिक भारतीय बन चुका और शहर के बाहर उजाड़ बंगले में चावल की मिल चलाने वाला मिस्टर रेट्टी (वैसे उसे वहां का रहस्यमय आदमी कहा जाता था, कोई नहीं जानता था कि वह कौन है, कहां से आया है। वह अपने नौकर और अपने ग्राहकों पर शुद्ध तमिल में झल्लाता था और हमेशा कमीज, निकर तथा चप्पल पहनकर घूमता था) एक दिन भूलवश नंगे पैर दो-एक कदम तपती जमीन पर चलते ही चीख पड़ा था, वही धूप उन तीनों दोस्तों में छत के नीचे रहने के प्रति अरुचि पैदा करती थी।

ट्रंक रोड पर, नगरपालिका की सीमा से आधा मील दूर एक छोटी पुलिया पर वे बैठे हुए थे। पुलिया के नीचे पानी की धार रेतीली पट्टी पर बहती हुई आगे जाकर सरयू

से मिलती थी। वहां कोई पेड़ नहीं था और धूप सीधे उनके सिर पर पड़ रही थी। सड़क के दोनों किनारों पर धान के खेत थे, लेकिन इस वक्त वहां दूर-दूर तक धान के ठूंठ ही ठूंठ दिखाई देते थे और बीच में कहीं-कहीं नारियल या आमों का झुरमुट दिखाई देता था। ट्रंक रोड सुनसान थी, एकाध छकड़े को छोड़कर जो धीरे-धीरे उस पर घिसटता हुआ निकल जाता था।

"मुझे लगता है कि तुम्हें उतना ही करना चाहिए था जितना मैंने कहा था," राजम ने मणि से कहा।

स्वामीनाथन ने शिकायत की, "हां राजम, मैंने उसे गाड़ीवान के लड़के का घर दिखा दिया और फिर मैं जाने वाला था, जैसा कि हमने सोचा था, लेकिन अचानक इसने मुझे मार डालने की कोशिश की....," उसने गुस्से से मणि की ओर देखा।

मणि उदास था, "अरे भाई, मैं मानता हूं मैं बेवकूफ हूं। मैंने सोचा था मेरे दिमाग में तत्काल जो योजना बनी उसके अनुसार मैं काम कर लूंगा। अगर मैंने लट्टू को मजबूती से पकड़ा होता तो मैंने उसे फांस लिया होता और वह इस समय किसी उजाड़ शेड में पड़ा चीख-पुकार कर रहा होता।" उसके स्वर में पश्चात्ताप था।

स्वामीनाथन ने गर्दन सहलाते हुए कहा, "अभी तक यहां दर्द हो रहा है।" कीलाचेरी की घटना के बाद स्वामीनाथन को यह समझाने के लिए मणि को तीन घंटे बहस करनी पड़ी कि उसकी पिटाई एक नाटक था।

"तुम्हें स्वामी पर इतना कठोर नहीं होना चाहिए था," राजम बोला।

मणि ने दोनों हाथ जोड़कर कहा, "मुझे सजा देना चाहो तो मैं दस मिनट तक सिर के बल खड़ा होने को तैयार हूं। मैंने स्वामी को नोचने का नाटक किया था ताकि गाड़ीवान का लड़का समझे कि मैं उसका दुश्मन हूं।"

इतने में घंटियों की आवाज सुनाई दी। चटाई से ढंकी बंद बैलगाड़ी, जिसमें एक सफेद बैल जुता था, सड़क पर आ रही थी। जब गाड़ी पुलिया से गज भर दूर रह गयी तो तीनों उठकर लाइन में खड़े हो गये और जोर से बोले, "बैल रोको।"

गाड़ी चलाने वाला गांव का एक छोटा बालक था।

"गाड़ी रोको, बेवकूफ," राजम चिल्लाया।

"अगर वह नहीं रुका तो हम उसे काबू में कर लेंगे और बैलगाड़ी छीन लेंगे।" स्वामीनाथन ने कहा।

गाड़ीवान बोला, "अरे लड़को, मुझे क्यों रोकते हो ?"

"बोलो मत", मणि ने आज्ञा दी और गंभीर चेहरा बनाये गाड़ी के गिर्द जाकर पहियों को देखने लगा। नीचे झुककर उसने गाड़ी का तला देखा, फिर बोला, "ऐ गाड़ी वाले, नीचे उतरो।"

"अरे लड़को, मुझे जाना है," गाड़ीवान ने कहा।



"तुम 'लड़का' किसे कह रहे हो ?" राजम ने धमकाने के स्वर में कहा, "तुम जानते नहीं, हम कौन हैं ?"

"हम सरकारी पुलिस हैं और तुम्हारे जैसे बदमाशों को पकड़ने के लिए निकले हैं," स्वामीनाथन बोला।

"तुमने एक भी शब्द कहा तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा," राजम ने नन्हे गाड़ीवान से कहा। हालांकि गाड़ीवान को विश्वास नहीं हो रहा था फिर भी उसे लगा कि वे कह रहे हैं तो कोई बात जरूर होगी।

मणि ने एक पहिये को बजाकर कहा, "पुलिया कमजोर है। हम तुम्हें पुलिया से गुजरने नहीं देंगे जब तक कि तुम पास न दिखाओ।"

गाड़ीवान बड़बड़ाया, "मुझे जाने दो—मुझे जरूरी काम से जाना है।"

"बकवास बंद करो," राजम ने हुक्म दिया।

स्वामीनाथन ने जानवर को गौर से देखा और बोला, "इधर आओ।"

गाड़ीवान नीचे उतरना नहीं चाहता था। मणि ने उसे नीचे घसीटा और स्वामीनाथन की तरफ धकेल दिया।

स्वामीनाथन ने गुस्से से उसकी तरफ देखा और जानवर के पुट्ठों की तरफ इशारा करके कहा," बेवकूफ, तुमने इसे नहलाया क्यों नहीं ?"

ग्रामीण ने डरते हुए कहा, "नहलाया था श्रीमान।"

"लेकिन यह दाग यहां क्यों है ?" स्वामीनाथन ने पूछा।

"ओह, यह ? यह तो श्रीमान, जन्म से ही है।"

"जन्म से ? तुम मुझे उल्लू बना रहे हो ?" स्वामीनाथन जोर से बोला और उसने गाड़ीवान को मारने के लिए लात उठायी।

वे थोड़ा नरम पड़े।

"बदमाश को पास दो और चलता करो," राजम ने उदारता दिखाते हुए कहा।

स्वामीनाथन ने जेब से पेंसिल का एक टुकड़ा और नोटबुक निकाली, जिन्हें सिद्धांत रूप में वह हमेशा साथ रखता था। इसमें कई प्रकार की सूचनाएं नोट करने की उसकी आदत थी, जैसे गुजरने वाली साइकिलों की संख्या, नंगे पैर जाने वाले लोगों की संख्या और चप्पल-जूते पहने लोगों की संख्या, आदि-आदि।

उसने कागज-पेंसिल हाथ में ले लिये। मणि ने बैल की रस्सी पकड़ उसे पीछे हटाया और पीछे को मोड़ा। गाड़ीवान ने विरोध किया, किंतु मणि ने कहा, "फिक्र मत करो। इसे वहां खड़ा होना है। यह सीमा-रेखा है।"

"लेकिन श्रीमान, मुझे इस तरफ जाना है।"

"इसे मोड़ कर जा सकते हो।"

"तुम्हारा नाम क्या है ?" राजम ने पूछा।

"कुरुप्पन," लड़के ने जवाब दिया। स्वामीनाथन ने इसे लिख लिया।

"उम्र ?"

"मुझे पता नहीं।"

"पता नहीं ? स्वामी, लिखो, सौ साल।" राजम बोला।

"नहीं, नहीं, मैं सौ साल का नहीं हूं।"

"अपना काम करो और जबान बंद रखो। तुम सौ के हो। तुमने इनकार किया तो मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा। बैल का नाम क्या है ?"

"पता नहीं।"

"स्वामी, लिखो कुरुप्पन।"

"श्रीमान, कुरुप्पन मेरा नाम है, बैल का नहीं।"

उन्होंने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया और स्वामीनाथन ने बैल के नाम के खाने में कुरुप्पन लिख दिया।

"तुम कहां जा रहे हो ?"

"सेथूर।"

"स्वामीनाथन ने वह भी लिख लिया।

"वहां कितने दिन रहोगे ?"

"जी, वहां मेरा घर है।"

"ऐसा है तो तुम यहां क्यों आये ?"

"हमारे गांव के मुखिया ने नारियल के दस बोरे रेलवे शेड में भेजे थे।" स्वामीनाथन ने सभी बातें नोटबुक में लिख लीं। फिर तीनों ने उस पन्ने पर हस्ताक्षर किये, पन्ना फाड़कर गाड़ीवान को दिया और उसे जाने दिया।

2

स्वामीनाथन के लिए परेशानी की बात यह थी कि पिताजी की अदालत मई के दूसरे सप्ताह से बंद हो गयी और पिताजी दोपहर बाद का समय घर पर ही बिताने लगे। उसे डर था कि इससे राजम और मणि के साथ दोपहर बाद की मटरगश्ती में बाधा पड़ेगी और बाधा पड़ी भी। छुट्टियों के तीसरे दिन ही पिताजी ने स्वामीनाथन को घर से बाहर निकलते देखा तो आवाज देकर बुलाया।

पिताजी छोटे आंगन में धोती-बनियान पहने खड़े थे। उन्हें इस घरेलू पोशाक में देखना अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि इसका मतलब होता था कि वे निकट भविष्य में बाहर जाने वाले नहीं हैं।

"कहां जा रहे हो ?"

"कहीं भी नहीं।"

"कल शाम इस वक्त कहां थे ?"

"यहीं था।"

"तुम झूठ बोल रहे हो। तुम यहां नहीं थे और तुम बाहर नहीं जाओगे।"

"बिल्कुल नहीं," मां ने कहा जो कहीं से अचानक प्रकट हुई थी। "यह धूप में आवारागर्दी करने से कभी बाज नहीं आयेगा। ऐसा ही रहा तो किसी दिन यह लू लगने से मर जायेगा।"

मां का समर्थन न मिलता तो भी पिताजी कुछ करते ही, लेकिन मां की बातों ने उन्हें कोई कार्रवाई करने के लिए उकसाया। स्वामीनाथन को अपने कमरे में—पिताजी के सज्जा-कक्ष में—आने को कहा गया।

स्वामीनाथन की पुस्तकों से धूल झाड़ते हुए और मेज तथा पुस्तकों के ढेर के बीच मेहनती मकड़ी द्वारा बनाये गये जाले को हटाते हुए पिता ने स्वामीनाथन से पूछा, "कितने दिनों से तुमने किताबों को नहीं छुआ है ?"

स्वामीनाथन ने इस प्रश्न को वचन-भंग के अपराध के रूप में लिया।

"स्कूल बंद हो तब भी मुझे किताबें पढ़नी होंगी ?"

"क्या तुम समझते हो कि तुमने बी.ए. पास कर लिया है ?" पिता का प्रश्न था।

"पिताजी मेरा मतलब था कि जब स्कूल बंद हो, परीक्षा न हो तो क्या तब भी मुझे पढ़ना चाहिए ?"

"क्या सवाल है! तुम्हें जरूर पढ़ना चाहिए।"

"लेकिन पिताजी, आपने तो परीक्षा से पहले कहा था कि परीक्षा खत्म होने के बाद पढ़ने की जरूरत नहीं होगी। राजम भी नहीं पढ़ता है।"

अपने आखिरी वाक्य पर स्वामीनाथन ने विश्वास करने की कोशिश की। उसे स्पष्ट याद था कि राजम ने उस ट्यूटर के प्रति बहुत नाराजगी प्रकट की थी, जो हफ्ते में तीन दिन दो घंटे के लिए उसे परेशान करने आता था। पिताजी ने स्वामीनाथन की बात की तरफ ध्यान नहीं दिया।

उन्होंने पास खड़े होकर स्वामीनाथन को पुस्तकें झाड़ने और मेज साफ करने को कहा। स्वामीनाथन बड़ी फुर्ती से किताबों की धूल झाड़ने लगा। सावधानी से मकड़ी को पकड़कर खिड़की से बाहर फेंकने ले गया। फेंकने से पहले वह मकड़ी को गौर से देखता रहा। मकड़ी सैंकड़ों हल्के रंगों से दमकते तार से झूल रही थी।

"क्या तुम एक मकड़ी को फेंकने में सारा दिन लगा दोगे ?" पिताजी बोले। स्वामीनाथन को अचानक लगा कि मकड़ी को अपना साथी क्यों न बना ले, क्योंकि इसे फेंकना घोर अपव्यय होगा। उसने चुपचाप मकड़ी को अपनी जेब में डाल लिया और खाली हाथ खिड़की से बाहर झटकने के बाद वह अपनी मेज पर आ गया।

"देखो, तुमने अपनी अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तकों की क्या हालत बना रखी है। तुम्हें अपने आप पर शर्म नहीं आती ?" स्वामीनाथन ने चिकनी लाल जिल्दवाली फोर्थ रीडर को उठाया, उसे खोला, दोनों आवरणों को एक साथ पटककर उनकी धूल झाड़ी और फिर चिकने आवरणों को हथेली से पोंछ दिया।

"अरे भाई, कपड़े का टुकड़ा ले लो। किताबें साफ करने का यह तरीका नहीं है। स्वामी, कपड़े का टुकड़ा ले आओ।" पिता के स्वर में कुछ सहानुभूति थी और कुछ अधीरता।

स्वामीनाथन ने इधर-उधर देखा और कहा, "मुझे यहां कपड़ा नहीं दिखाई देता।"

"भागकर ले आओ।"

यह अच्छा सुझाव था। स्वामीनाथन तेजी से भागा। सब से पहले वह दादी के पास गया।

"दादी, मुझे कपड़े का एक टुकड़ा दो, जल्दी।"

"मैं कपड़े का टुकड़ा कहां से लाऊं ?

"और मैं कहां से लाऊं ?" उसने नाराज होकर पूछा और फिर बिना प्रसंग के जोड़ा, "यदि छुट्टियों में भी पढ़ाई करना जरूरी है तो छुट्टियां दी ही क्यों जाती हैं ?"

"क्या बात है ?"

यह कुछ सहानुभूति प्राप्त करने का अवसर था। उसने लगभग रोते हुए कहा, "मैं नहीं जानता, राजम और मणि क्या सोचेंगे अगर मैं यहां बेवकूफी के कामों में लगा रहा। वे लोग मेरा इंतजार कर रहे होंगे! दादी, अगर पिताजी को कोई काम नहीं है तो वे जाकर सो क्यों नहीं जाते ?"

पिताजी ने हाल के परे से आवाज लगायी, "तुम्हें कपड़ा मिला ?"

स्वामीनाथन ने उत्तर दिया, "दादी के पास नहीं है, मां से पूछता हूं।" उसकी मां पिछवाड़े के बरामदे में चटाई पर बैठी थी और उसकी गोद में नन्हा शिशु था। स्वामीनाथन ने मां को घूरकर देखा। थोड़ी देर पहले उसके बारे में पिताजी को जो सुझाव मां ने दिया था वह स्वामीनाथन के मन में अब भी कसक रहा था। उसने दबे स्वर में कहा, "मां, तुम तो बड़ी अच्छी हो! हम गरीबों को अकेला क्यों नहीं छोड़ देती ?"

"क्या कहा ?" मां ने व्यंग्य को नहीं समझा। कुछ मिनट पहले उसने अपने पति से जो कहा था उसे भी वह भूल चुकी थी।

स्वामीनाथन बोला, "तुम्हें वहां जाकर मेरे खिलाफ कहानियां गढ़ने की क्या जरूरत थी ? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

बात लंबी चलती तो उसे खुशी होती, किंतु उधर पिताजी झाड़न का इंतजार कर रहे थे।

"क्या मुझे कपड़े का टुकड़ा मिल सकता है ?" वह असली बात पर आया।

"कैसा कपड़ा ?"

"कैसा कपड़ा ? मैं क्या जानूं ? मेरा ख्याल है कि मुझे वो... वो अपनी किताबें झाड़नी पड़ेंगी। छुट्टियां बिताने का अच्छा तरीका है न... ?"

"अभी मैं नहीं दे सकती।"

"हुं... तुम नहीं दे सकती। नहीं दे सकती न!" उसने इधर-उधर नजर डाली। बच्चे के नीचे कपड़े का एक टुकड़ा था। बिजली की फुर्ती से वह नीचे झुका, बच्चे को लुढ़काकर कपड़ा खींचा और तीर की तरह भागा। उसने अपनी सारी मुसीबतों के लिए मां को जिम्मेदार ठहराया, अत: बच्चे को जगाकर और उसके बिछौने का कपड़ा छीनकर उसे बड़ा सुख मिला।

उग्र संतोष के साथ उसने मेज को एक ओर से उठाकर सारी चीजों को फर्श पर बिखेर दिया। फिर उन्हें एक-एक कर उठाया और मेज पर सजा दिया। पिताजी उसे देखते रहे, फिर बोले, "क्या तुम इसी तरह चीजों को करीने से सजाते हो ? तुमने हल्की चीजों को नीचे और भारी को ऊपर रखा है। इन कापियों को निकालो। नीचे एलटस रखो।" इतने में मां बच्चे को उठाये आयी और शिकायत की, "इस लड़के को देखो, यह बच्चे के बिछौने का कपड़ा ले आया। क्या इस घर में इसे काबू में रखने वाला कोई नहीं है ? पता नहीं, इसका स्कूल कितने दिन बंद रहेगा।" स्वामीनाथन अपना काम पूरी लगन से करता रहा। पिताजी ने मां की शिकायत की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। उन्होंने सिर्फ सोये हुए बच्चे के गाल पर चुटकी काटी जिससे मां नाराज हुई और कमरे से बाहर चली गयी।

आधे घंटे बाद स्वामीनाथन पिताजी के कमरे में स्लेट-पेंसिल लेकर तैयार बैठा था। पिताजी ने गणित की पुस्तक खोल रखी थी और उन्होंने लिखाया, "राम के पास 10 आम हैं जिनसे वह 15 आने कमाना चाहता है। कृष्ण को सिर्फ चार आम चाहिए। कृष्ण को कितना पैसा देना पड़ेगा ?"

स्वामीनाथन ने सवाल को बार-बार पढ़ा और हर बार उसमें उसे नया अर्थ दिखायी दिया। उसे लगा कि वह एक भयानक गोरखधंधे में फंस गया है....

आमों की बात सुनकर उसके मुंह में पानी आ गया। उसकी समझ में नहीं आया कि राम ने 10 आमों की 15 आने कीमत क्यों रखी। राम किस तरह का आदमी था ? शायद वह शंकर जैसा था। कोई भी सोचेगा कि वह शंकर जैसा रहा होगा जो 10 आमों के 15 आने वसूल करने के लिए कमर कसे था। अगर राम शंकर जैसा था तो कृष्ण मटर जैसा रहा होगा। यहां स्वामीनाथन में कृष्ण के प्रति अबूझ सहानुभूति पैदा हुई।

"तुमने सवाल कर लिया ?" पिताजी ने अखबार से नजर उठाकर पूछा।

"पिताजी, क्या आप बतायेंगे कि आम कच्चे थे या पके हुए।"

पिताजी कुछ क्षण उसे देखते रहे, फिर बोले, "पहले सवाल हल करो। बाद में तुम्हें

बताऊंगा कि आम कच्चे थे या पके हुए।"

स्वामीनाथन को लगा वह बिल्कुल लाचार है। काश! पिताजी बता देते कि राम कच्चे आम बेच रहा था या पके हुए। बाद में उन्होंने बताया भी तो वह किस काम का ? उससे पक्का विश्वास था कि सवाल के इसी जवाब में सारी समस्या की कुंजी है। 10 कच्चे आमों के लिए 15 आने की मांग करना एकदम गलत है। अगर वह ऐसा करता है तो यह राम के स्वभाव के अनुरूप ही होगा। स्वामीनाथन अब राम से घृणा करने लगा था और उसमें कई दुर्गुण देखने लगा था।

स्वामीनाथन ने स्लेट को दूर हटाकर कहा, "पिताजी, मुझ से सवाल नहीं होता।"

"क्या बात है ? तुम सरल अनुपात का इतना आसान सवाल हल नहीं कर सकते ?"

"हमें यह स्कूल में नहीं पढ़ाया जाता।"

"स्लेट इधर लाओ। मैं अभी तुम से जवाब निकलवाता हूं।" स्वामीनाथन बड़ी उत्सुकता से किसी चमत्कार की प्रतीक्षा करता रहा। पिताजी ने सवाल को मन में पढ़ा और पूछा, "दस आमों की कितनी कीमत है ?"

स्वामीनाथन ने सवाल पर नजर डालकर यह जानना चाहा कि उसके किस हिस्से में जवाब छिपा है, फिर बोला, "पता नहीं।"

"तुम एक नंबर के बुद्धू हो। पढ़ो सवाल, पढ़ो। दस आमों से दाम कितने आने प्राप्त करना चाहता था ?"

"पंद्रह आने," स्वामीनाथन ने सोचा लेकिन यह उनका मूल्य, उचित मूल्य कैसे हो सकता है ? राम ने लालच में इतना मांगा होगा, लेकिन क्या यह उचित मूल्य है ? फिर यह भी पता नहीं चलता कि आम कच्चे थे या पके हुए। अगर पके हुए हैं तो 15 आने मूल्य असंभव नहीं होगा। लेकिन इस बात पर कौन रोशनी डालेगा ?

"राम ने आमों की कितनी रकम मांगी ?"

"पंद्रह आने," स्वामीनाथन ने कहा किंतु उसका मन मानने को तैयार नहीं था।

"बहुत अच्छा। अब कृष्ण कितने आम लेना चाहता है ?"

"चार!"

"चार आमों का कितना दाम हुआ ?"

ऐसा लग रहा था कि स्वामीनाथन को सताने में पिताजी को मजा आ रहा था। वह कैसे जान सकता है कि वह बेवकूफ कृष्ण कितना दाम देगा।

"देखो स्वामी, मन तो करता है तुम्हारी खूब मरम्मत करूं। तुम्हारी खोपड़ी में क्या भूसा भरा है ? दस आमों की कीमत हुई 15 आने तो एक की कितनी हुई ? बोलो! अगर तुमने नहीं बताया तो...," उन्होंने स्वामीनाथन का कान पकड़ा और धीरे से उसे मरोड़ा। स्वामीनाथन की बोलती बंद थी, क्योंकि वह यह फैसला नहीं कर सका कि सवाल जमा

का है, घटा का है, गुणा का है या भाग का है। उसकी हिचकिचाहट जितनी लंबी हुई, कान उतनी ही जोर से खिंचता गया। अंत में जब पिता त्यौरी चढ़ाये जवाब का इंतजार कर रहे थे स्वामीनाथन के मुंह से हलकी सी चीख निकली। "जब तक तुम यह नहीं बताओगे कि दस आमों के 15 आने तो एक आम कितने का, तब तक मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं।" स्वामीनाथन आंखें मिचमिचाकर सोचता रहा, 'पिताजी को क्या हो गया है ? आम की कीमत जानने की क्या जरूरत है ? अगर पिताजी जानना बहुत जरूरी समझते हैं तो वे बाजार जाकर पूछ क्यों नहीं आते। राम और कृष्ण के बीच कुछ आमों और कुछ पैसों के लेन-देन को लेकर इस लंबी चिकचिक पर स्वामीनाथन को बहुत झुंझलाहट हो रही थी।

पिताजी ने यह कहकर हार मान ली, "एक आम की कीमत होगी पंद्रह बटा दस आना। अब इसे सरल करो।"

स्वामीनाथन ने देखा कि उसे गणित के सबसे भयानक क्षेत्र, भिन्नों में धकेला जा रहा है, "पिताजी, मेरी स्लेट दीजिए। मैं अभी निकालता हूं।" उसने सवाल हल किया और पंद्रह मिनट बाद बोला, "एक आम की कीमत हुई तीन बटा दो आना।" वह उम्मीद कर रहा था कि उसके जवाब को गलत बताया जायेगा। किंतु पिताजी बोले, "बहुत अच्छे, इसको भी सरल करो।" इसके बाद तो रास्ता साफ था। एक घंटा यातना झेलने के बाद स्वामीनाथन ने घोषणा की, "कृष्ण को छह आने देने होंगे," इसके साथ ही वह रो पड़ा।

3

शाम 5 बजे क्लब जाते समय स्वामीनाथन के पिता को इस बात का अफसोस हुआ कि उन्होंने बेटे को सारी दोपहर परेशानी में डाले रखा। जब उन्होंने स्वामी को खंभे के पीछे उदास खड़ा देखा तो पूछा, "क्यों बेटे, मेरे साथ क्लब चलोगे ?" जवाब में स्वामीनाथन एक क्षण के लिए ओझल हुआ और फिर कोट-टोपी पहनकर प्रकट हो गया। पिता ने उसे सिर से पैर तक देखा और बोले, "तुम कुछ साफ-सुथरा बनकर क्यों नहीं रहते ?" स्वामीनाथन अनाड़ीपन से सिकुड़कर रह गया।

"लक्ष्मी!" पिता ने उसकी मां को आवाज लगायी और उसके आने पर बोले, "बक्से में लड़के के लिए साफ कपड़े होंगे। दे दो इसे।"

"इस वक्त मुझे परेशान मत करो। वह ठीक तो है। बक्सा खोलने का मेरे पास समय नहीं है। चाबियां भी न जाने कहां हैं। मैं बच्चे के लिए दूध मिला रही हूं।" मां ने कहा।

"इसके सारे कपड़ों का क्या हुआ ?"

"कैसे कपड़े ? पिछली गर्मियों के बाद आप ने एक इंच कपड़ा भी खरीदा है ?"

"क्या कह रही हो ? कुछ महीने पहले मैं जो कपड़े का पीस लाया था उनका क्या

हुआ ?" उन्होंने अस्पष्ट सा सवाल किया, लेकिन मन ही मन निश्चय किया कि बुधवार शाम स्वामीनाथन को किसी दर्जी के पास ले जाना है। स्वामीनाथन को इस बात से राहत मिली कि मां उसे नये कपड़े देने के लिए तैयार नहीं, क्योंकि उसे डर था कि वह कपड़े बदलने जायेगा तो पिताजी उसे छोड़कर चले जायेंगे।

घर के बाहर कार का हार्न बजा। पिता ने मेज से टेनिस का रैकेट उठाया और तेजी



से बाहर निकले। स्वामीनाथन भी पीछे-पीछे निकला। ड्राइवर की सीट पर एक महाशय बैठे थे जिन्होंने रंगीन जैकेट पहन रखी थी जो स्वामीनाथन को बहुत अच्छी लगी। "गुड ईवनिंग," उसने मुस्कराकर कहा। पहले तो स्वामीनाथन डरा कि कार वाले महाशय उसे साथ ले जाने से मना न कर दें। किंतु जब उन्होंने कहा, "हैलो श्रीनिवासन, क्या लड़के को क्लब ले चल रहे हो, बहुत अच्छी बात है," तो स्वामीनाथन पिछली सीट पर जा बैठा जबकि पिता अगली सीट पर उन महाशय की बगल में बैठ गये।

कार तेजी से चल दी। स्वामीनाथन का मन बल्लियों उछलने लगा। उसने चाहा कि उसका कोई दोस्त इस वक्त उसे देख ले। कार एक गेट के अंदर जाकर लगभग आधा दर्जन कारों के बीच जा रुकी।

उसने पिता को टेनिस खेलते देखा और इस नतीजे पर पहुंचा कि साथ-साथ बने तीन कोर्टों में सबसे अच्छे खिलाड़ी वही थे। स्वामी ने देखा कि जब उसके पिता शाट मारते थे तो सामने के खिलाड़ी के लिए उसे उठाना असंभव होता था और बाल पर्दे से जा टकराती थी। उसने यह भी देखा कि बाल उठाने वाले की जिंदगी बहुत खतरे से भरी होती थी।

स्वामीनाथन खुश था। केवल यह बात कि उसे वहां आकर खेल देखने की इजाजत मिली, उसमें महत्वपूर्ण होने का भाव भर रही थी। वह धीरे-धीरे चलकर पिता के पीछे पर्दे के पास आ खड़ा हुआ। वहां खड़ा होने से पहले थोड़ी देर के लिए उसने सोचा कि खाकी वर्दी पहने लड़का आपत्ति तो नहीं करेगा। लेकिन वह लड़का बाल उठाने और खिलाड़ियों को वापस करने में व्यस्त था। स्वामीनाथन वहां करीब दस मिनट खड़ा रहा। पीछे से पिता के खेल को वह साफ-साफ देख सकता था और जब उनका रैकेट बाल को हिट करता था तो स्वामीनाथन के कानों को बहुत अच्छा लगता था।

स्वामीनाथन अब खाकी वर्दी वाले लड़के को देखने लगा। जब उसने ध्यान लगाकर देखा तो उसके चेहरे के भाव बदल गये। उसने बार-बार आंखें मिचमिचायीं, जैसे उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हो रहा था। वह गाड़ीवान का बेटा था हालांकि खाकी वर्दी के कारण वह कुछ बदला हुआ लगता था। अब उस लड़के ने भी घूमकर उसे देख लिया था। उसने घृणा से मुंह बिचकाया और जेब से छोटा चाकू निकालकर ऊपर उठाया। स्वामीनाथन डर गया। वह तुरंत वहां से हटकर पहले वाली जगह पर आ गया जो दुश्मन से सुरक्षित दूरी पर थी।

सेट खेलने के बाद जब उसके पिता क्लब की बिल्डिंग की तरफ बढ़ने लगे तो स्वामीनाथन सुरक्षा की दृष्टि से उनके पीछे नहीं, कुछ आगे-आगे चला क्योंकि उसे डर लग रहा था कि किसी भी क्षण उसकी पीठ में छुरा आ घुसेगा।

"स्वामी, आगे मत चलो, तुम मेरी टांगों के बीच चले आ रहे हो," पिता ने कहा। स्वामीनाथन ने अनिच्छा से आज्ञा का पालन किया। वह आसपास और पीछे तेज नजर

डालता रहा। उसने नीचे झुककर एक नोकदार पत्थर उठाया ताकि जरूरत पड़ने पर उसका उपयोग किया जा सके। टेनिस कोर्ट और क्लब बिल्डिंग के बीच लगभग बारह गज की दूरी थी, किंतु स्वामीनाथन को यह डेढ़ मील लगी।

ताश खेलने के कमरे में पिता की बगल में कुर्सी पर बैठकर उसने अपने को सुरक्षित महसूस किया। हवा में धुएं का घना बादल छाया था। पिता ताश को फेंटकर बड़े उत्साह के साथ पत्ते फेंक रहे थे। दुनिया में यह सबसे सुरक्षित जगह थी। वहां पिताजी थे और उनके कितने ही दोस्त। गाड़ीवान का लड़का हाथ आजमाना चाहे तो आजमा कर देख ले। कुछ देर बाद स्वामीनाथन ने खिड़की के बाहर देखा और आसमान में तारे देखकर उसे परेशानी हुई। ताश का खेल खत्म होने और पिताजी के घर चल देने तक तो और भी अंधेरा हो जायेगा।

एक घंटे बाद स्वामीनाथन के पिता मेज छोड़कर उठे। बिल्डिंग की अंतिम सीढ़ियों से उतरते समय स्वामीनाथन काफी घबरा गया। चारों तरफ अंधेरे में कई तरह का खतरा हो सकता था। पिता और उनके दोस्त के बीच चलते हुए वह निस्संदेह सुरक्षित था। इस विचार से उसे काफी हिम्मत मिली। लेकिन उसे लग रहा था कि ताश खेलने बैठे सब लोग उसे कार तक छोड़ने आते तो ज्यादा अच्छा होता। जितनी सुरक्षा मिली हुई थी वह तो जरूरी थी ही, लेकिन उससे कहीं अधिक की जरूरत उसने अनुभव की। अब तक वह लड़का अपने साथ हत्यारों का बड़ा गिरोह लेकर आ गया होगा और उसकी राह देख रहा होगा। वह आगे-आगे नहीं चल सकता था। एक तो इसलिए कि पिताजी की टांगों के बीच आ सकता था और दूसरे इसलिए कि उसे पता नहीं था कि कार तक जाने का कौन सा रास्ता है। पिताजी के पीछे-पीछे चलने का सवाल ही नहीं था क्योंकि तब वह कार तक पहुंचेगा ही नहीं। वह अजीब तिरछे कदमों से चल रहा था जिससे वह एक साथ आगे और पीछे देख सकता था। दूरी खत्म ही नहीं हो रही थी। उसने फैसला किया कि पिताजी को अपने डर की बात बता देगा और सुरक्षा प्राप्त करेगा।

"पिताजी!"

"क्या बात है ?"

अचानक स्वामीनाथन ने निर्णय लिया कि पिताजी को गाड़ीवान के लड़के की बात नहीं बतानी चाहिए, भले ही स्थिति कितनी ही गंभीर हो।

"तुम क्या कह रहे थे बेटे ?" पिताजी ने फिर पूछा।

"पिताजी, अब हम घर जा रहे हैं ?"

"हां।"

"पैदल ?"

"नहीं, गेट के पास कार है।"

जब वे कार के पास पहुंचे तो सबसे पहले स्वामीनाथन कार में घुसा और पीछे की

सीट पर बीच में बैठ गया। वह अब भी किसी घटना की प्रतीक्षा कर रहा था। पिताजी के दोस्त कार स्टार्ट करने में देर कर रहे थे। स्वामीनाथन पिछली सीट पर अकेला ही बैठा था, पिताजी और उनके दोस्त के बहुत पीछे। अब भी गाड़ीवान का लड़का और उसके दोस्त उसे बाहर खींचकर खत्म कर सकते थे।

कार स्टार्ट हुई। जब उसके इंजिन की घर्रघर्र हुई तो स्वामीनाथन के कानों को वह आवाज रक्षा करने वाले भगवान की आवाज लगी। कार अब गेट के बाहर थी और वह तेज भागने लगी थी। स्वामीनाथन ने अपनी धोती का पल्लू उठाकर अपनी भौंहें पोंछ लीं।

बारह

टूटे कांच

1

15 अगस्त, 1930 को बंबई के प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता गौरीशंकर की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए मालगुड़ी के लगभग दो हजार नागरिक सरयू के दाएं तट पर जमा हुए। गंभीर दिखने वाले एक खद्दरधारी व्यक्ति ने लकड़ी के मंच पर खड़े होकर भाषण दिया। ऊंची और चीरती हुई आवाज में उसने गौरीशंकर के जीवन तथा कार्यों पर प्रकाश डाला और बाद में आम विषयों पर अपने विचार रखे। "हम आज गुलाम हैं," तीखी आवाज में उसने कहा, "इतने गुलाम जितने हम पहले कभी नहीं रहे। हमें अपने इतिहास को, अपनी विरासत को याद रखना है। क्या हम रामायण और महाभारत के स्वर्णिम युगों को भूल गये हैं ? यह वही देश है जिसने संसार को कालिदास, महात्मा बुद्ध और शंकराचार्य दिये। जब अंग्रेज कच्चा मांस खाते थे और जंगलों में नंगे घूमते थे, तब हमारे देश के जहाज सात समुद्र पार करके दूसरे देशों में जाते थे और हम सभ्यता के शिखर पर पहुंचे हुए थे। लेकिन आज हम क्या हैं ?" थोड़ी देर रुककर उसने अपने शब्दों के अर्थ की चिंता किये बिना जोश में आकर कहा, "हम आज गुलामों के भी गुलाम हैं।" स्वामीनाथन और मणि को भी भाषण का यह हिस्सा समझ में नहीं आया। किंतु पांच मिनट के बाद उसने ऐसी बात कही जो स्वामी और मणि को व्यावहारिक लगी। उसने कहा, "एक क्षण के लिए सोचिए। हम साढ़े तैंतीस करोड़ हैं और हमारी भूमि रूस को छोड़कर सारे यूरोप के बराबर है। इंगलैंड हमारे मद्रास प्रांत से बड़ा नहीं है, उसमें मुट्ठी भर गोरे बदमाश रहते हैं और वह भी हजारों मील दूर। फिर भी हम अंग्रेजों के आगे सिर झुकाते हैं। हम क्यों बिना कारण दब्बू और डरपोक बने हुए हैं ? यहां के नौकरशाही तंत्र ने हमें डरा धमकाकर और भूखा रखकर ऐसा बनाया है। तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं करना है। अगर सारे भारतीय इंगलैंड पर थूकेंगे तो वह थूक ही इंगलैंड को डुबाने के लिए काफी होगा...।"

इस बिंदु पर स्वामीनाथन भाषण से इतना प्रभावित हुआ कि वह बिना सोचे जोर से चिल्लाया, "गांधी जी की जय।" मणि ने उसे जोर से कोहनी मारी और फिर धीरे से

कहा, "बेवकूफ, तुम चुप नहीं रह सकते!"

स्वामीनाथन ने पूछा, "क्या यह सच है ?"

"क्या ?"

"थूक में सारे यूरोपियनों को डुबाना।"

"हो सकता है। नहीं तो वह आदमी ऐसी बात क्यों कहेगा ?"

"तो ऐसा क्यों न करें ? यह तो आसान है।"

"यूरोपियन हमें गोली से उड़ा देंगे। वो बेरहम लोग हैं," मणि बोला। यह उत्तर संतोषजनक लगा। स्वामीनाथन समाधान के लिए एक और शंका मणि के सामने रखने वाला था कि पास के एक-दो व्यक्तियों ने उसकी तरफ घूरकर देखा।

शाम तक स्वामीनाथन पर उस भाषण का जादू छाया रहा और मणि पर भी। भाषणकर्ता के साथ-साथ वे भारतीय किसान की हालत पर रोये। उन्होंने अंग्रेजी माल का बहिष्कार करने का निश्चय किया, विशेषकर लंकाशायर और मैंचेस्टर के कपड़ों का, क्योंकि वहां की मिलों के मालिकों ने ढाका की मलमल के बुनकरों के अंगूठे काट लिये थे—वही ढाका की मलमल, जिसके लिए भारत कभी प्रसिद्ध था। क्या मलमल थी वह! चालीस गज मलमल का थान मोड़कर सुंघनी की डिबिया में रखा जा सकता था। जिन व्यक्तियों ने ऐसे बुनकरों के अंगूठे काटे उन्हें बड़ी से बड़ी सजा मिलनी चाहिए। स्वामीनाथन उन्हें यह सजा देगा सिर्फ हाथ का बना खद्दर पहनकर। उसने खीझ से भरकर अपने कपड़ों की तरफ देखा और धीमी आवाज में मणि से बोला, "मणि, तुम बता सकते हो मैं इस वक्त क्या पहने हूं ?"

मणि ने स्वामीनाथन के कोट को ध्यान से देखकर कहा, "यह लंकाशायर का कपड़ा है।"

"तुम्हें कैसे पता ?"

मणि ने जवाब में आंखें तरेरीं।

"तुमने क्या पहन रखा है ?" स्वामीनाथन ने पूछा।

"खद्दर। क्या तुम समझते हो, मैं लंकाशायर के उन शैतानों को एक पाई भी दूंगा ? नहीं, उन्हें मुझसे कुछ नहीं मिल सकता।"

उसकी बात पर स्वामीनाथन को शक था किंतु उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। उसने चाहा कि काश वह लंकाशायर का कपड़ा पहनने की बजाय नंगा आया होता।

भीड़ से जोर का नारा उठा : 'भारत माता की जय'। और फिर गांधीजी की जय के नारे उठे। उसके बाद अत्यंत शांत भाव से राष्ट्रीय गान हुआ। शाम का कार्यक्रम विदेशी कपड़ों की होली के साथ खत्म हुआ। अंधेरा हो चुका था। अचानक अंधेरे के बीच लाल रोशनी चमक उठी। आग जलायी गयी। गांधी टोपी पहने दो लड़के लोगों के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि वे अपने विदेशी कपड़े जला दें। कोट, टोपियां, कमीजें वगैरह

भीड़ में से फेंके जाने लगे और वे आग में गिरने लगे। आग की लपटें ऊंची उठीं और हवा में धुआं तथा कपड़ों के जलने की गंध भर गयी। लोग लाल चमक में धुंधले सायों की तरह इधर-उधर चलते दिखायी दिये। स्वामीनाथन खुशी की झुरझुरी के साथ यह दृश्य देख रहा था। किसी ने उससे पूछा, "क्यों नौजवान, क्या तुम चाहते हो कि हमारा देश हमेशा गुलाम बना रहे ?"

"नहीं, नहीं," स्वामीनाथन ने जवाब दिया।

"लेकिन तुम्हारे सिर पर विदेशी टोपी है।"

स्वामीनाथन शर्म से गड़ गया। "ओह, मैंने इसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया था," कहकर स्वामीनाथन ने टोपी उतारकर आग में फेंक दी। उसे लगा कि वह देश को बचा रहा है।

2

अगली सुबह स्वामीनाथन बिस्तर पर लेटे-लेटे कुछ दूर पड़ रही धूल-कणों से भरी सूरज की किरणों को देख रहा था। कच्ची नींद में उसका मन एक अस्पष्ट चिंता से भर उठा। स्वामीनाथन ने अपने आप से सवाल किया कि यह चिंता क्या है ? शायद इसका संबंध स्कूल से है। होमवर्क ? नहीं। इस बारे में कोई चिंता नहीं थी। इसका संबंध उसके कपड़ों से था। होली, कपड़ों की होली। हां, अब उसे साफ-साफ याद आया कि कल शाम उसने अपनी टोपी आग में फेंक दी थी और पिताजी को इसके बारे में कुछ पता नहीं है।

आज वह क्या पहन कर स्कूल जायेगा ? पिताजी को बताना और उनसे नयी टोपी की मांग करना व्यावहारिक नहीं है। वह नंगे सिर स्कूल भी नहीं जा सकता है।

वह अपने को भाग्य के भरोसे छोड़, बिना टोपी के, सिर्फ कोट पहनकर स्कूल के लिए चल दिया। भाग्य उस पर जरूर मेहरबान था, कम से कम स्वामी को ऐसा ही लगा। जब वह स्कूल पहुंचा और उसे स्कूल के सामने सड़क पर शोर मचाती लड़कों की अनियमित-सी भीड़ दिखाई दी तो उसे इसमें भगवान का हाथ लगा।

स्वामीनाथन को भीड़ से गुजरते किसी ने नहीं देखा, जब तक कि वह स्कूल के गेट के पास नहीं पहुंच गया। फिर तीसरे फार्म के एक बिल्कुल अपरिचित लड़के ने उसे रोका और पूछा, "तुम कहां जा रहे हो ?" स्वामीनाथन ने थोड़ी देर सोचा कि कहीं इस सवाल में उसे फांसने की कोशिश तो नहीं है। फिर उसके मुंह से निकला, "क्यों ? स्कूल...।"

"आज स्कूल बंद है," उस अजनबी लड़कों ने जोर देकर कहा और फिर भावावेश में आकर बोला, "भारत मां के एक महान सपूत को आज जेल भेज दिया गया है।"

"मैं भी स्कूल नहीं जाऊंगा," स्वामीनाथन ने टोपी की समस्या के इस अप्रत्याशित समाधान से राहत महसूस करते हुए कहा।

हैडमास्टर और दूसरे अध्यापक स्कूल के सामने के दालान में खड़े हुए थे। हैडमास्टर परेशान लग रहे थे। अध्यापक एब्नेजर छड़ी घुमाते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। इतिहास के अध्यापक डी. पिल्लै भी परेशान थे और बड़ी बेसब्री से अपनी बारीक-कटी मूंछों को नोच रहे थे। सड़क की भीड़ में तेजी आ गयी और शोर बढ़ गया था। स्कूल उजाड़ दिखायी दे रहा था। दस बजने से पांच मिनट पहले, पहली घंटी बजी, जो गेट पर खड़े कुछ लड़कों को छोड़कर शायद ही किसी को सुनायी दी। हैडमास्टर और दूसरे अध्यापकों के बीच विचार-विमर्श चल रहा था। कांपते हाथों से हैडमास्टर ने जेबी घड़ी पर नजर डाली और दूसरी घंटी बजाने का आदेश दिया। जो घंटी आमतौर पर साफ और तेज आवाज निकालती थी उसमें से क्मजोर और टूटी-सी ध्वनि निकली। हैडमास्टर और दूसरे अध्यापक गेट की तरफ आते दिखायी दिये और भीड़ में चुप्पी छा गयी।

हैडमास्टर ने लड़कों से कहा कि वे अच्छे लड़के बनकर चुपचाप अपनी-अपनी कक्षाओं में जायें। लड़के अपनी जगह पर खड़े रहे। डी. पिल्लै सहित सभी अध्यापकों ने कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। हैडमास्टर यह चेतावनी देकर चले गये कि इसकी कड़ी सजा दी जायेगी। उनके मुड़ते ही 'भारत माता की जाय', 'गांधी की जय' और 'गौरीशंकर की जय' के नारे गूंज उठे।

शुरू में जो लड़कों की भीड़ थी, उसमें धीरे-धीरे कई तरह के लोग शामिल हो गये थे। अब 'गांधी की जय' के नारों में उत्साह से भरे वयस्कों की आवाजें भी सुनी जा सकती थीं।

आधा दर्जन के करीब लोगों ने नेतृत्व संभाल लिया था और वे कहते फिर रहे थे, "याद रखो, यह हड़ताल है। यह शोक का दिन है। यह दिन शोक और मौन की सच्ची भावना से मनाया जाये।"

स्वामीनाथन भीड़ में एक छोटे से कण की तरह अदृश्य हो गया था। दूसरा न दिखायी देने वाला कण छोटे-छोटे पत्थर अपने पास जमा रहा था और बढ़िया निशाने के साथ उन्हें स्कूल के सामने के हिस्से के शीशों पर फेंक रहा था। स्वामीनाथन भी उसका अनुकरण करने लगा। उसने कुछ पत्थर मुट्ठी में लिये और स्कूल की बिल्डिंग के साबुत बचे शीशों को ढूंढ़ने लगा। उसे यह देखकर निराशा हुई कि कम से कम सत्तर प्रतिशत शीशे टूट चुके थे।

फिर वह खुशी से चिल्ला पड़ा, जब उसकी नजर हैडमास्टर के कमरे के रोशनदान पर गयी, जिसके चौकोर कांच अभी सही-सलामत थे। उसने उसको निशाना बनाकर पत्थर फेंका, कान लगाकर कांच टूटने की आवाज और फिर कांच के टुकड़ों के फर्श पर गिर कर चकनाचूर होने की आवाज सुनी। यह सब बहुत रोमांचक था।

एक साधारण सा आदमी दौड़ता हुआ आया और उसने उत्तेजित स्वर में घोषणा की, "बोर्ड हाई स्कूल में पढ़ाई चल रही है।"

इस बुरी खबर से भीड़ में हलचल होने लगी। भीड़ मार्किट रोड के अंतिम छोर पर स्थित बोर्ड हाई स्कूल की तरफ चल पड़ी।

वहां पहुंचने पर स्वयंभू नेताओं ने हाथ उठाकर भीड़ को बाहर ही शांत भाव से रुकने को कहा और खुद स्कूल के अंदर गये। पंद्रह मिनट बाद दो-दो, तीन-तीन के दल में भीड़ भी स्कूल के हाल में आ गयी।

भीड़ के एक प्रवक्ता ने हैडमास्टर से कहा, "सर, हम यहां गड़बड़ी करने नहीं आये हैं। हम सिर्फ इतना चाहते हैं कि आप स्कूल बंद कर दें। यह बहुत जरूरी है। हमारे नेता को जेल हुई है। मातृभूमि पर इस समय युद्ध का संकट है।"

झुर्रियों से भरे उल्लू जैसे चेहरे वाला हैडमास्टर चीखा, "तुम लोग किसकी अनुमति से अंदर आये ? बाहर निकल जाओ, नहीं तो मैं पुलिस को बुलाऊंगा।"

इस पर भीड़ में हा-हा, हू-हू होने लगी और सीटियां बजने लगीं। इसके साथ ही मेज-कुर्सियों और बेंचों की तोड़फोड़ होने लगी और खिड़कियों के शीशे टूटने लगे। बोर्ड स्कूल के अधिकांश लड़के भी भीड़ में शामिल हो गये, लेकिन कुछ अलग खड़े रहे। पहले उन्हें बाहर आने के लिए कहा गया और उनके आनाकानी करने पर उन्हें बाहर खींच लिया गया।

इस सारे काम में स्वामीनाथन की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही। हैडमास्टर के पुलिस की धमकी देने पर वह चिल्ला कर बोला था, "हम पुलिस पर थूकेंगे" (हालांकि उसकी बात शोर में डूब गयी थी)। पुलिस के नाम से ही उसका खून उबलने लगा था। अंगूठे काटने वाले लंकाशायर की कमीनी दलाल पुलिस को बुला रहा है! इतना नंगापन! इतनी बेशरमी! जब धकमपेल शुरू हुई तो वह स्कूल के फर्नीचर तोड़ने में किसी से पीछे नहीं रहा। बेहद खुशी के साथ उसने देखा कि अभी तक खिड़कियों के बहुत से कांच बचे हुए थे। अपने स्कूल में कांच तोड़ने से उसका मन नहीं भरा था। उसने इधर-उधर से स्याही की दवातें इकट्ठी कीं और जो भी कांच साबुत दिखायी दिया उसे एक-एक करके तोड़ने लगा। जब बोर्ड स्कूल के लड़कों को बाहर घसीटा गया तो उसे लगा कि वह इस मामले में कुछ खास नहीं कर सकता है, क्योंकि अधिकांश लड़के उसके बराबर के ही थे। बिजली की तरह उसके मन में एक विचार कौंधा और भीड़ से निकलकर वह शिशु कक्षाओं को ढूंढ़ने लगा। उसने छोटे बच्चों को एक कोने में जमा होकर डर के मारे कांपते देखा। वह इतनी उग्रता से उनकी ओर लपका कि बच्चे एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते भाग खड़े हुए। एक बदकिस्मत लड़के पर जो थोड़ा पांव घसीटता बेढंगी चाल से चल रहा था, स्वामीनाथन का ध्यान गया। स्वामीनाथन ने उसे दबोच कर उसकी टोपी छीनी और उसे नीचे फेंक कर पैरों से रौंद दिया। ऐसा करते समय वह उसे गालियां

भी देता रहा। उसने उस लड़के को धक्का दिया, इधर-उधर धकेला और फिर सिर में एक घूंसा जमाकर उसे छोड़ दिया।

बोर्ड स्कूल का काम सफलतापूर्वक ठप करने के बाद भीड़ जुलूस बनाकर मार्किट रोड की तरफ बढ़ने लगी। आसमान नारों और गानों के स्वर से गूंज उठा। इसमें सैंकड़ों प्रकार की आवाजें थीं। स्वामीनाथन जुलूस के पीछे अपरिचित चेहरों के बीच फंसा हुआ था। बदरंग, वृक्षहीन मार्किट रोड की चमक आंखों को चौंधिया रही थी। जुलूस गुजरने से उठी सफेद धूल हवा में झीने कोहरे की तरह लटकी थी और उसमें स्वामीनाथन का दम घुट रहा था। उसे लोगों के कंधे और पीठें दिखायी दे रही थीं और बीच-बीच में मकानों के कुछ हिस्से। चिल्लाने से उसका गला सूखने लगा था और भूख भी लगने लगी थी। वह सोच ही रहा था कि उसे चुपचाप यहां से खिसक कर चले जाना चाहिए या नहीं, कि तभी जुलूस एकाएक रुक गया। दूसरे ही क्षण पीछे की भीड़ यह देखने के लिए आगे बढ़ी कि आगे क्या हुआ है।

जुलूस अब मार्किट रोड के बीच चौराहे के फव्वारे के सामने पहुंच चुका था। फव्वारे की दूसरी ओर लगभग पचास पुलिस के सिपाही लाठियां लिए खड़े थे। उनमें से लगभग एक दर्जन सिपाहियों ने जुलूस को रोक रखा था। एक भारी-भरकम आदमी, जिसके हाथ में डंडा और पेटी में रिवाल्वर था, जुलूस की तरफ बढ़ा। उसके चमड़े के फीते, पेटी, चमकदार जूते, मोजे उसे स्वामीनाथन की नजरों में बहुत रौबदार आदमी बना रहे थे। जब उसने सिर घुमाया तो स्वामीनाथन अपने सामने राजम के पिता को देखकर धक् रह गया। स्वामीनाथन को अफसोस हुआ कि राजम के पिता इस चक्कर में फंस गये। उन्हें देश-द्रोहियों का सरदार बनना पड़ा। पुलिस के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ने घड़ी पर नजर डालकर कहा, "मैं इस जुलूस को गैरकानूनी घोषित करता हूं। मैं इसे तितर-बितर होने के लिए पांच मिनट का समय देता हूं।" पांच मिनट के बाद उसने सामने देखा और भारी आवाज में आज्ञा दी, "लाठी-चार्ज।"

इसके बाद जो हफड़ा-तफड़ी मची उसमें स्वामीनाथन की स्थिति ऐसी हो गयी कि वह पैरों से कुचलकर मर ही जाता। पुलिस के सिपाही भीड़ की तरफ दौड़े और जो भी सामने आया उसकी धुनाई-पिटाई कर दी। स्वामीनाथन उस छोटे से दल में शामिल था जो मारे डर के भाग रहा था। पुलिस के सिपाही लाठियां उठाये उनकी तरफ दौड़े। स्वामीनाथन ने रोनी आवाज में कहा, "मुझे मत मारो, मैं कुछ नहीं जानता।" इसके बाद उसने डूबी हुई सी आवाजें सुनीं जब उसके साथ वालों पर लाठियां बरसीं। उसने एक आदमी के सिर से खून का फव्वारा छूटते देखा। फिर लाठियां बरसीं। एक और भागता आदमी गिरा और कराहने लगा। तीसरे की पीठ पर भी तड़ातड़ लाठियां बरसने लगीं।

डर के मारे स्वामीनाथन का सिर चकराने लगा। वह इतना तेज भाग रहा था, जितना उसकी टांगें उसे ले जा सकती थीं। किंतु पुलिस के सिपाही उतनी ही तेजी से उसका



पीछा कर रहे थे। आखिर एक ने उसे बालों से पकड़ लिया और पूछा, "तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

"मैं कुछ नहीं जानता। मुझे छोड़ दीजिए।" स्वामीनाथन ने विनती की।

"अच्छा, कुछ नहीं जानते ? शरारती बंदर!" यह कह कर डरावने पुलिसिये ने—निकट से देखने पर पता चलता है कि पुलिसिये कितने डरावने होते हैं—धीरे से डंडा उसके सिर पर मारा और उसे भाग जाने का आदेश दिया; पीछे से एक लात भी जमा दी।

3

शुरू में स्वामीनाथन का विचार था कि वह उस प्रसंग को पिताजी से नहीं कहेगा। लेकिन पिताजी ने घर आते ही, यहां तक कि कोट उतारने से पहले ही मां को बुलाया और संक्षेप में सारी घटनाएं सुना दीं।

"डिप्टी सुपरिंटेंडेंट तो कसाई है," कहते हुए वे कपड़े बदलने दूसरे कमरे में चले गये। स्वामीनाथन को उनकी इस बात से सहमत होना पड़ा। उसके सामने राजम के पिता की वह तस्वीर घूम गयी, जब उन्होंने लाठीचार्ज का हुक्म देने से पहले कुछ पल अपनी घड़ी पर निष्ठुर नजरों को गड़ाया था। पिता टाई खोलते हुए कमरे से बाहर आये और बोले, "पंद्रह व्यक्तियों को गंभीर चोटें आयी हैं और उन्हें अस्पताल में दाखिल किया गया है। ऐसा माना जा रहा है कि एक-दो आदमी मरे भी हैं।" फिर स्वामीनाथन की तरफ देखकर बोले, "मैंने सुना है कि स्कूल के लड़कों ने बहुत उपद्रव किया है। तुमने क्या किया ?"

"स्कूल में हड़ताल हुई...," स्वामीनाथन ने उत्तर दिया और यहां उसने अपनी टोपी की समस्या के समाधान का अवसर देखा। वह बोला, "बहुत गड़बड़ी मची। किसी ने मेरे सिर से टोपी उतार ली और उसके चिथड़े-चिथड़े कर दिये।... कल स्कूल जाने से पहले मुझे टोपी की जरूरत पड़ेगी।"

"कौन था ?" पिताजी ने पूछा।

"मैं नहीं जानता। भीड़ में कोई शरारती लड़का था।"

"उसने ऐसा क्यों किया ?"

"क्योंकि टोपी विदेशी थी...।"

"कौन कहता है ? मैंने दो रुपये देकर खादी भंडार से ली थी। काले खद्दर की टोपी थी। तुम यह क्यों मान लेते हो कि तुम सब कुछ जानते हो ?"

"मैंने कुछ नहीं किया। उसे रोकने की कोशिश में मैं लगभग पिट ही गया था।"

"तुम्हें उसे पटक देना चाहिए था। मैंने एक ही दिन खादी भंडार से टोपी और कोट के लिए कपड़ा खरीदा था। जो यह कहता है कि वह खद्दर नहीं है, वह जरूर अंधा होगा।"

"लोग कहते हैं वह कपड़ा लंकाशायर में बना था।"

"बकवास। उनसे कहो अपना काम करें और अगर तुम हर ऐसा-वैसा कहने वाले को अपने कपड़े फाड़ने दोगे तो तुम्हें नंगा रहना पड़ेगा, बस। और उन्हें यह भी बता सकते हो कि मैं अपनी एक पाई भी विदेश नहीं जाने दूंगा। मैं अपना फर्ज जानता हूं। जो भी हो, तुम लड़के लोग राजनीति छोड़ अपने काम की तरफ ध्यान क्यों नहीं देते ? हमारे देश में पहले से ही काफी समस्याएं हैं, तुम लोग अपनी शरारतों से उन्हें और क्यों बढ़ाते हो... ?"

स्वामीनाथन बिस्तर में लेटा बड़ी देर तक जागता रहा। जैसे-जैसे समय बीतता गया और घर की सारी बत्तियां एक-एक कर बुझती गयीं तो उसने शरीर पर दिन में लगी चोटों की तरफ जबरन अपना ध्यान खींचा। उसके घुटने और कुहनियां अपनी कहानी कह रहे थे। उसे दिन में तीन-चार बार गिरने की याद आयी। एक तो..., हां तब, जब राजम कार से उतरकर स्कूल में आया था और स्वामीनाथन ने अपने को छिपाने की कोशिश की थी। वह पत्थर के एक ढेर पर गिर पड़ा था और उसके घुटने बुरी तरह छिल गये थे। फिर पुलिसियों ने लाठी चार्ज किया तो वह भागा था और एक दुकान के सामने मुंह के बल गिर पड़ा था। कोई राक्षस उसके ऊपर से गुजर गया था और उसके एक पैर के नीचे आकर वह जमीन के साथ चिपक गया था।

करवट लेते समय उसे लगा कि कूल्हे भी दर्द कर रहे हैं। फिर उसे लगा कि उसकी जांघों के साथ कोई बोझ लटका हुआ है। तभी सिर में भी तेज और लगातार दर्द होने लगा—बेरहम गुंडे। पुलिसिये की लाठी भी इतनी हल्की नहीं लगी थी और उसे बंदर भी कहा गया था। बंदर वह नहीं है, बंदर तो ये पुलिसिये लगते हैं, और बंदरों की तरह व्यवहार भी करते हैं।

4

कुछ तमतमाये चेहरे और आंखों में कठोर, अनिष्टसूचक भाव लिए हैडमास्टर ने कक्षा में प्रवेश किया। स्वामीनाथन ने चाहा कि वह इस समय कक्षा में न होकर कहीं और होता। हैडमास्टर ने कुछ क्षण कक्षा का मुआयना किया फिर पूछा, "कल तुम लोगों ने जो कुछ किया उसके बाद यहां आकर बैठने में तुम्हें शर्म नहीं आती ?" उन्होंने उन दर्जन भर लड़कों के नाम लिए जो कल कक्षा में आये थे, मानो उनकी खास तारीफ कर रहे हों। उसके बाद उन्होंने उन लड़कों के नाम पढ़े जो नहीं आये थे और उन्हें बेंच पर खड़ा होने का आदेश दिया। स्वामीनाथन भी इनमें था और ऊंचाई पर खड़े होने में उसे अपमान महसूस हुआ। उसके बाद उन्हें उपदेश दिया गया। उसके खत्म होने पर उन्हें एक-एक करके स्पष्टीकरण देने को कहा गया। एक ने कहा उसे सिर दर्द था, इसलिए स्कूल नहीं



आ सका। उसे डाक्टर का प्रमाणपत्र लाने को कहा गया। दूसरे ने कहा कि वह स्कूल आ रहा था तो किसी ने बताया कि आज स्कूल बंद है, इसलिए वह वापस घर चला गया। हैडमास्टर ने कहा कि अगर वह हर आवारा आदमी की इस बात पर विश्वास कर लेता है कि स्कूल नहीं लगेगा तो उसे कोड़े लगने चाहिए। फिर तुमने स्वयं स्कूल आकर पता क्यों नहीं लगाया ? कोई जवाब नहीं। उसे सजा सुनायी गयी : दस दिन की हाजिरी नहीं लगेगी, दो रुपये जुर्माना और दिन भर बेंच पर खड़े रहो। तीसरे ने भी सिर दर्द का बहाना बनाया। चौथे ने पेट में दर्द बताया। पांचवे ने कहा कि वह स्कूल आ ही रहा था कि उसकी दादी मर गयी। हैडमास्टर ने पूछा कि क्या वह अपने पिता का पत्र ला सकता है ? जवाब था—नहीं। उसके पिता नहीं है। "फिर तुम्हारा अभिभावक कौन है ?" जवाब था—दादी।

"मगर दादी का तो स्वर्गवास हो गया है न ?"

"जी नहीं, यह दूसरी दादी थी।"

हैडमास्टर ने पूछा कि उसकी कितनी दादियां हैं ? कोई जवाब नहीं। "क्या तुम अपने पड़ोसी का पत्र ला सकते हो ?" जवाब था, "नहीं, मेरा कोई पड़ोसी लिखना-पढ़ना नहीं जानता, क्योंकि मैं सबसे अनपढ़ क्षेत्र एल्लामन स्ट्रीट में रहता हूं।" इस पर हैडमास्टर ने एक अध्यापक को उस क्षेत्र में जाकर यह पता करने के लिए कहा कि लड़के की दादी सचमुच मरी है या नहीं। वह लड़का थोड़ी देर चुप रहा और उसे पसीना आ गया। फिर उसने जवाब दिया कि पड़ोसियों को इसकी जानकारी नहीं हो सकती, क्योंकि उसकी दादी गांव में मरी है। हैडमास्टर ने उसकी उंगलियों के जोड़ों पर छड़ी मारी, उसे गली का कुत्ता कहा और सजा सुनायी : पंद्रह दिन के लिए स्कूल से बाहर।

जब स्वामीनाथन की बारी आयी तो उसने असहाय होकर चारों ओर देखा। राजम सामने की तीसरी बेंच पर बैठा बरबस बाहर की ओर देखने लगा। वह ब्लैकबोर्ड की तरफ ध्यान से देख रहा था तथा उसका सिर और गुलाबी कान स्वामीनाथन को दिखायी दे रहे थे। यह दृश्य असह्य था। स्वामीनाथन को बहुत तीव्रता से लग रहा था कि अभी उसका सिर घूमेगा और आंखें उसके ऊपर टिक जायेंगी। यदि ऐसा हुआ तो उसे लगा कि वह डेस्क से नीचे फर्श पर आ गिरेगा। तीन बेंच परे के गुलाबी कानों ने उससे बोलने की शक्ति छीन ली। काश! कोई उसकी आंखों और गुलाबी कानों के बीच ब्लैकबोर्ड लाकर रख देता।

हैडमास्टर उससे जो सवाल पूछ रहे थे, वह उसे सुनायी नहीं दे रहा था। हैडमास्टर की छड़ी जब उसके शरीर पर पड़ी तो वह होश में आया।

"तुम कल क्यों नहीं आये ?" हैडमास्टर ने ऊपर देखते हुए पूछा।

स्वामीनाथन के मन में पहले तो यह आया कि कह दे मैं कल अनुपस्थित नहीं था। लेकिन हाजिरी रजिस्टर तो था। 'नहीं—नहीं—मुझे पत्थर मारे गये। मैंने आने की कोशिश

की, लेकिन उन्होंने मेरी टोपी छीन कर जला दी। मैं आने लगा तो कई ताकतवर आदमियों ने मुझे पकड़ लिया।... जब एक महान सपूत जेल भेजा गया... मुझे आपको अंग्रेजों का गुलाम देखकर हैरानी हुई।... क्या उन्होंने अंगूठे नहीं काटे... ढाका की मलमल... गुलामों का गुलाम...।' इस तरह के कई असंबद्ध विचार उसके दिमाग में कौंधे और उस क्षण में भी उसने यह समझदारी दिखायी कि इनको शब्दों में प्रकट नहीं किया। उसने सिर-दर्द का बहाना करना चाहा लेकिन मुश्किल यह लगी कि उसके साथ बैठे लड़कों ने भी वही बहाना सोचा था। हैडमास्टर जोर से चिल्लाये, "तुम मुंह नहीं खोलोगे ?" उसने छड़ी जोर से स्वामीनाथन के दाएं कंधे पर मारी। स्वामीनाथन आंखों में आंसू भरे हैडमास्टर की ओर देखता रहा और बाएं हाथ से उस जगह को मसलता रहा जहां छड़ी लगी थी। हैडमास्टर जोर से चीखा, "अगर तुम मेरी तरफ टकटकी बांधकर देखते रहे और तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया तो मैं तुम्हें मार डालूंगा।"

"मैं...मैं... नहीं आ सका," हकलाते हुए स्वामीनाथन ने कहा।

"यह बात है ?" हैडमास्टर ने यह कहते हुए एक लड़के से कहा, "चपरासी को लेकर आओ।"

स्वामीनाथन ने सोचा, क्या यह चपरासी से मुझे पिटवायेगा! अगर उसने ऐसा किया तो मैं सबको कच्चा चबा जाऊंगा। इतने में चपरासी आ गया। हैडमास्टर ने उससे कहा, "बताओ, तुम डेस्क पर खड़े इस बदमाश के बारे में क्या जानते हो ?"

चपरासी स्वामीनाथन को खतरनाक ढंग से देखकर गुर्राया, "क्या मैंने तुम्हें शीशे तोड़ते नहीं देखा था... ?"

"मेरे कमरे के रोशनदानों के शीशे... ?" हैडमास्टर ने उत्साह से जोड़ा।

बचने का कोई बहाना नहीं था। स्वामीनाथन बेवकूफ-सा उनकी ओर टकटकी बांधे देखता रहा। तभी हैडमास्टर की छड़ी उसकी पीठ पर सटाक् से पड़ी। हैडमास्टर ने पूछा कि छोटे डाकू को इस पर क्या कहना है। डाकू को कुछ नहीं कहना था। यह सच था कि उसने कांच तोड़े थे। उन्होंने उसे देखा है। और कुछ कहने की जरूरत नहीं थी। वह अनायास विद्रोही बन गया था और उसने आरोप से मुकरने की जरूरत नहीं समझी। जब उसकी पीठ पर एक छड़ी पड़ी तो उसके मुंह से निकला, "मुझे मत मारिए, दर्द होता है।" इससे भड़ककर हैडमास्टर ने चार छड़ी और जड़ दी, फिर कहा, "बेंच पर खड़े रहो और बेवकूफ की तरह टुकुर-टुकुर ताकते रहो जब तक कि मैं तुम्हें स्कूल से निकालने की घोषणा नहीं करता।"

स्वामीनाथन का रोम-रोम छड़ी की मार से जल रहा था। उसका मन अचानक साहस से भर गया, ऐसा साहस जो घोर निराशा में से पैदा होता है। उसने आंखों से निकलने के लिए उतावले आंसुओं को रोका और बेंच से नीचे कूद पड़ा। किताबें उठाकर वह यह कहते हुए बाहर निकल गया, "मैं आपके गंदे स्कूल की परवाह नहीं करता हूं।"

तेरह

एम.सी.सी.

1

छह सप्ताह बाद राजम स्वामीनाथन के घर आया और घोषणा की, कि उसने स्वामीनाथन के सारे पापों को क्षमा कर दिया है। ये पाप उसकी राजनैतिक गतिविधियों से लेकर बोर्ड हाई स्कूल संस्कृति की नयी उपलब्धि तक कई प्रकार के थे। बोर्ड हाई स्कूल की संस्कृति से उसका मतलब था कुछ ढीला-ढालापन और बुद्धि के ह्रास से उत्पन्न बुद्धूपन।

अल्बर्ट मिशन स्कूल से नाटकीय ढंग से निकलने के बाद (हड़ताल के दूसरे दिन) स्वामीनाथन इतनी जिद पर आ गया कि कुछ दिन बाद पिताजी को उसे बोर्ड हाई स्कूल में ले जाकर दाखिल कराना पड़ा। शुरू में स्वामीनाथन को संदेह बना रहा कि इस स्कूल में वह खुश है या नहीं। किंतु उसमें सभी नये लड़कों जैसी जिज्ञासा और उत्साह बना रहा और उसे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि वह दूसरी फार्म-सी के आकर्षण का केंद्र बन गया है। उसके सभी नये सहपाठी, जिनमें बिल्कुल नये चेहरे थे, उससे मिलने तथा उसकी बातें सुनने के लिए अक्सर उसके आसपास जमा हो जाते थे। उसने अभी किसी को अपने गहरे दोस्त के रूप में नहीं चुना था। अभी भी वह मानता था कि अल्बर्ट मिशन स्कूल की मंडली टूटी नहीं है, यद्यपि जून में स्कूल के दोबारा खुलने के बाद मंडली का स्वरूप पहले जैसा नहीं रहा था। शंकर गायब हो गया था और लोगों का कहना था कि उसके पिता की बदली हो गयी है। सोमू को अगली कक्षा में नहीं लिया गया था और इसका मतलब था कि वह भी इस मंडली में नहीं था, क्योंकि यह मंडली की सदस्यता का अटल नियम था। मगर अगली कक्षा में आ गया था लेकिन वह तीन महीने देर से कक्षा में आया और उसे ढेर सारे डाक्टरी प्रमाणपत्र, स्पष्टीकरण और माफीनामे देने पड़े। अब वह सैंकड़ों परेशानियों से घिरा था, इसलिए वह पुराने दोस्तों के पास से अजनबियों की तरह निकल जाता था। जहां तक स्वामीनाथन का संबंध था केवल राजम और मणि अभी भी उससे जुड़े हुए थे। मणि उसे हर रोज मिलता था, लेकिन राजम उसके साथ उस दिन से नहीं बोला था, जिस दिन उसे उसकी राजनैतिक गतिविधियों का पता चला था।

उस शाम स्वामीनाथन घर के अंधेरे कोने में बैठा गत्ते के डिब्बे और चश्मे के कांच से कैमरा बनाने की कोशिश कर रहा था। सुराख कुछ बड़ा था और कांच को उसमें फंसाने में उसे काफी कठिनाई अनुभव हो रही थी। उसका पारा चढ़ने ही वाला था कि उसे एक परिचित आवाज सुनायी दी। वह दौड़कर दरवाजे के पास आया।

"हैलो, हैलो राजम," वह जोर से बोला, "तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि तुम आने वाले हो ?"

"तुम्हारे हाथ में क्या है ?" राजम ने पूछा।

"ओह!" स्वामीनाथन के मुंह से निकला, वह शरमा गया।

"लाओ, दिखाओ तो।"

"अरे यह कुछ नहीं है," स्वामीनाथन ने यह कहते हुए डिब्बा उसके हाथ में दे दिया। जब राजम उस गत्ते के डिब्बे के छेद से चारों ओर देख रहा था तो स्वामीनाथन बोला, "हमारी क्लास के अकबर अली ने कमाल का कैमरा बनाया है।"

"सच ? वह उसका क्या करता है ?"

"अरे उससे कई फोटो लिये हैं।"

"सच ? किस चीज के फोटो ?"

"उसने अभी दिखाये नहीं हैं, लेकिन शायद घरों, लोगों और पेड़ों के हैं।"

राजम दरवाजे की सीढ़ी पर बैठ गया और बोला, "यह अकबर अली कौन है ?"

"वह अच्छा मुसलमान लड़का है और हमारी क्लास में है।"

"बोर्ड हाई स्कूल में ?" उसकी आवाज में मजाक जैसा कुछ था। स्वामीनाथन ने इस सवाल की तरफ ध्यान न देकर अपनी बात जारी रखी, "उसके पास साइकिल है। वह बहुत अच्छा मुसलमान है। वह महमूद गजनी और औरंगज़ेब को गुंडे-लुटेरे कहता है।"

"तुम कैसे कह सकते हो कि वे ऐसे ही थे।"

"क्या उन्होंने हमारे मंदिरों को नहीं तोड़ा और हिंदुओं पर अत्याचार नहीं किये ?" क्या तुम भगवान सोमनाथ को भूल गये.... ?"

"हम ब्राह्मण ऐसी ही सजा के योग्य हैं, बल्कि इससे भी बड़ी," राजम बोला, "हमारे घर में पिताजी न तो शुक्ल पक्ष की परवाह करते हैं और न मरे हुए लोगों का वार्षिक श्राद्ध होता है।" वह बहस करने के मूड में था और स्वामीनाथन ने चुप रहना ही उचित समझा। राजम कहता गया, "मैं कहता हूं तुम्हारी यह सोच बोर्ड हाई स्कूल की वजह से बनी है।"

स्वामीनाथन को लगा कि सबसे अच्छा रास्ता उसकी हां में हां मिलाना होगा। वह बोला, "एक तरह से तुम ठीक ही कहते हो। मुझे बोर्ड हाई स्कूल अच्छा नहीं लगता।"

"तो तुम वहां गये क्यों ?"

"और कोई चारा नहीं था। तुमने देखा तो था कि हैडमास्टर कितना निर्दयी बन गया था। तुम मेरी जगह होते तो तुमने उसके मुंह पर लात जमा दी होती।"

इस चापलूसी से राजम का गुस्सा कम नहीं हुआ। वह बोला, "मैं तुम्हारी जगह होता तो राजनीति और हड़ताल के गंदे कामों से दूर रहता।" उसके पिता सरकारी नौकर थे और इसलिए उसका परिवार राजनीति के खिलाफ था।

स्वामीनाथन बोला, "तुम ठीक कहते हो। मुझे हड़ताल के दिन घर पर ही रहना चाहिए था।" इस विनम्रता ने राजम को छू लिया। उसने कहा कि वह स्वामीनाथन की पिछली सारी गलतियों और पापों को माफ कर सकता है और उसके बोर्ड स्कूल का छात्र होने का भी बुरा नहीं मानेगा। वे पहले की तरह दोस्त बने रह सकते हैं। फिर उसने पूछा, "क्रिकेट टीम के बारे में तुम्हारा क्या विचार है ?"

स्वामीनाथन ने क्रिकेट के बारे में यह नहीं सोचा था कि वह खुद भी खेल सकता है। उसे हॉब्स, ब्रेडमैन, दलीप आदि खिलाड़ियों की जानकारी थी और राजम की तरह उसे उनके स्कोर याद थे। राजम की तरह वह भी क्रिकेट के खिलाड़ियों की तस्वीरें काटकर एल्बम में चिपकाता था, हालांकि मन ही मन वह इन तस्वीरों की ज्यादा परवाह नहीं करता था—उसे सब तस्वीरें एक-सी लगती थीं। कभी-कभी उसे लगता था कि एल्बम के हर पन्ने पर एक ही तस्वीर चिपकी है।

"नहीं राजम, मुझे नहीं लगता कि मैं क्रिकेट खेल पाऊंगा। मुझे खेलना नहीं आता।"

"सब ऐसा ही सोचते हैं," राजम बोला, "मैं भी नहीं जानता, हालांकि मैं तस्वीरें और स्कोर जमा कर सकता हूं।"

स्वामीनाथन को यह सुनकर खुशी हुई। शायद हॉब्स भी बैट उठाने और घुमाने से पहले ऐसा ही शर्मीला रहा होगा और उसके मन में भी अपनी योग्यता के बारे में संदेह रहा होगा।

"हम कई टीमों को चुनौती दे सकते हैं—अपनी स्कूल टीम को भी। वे समझते हैं, उन्हें कोई नहीं हरा सकता," स्वामीनाथन बोला।

"क्या ? बोर्ड स्कूल के बुद्धू ऐसा समझते हैं ? हम उनका भुरता बना देंगे। हां !"

"हम इसे क्या नाम देंगे ?"

"तुम नहीं जानते ? इसका नाम एम.सी.सी. है," राजम बोला।

"क्या यह हॉब्स की टीम का नाम नहीं है ? हमने यह नाम रखा तो वे लोग हमें अदालत में घसीटेंगे।"

"कौन कहता है ? अगर कोई मुश्किल खड़ी हुई तो मैं जज के सामने कहूंगा कि एम.सी.सी. का मतलब है मालगुड़ी क्रिकेट क्लब।"

स्वामीनाथन को थोड़ी निराशा हुई। एम.सी.सी. नाम का रौब पड़ता था, लेकिन पूरा नाम कुछ कमजोर लग रहा था। "मेरा विचार है कि कोई और नाम अच्छा रहेगा, राजम।"

"तुम्हारा क्या सुझाव है ?"

"भई, मैं फ्रेंड्स इलेवन के पक्ष में हूं।"

"फ्रेंड्स इलेवन ?"

"या फिर जंपिंग स्टार्स', स्वागीनाथन बोला।

"ओह, यह तो बुरा नहीं है, बिल्कुल भी नहीं।"

"मेरा विचार है कि अपने को जंपिंग स्टार्स कहना बहुत शानदार रहेगा।"

राजम ने तुरंत अखबार की सुर्खी की कल्पना की, 'जंपिंग स्टार्स ने बोर्ड हाई स्कूल एकादश की धुनाई की'। "मेरा विचार है कि यह बहुत सुंदर नाम है," अपनी कल्पना से उत्तेजित होकर वह बोला। उसने कागज-पेंसिल निकालकर कहा, "आओ स्वामी, तुम्हारे दिमाग में जो नाम आयें उन्हें लिखाओ। हमें नामों की बड़ी सूची बनानी चाहिए, जिससे एक छांटा जा सके। हम 'जंपिंग स्टार्स' और 'एम.सी.सी.' को रेखांकित करेंगे और उन पर विशेष ध्यान देंगे। और बताओ।"

स्वामीनाथन कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला, "फ्रेंड्स इलेवन... जंपिंग स्टार्स ... फ्रेंड्स यूनियन..."

"फ्रेंड्स यूनियन यहां है," राजम ने सूची दिखाकर कहा।

स्वामीनाथन आगे बोला, "एक्सेलसियर्स..."

"यह है..."

"एक्सेलसियर्स यूनियन, चैंपियन इलेवन...," वह बड़ी देर रुका रहा।

"बस... ?" राजम बोला।

"नहीं, मणि होता तो वह कुछ और नाम बता सकता था... चैंपियन इलेवन..."

"इसे तो तुमने अभी-अभी लिखवाया है।"

"विक्टरी यूनियन इलेवन..."

"यह बहुत अच्छा नाम है, बल्कि यह बहुत ही अच्छा है। लोग हमसे डरेंगे।"

उसने सूची हाथ में लेकर बड़े संतोष के साथ सारे नाम पढ़े। पिछली रात वह कुछ नाम लिखने के लिए बहुत संघर्ष करता रहा था, किंतु सिर्फ 'फ्रेंड्स यूनियन' और 'एक्सेलसियर्स' नाम ही सोच सका था और फिर वह थक गया था। लेकिन स्वामीनाथन कितने नाम धड़ाधड़ बता गया। "स्वामी, क्या तुम कल शाम मिलोगे ? मैं मणि को भी पकड़ लाऊंगा। हमें नाम तो तय कर ही लेना चाहिए।"

कुछ देर बाद स्वामीनाथन ने पूछा, "सुनो। क्या तुम समझते हो कि टीम शुरू होने पर हमें सरकार को कुछ टैक्स-वैक्स देना पड़ेगा ?"

"लगता है सरकार हर चीज पर टैक्स लगाती है। मेरे पिता का वेतन लगभग पांच सौ रुपये है लेकिन सरकार दो सौ से ज्यादा मांगती है। बहरहाल, तुम्हें क्यों लगता है कि हमें टैक्स देना पड़ेगा ?"

"मेरा मतलब है हम टैक्स नहीं देंगे तो सरकार हमारी टीम को या उसके नाम को मान्यता नहीं देगी। कई और टीमें यह नाम रख सकती हैं। इससे बड़ी गड़बड़ी पैदा होगी।"

"मान लो कि हम दो नाम रखते हैं ?" राजम ने पूछा।

"यह नहीं होता।"

"मैं कई टीमों को जानता हूं जिनके दो नाम हैं। जब मैं बिशप वालर्स स्कूल में था तो हमारी एक क्रिकेट टीम थी जिसका नाम था.... मुझे अब नाम याद नहीं है। मेरा ख्याल है कि हम उसे 'क्रिकेट इलेवन' या 'वालर्स क्रिकेट इलेवन' कहते थे। एक नाम आम इस्तेमाल के लिए था और एक मैचों के लिए।"

"तुम्हारे वालर्स जैसी पैसे वाली टीम के लिए यह ठीक हो सकता है। लेकिन सोचो, अगर सरकार हमसे दो टीमों का टैक्स मांगे तो... ?"

राजम ने यहां आकर महसूस किया कि क्रिकेट टीम बनाना दुनिया की सबसे कठिन समस्या है। उसने सोचा था कि अपने अहाते के पास वाले मैदान में दर्जन भर लड़के जमा करने की जरूरत है और वे दुनिया को चुनौती दे सकते हैं। लेकिन यहां तो एक से एक मुश्किलें हैं, नाम से लेकर जो कि अद्वितीय होना चाहिए, सरकारी टैक्सों आदि तक। सरकार तो यह भी नहीं जानती कि कहां हस्तक्षेप करना चाहिए और कहां नहीं। थोड़ी देर के लिए उसके मन में गांधीजी के प्रति सहानुभूति पैदा हुई। बेशक वे इसीलिए सरकार के इतना खिलाफ हैं।

स्वामीनाथन कठिनाइयां खोजने में दक्ष लग रहा था। उसने कहा, "अगर हम टैक्स देना भी चाहें तो देंगे किसे ? राजा या वाइसराय को तो देंगे नहीं। सरकार कौन है ? कोई सरकार होने का बहाना करके पैसा खा जाये तो ? शायद तब उन्हें टैक्स मनीआर्डर से गवर्नर को भेजना पड़ेगा। यह देशद्रोह होगा। और फिर यह भी सवाल है कि कितनी राशि देनी होगी ?"

2

वे राजम के कमरे में उसकी मेज के गिर्द बैठे थे। मणि के सामने खेलों के सामान की दुकान मेसर्ज बिंस का सूची-पत्र था। उसने पढ़कर सुनाया, "जूनियर विलार्ड बैट्स, बढ़िया पक्की लकड़ी से बने—कैंब्रिज जूनियर ब्वायज़ एकादश द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले।"

"जरा मुझे दिखाओ...," राजम बोला। मेज पर झुककर बोला, "बैट अच्छा लगता है। स्वामी, देखो तो।" स्वामीनाथन ने गर्दन उठाकर देखा और कहा कि बैट तो अच्छा है, लेकिन उसके मुंह से इतना और निकल गया कि यह सूची-पत्र के दूसरे बैटों की तरह ही दिखता है। इस पर मणि ने बाएं हाथ से उसकी गर्दन पकड़कर दबायी ताकि वह तस्वीर को ध्यान से देखे, और बोला, "तुम क्रिकेट खिलाड़ी होने का दावा क्यों करते



हो जबकि तुम जूनियर विलार्ड और दूसरे बैटों के बीच अंतर नहीं जान सकते। तुम तो हमारी टीम में झाड़ू लगाने लायक भी नहीं हो।" इस झिड़की के बाद गर्दन को छोड़ दिया गया।

राजम ने पूछा, "स्वामी, तुम नहीं जानते कि सूची-पत्र वाला जिसे जूनियर विलार्ड कह रहा है वह क्या चीज है ? ऐसा लगता है यह जूनियर बैटों में रोल्स रॉयस है। क्या तुम रोल्स रॉयस और दूसरी कारों का फर्क नहीं जानते ?"

स्वामीनाथन ने अकड़कर कहा, "मैंने कभी नहीं कहा कि मैं रोल्स रॉयस और दूसरी कारों का अंतर नहीं जानता।"

"क्या अंतर है ?" राजम ने पूछा।

मणि ने हंसते हुए छेड़ा, "बताओ, बताओ। जानते हो तो बताते क्यों नहीं ?"

स्वामीनाथन बोला, "रोल्स की कीमत एक लाख रुपये है और दूसरी कारों की लगभग दस हजार रुपये। रोल्स का इंजिन चांदी का, और दूसरी कारों का लोहे का।"

"ओ, ओ...," राजम ने जोड़ा।

"रोल्स कभी परेशान नहीं करती जबकि दूसरी कारें हमेशा परेशान करती हैं। रोल्स का इंजिन कभी बंद नहीं होता, वह कभी शोर नहीं करती। दूसरी कारें शोर करती हैं।"

"तुम रोल्स रॉयस पर भाषण क्यों नहीं दे डालते ?" मणि ने कहा।

"स्वामी, मुझे खुशी है कि तुम रोल्स रॉयस के बारे में इतना कुछ जानते हो। लेकिन मैं शर्मिंदा हूं कि तुम्हें विलार्ड जूनियर के बारे में इतनी कम जानकारी है। जब मैं बिशप वालर्स में था तो हमारे पास करीब एक दर्जन विलार्ड जूनियर थे। वाह, क्या बैट है! इनमें असली कमानियां होती हैं। इसलिए गेंद छूते ही उड़ने लगती है। हैंडल के गिर्द बारीक रेशम की डोरी होती है। क्या तुम ऐसा बैट दिखा सकते हो जिसमें रेशम की डोरी और कमानियां हों ?"

थोड़ी देर रुकने के बाद राजम बोला, "स्वामी, इसे नोट कर लो।" स्वामी ने कागज पर उसे नोट कर लिया हालांकि वह उस शब्द को ठीक-ठीक नहीं लिख सका।

फिर पूछा, "कितने ?"

"लिखो तीन, क्यों मणि, काफी होंगे न ?"

"तीन पर पैसे बरबाद करने का क्या फायदा ? दो काफी होंगे।"

"फर्ज करो कि एक बैट खेल के दौरान ही टूट गया," राजम ने कहा।

"क्या तुम यह मानकर चल रहे हो कि अपने विरोधियों को भी बैट दोगे ? उन्हें अपने बैट लेकर आना पड़ेगा। यह बात पहले ही साफ बता देनी होगी।"

"फिर भी अगर हमारा बैट बीच में टूट गया तो हमें खेल बंद करना पड़ेगा।"

"राजम, अगर तुम पैसा बरबाद न करना चाहो तो दो काफी होंगे।"

राजम बहुत उत्साहित था। वह अपनी कुर्सी छोड़ मणि की कुर्सी के बाजू पर आ

बैठा और सूची-पत्र में क्रिकेट के सामान की तस्वीरों को ध्यान से देखने लगा। हालांकि स्वामीनाथन कुछ-कुछ अविश्वासी लग रहा था, लेकिन उसमें भी उत्साह भर गया और वह मणि की कुर्सी के दूसरे बाजू पर बैठ गया। तीनों ने क्रिकेट बाल, बैट, नेट आदि की चमकीली तस्वीरों पर नजरें गड़ा दीं।

करीब एक घंटे में उन्होंने सूची-पत्र से अपनी टीम की जरूरतें चुन लीं और फिर सबसे मुश्किल काम रहा मैसर्ज बिंस को समान के आर्डर का पत्र। मात्र सौजन्य के नाते राजम ने पत्र लिखने का काम मणि को सौंपा, लेकिन उसने मना कर दिया। विरोध के बावजूद स्वामीनाथन को यह काम अपने हाथ में लेना पड़ा और वह बड़ी देर तक पेंसिल चबाता बैठा रहा, किंतु एक भी शब्द नहीं लिख पाया। उसकी सबसे बड़ी मुश्किल अंग्रेजी के स्पैलिंग की थी और जितना वह ठीक लिखने की कोशिश करता उतनी ही गड़बड़ उससे हो जाती। अंत में स्पैलिंग के बारे में सोचते-सोचते इतनी देर बैठा रहा कि दि और एंड जैसे मामूली शब्दों के स्पैलिंग में भी उसे संदेह होने लगा। आखिर राजम को यह काम करना पड़ा और आधे घंटे बाद उसने निम्नलिखित पत्र मेज पर रखा:

प्रेषक : एम.सी.सी. (तथा विक्टरी यूनियन इलेवन),
मालगुड़ी

सेवा में,

मैसर्ज बिंस
स्पोर्ट्समैन
माऊंट रोड,
मद्रास

प्रिय महोदय,

हमारी टीम के लिए दो जूनियर विलार्ड बैट, छह बाल, विकटें और दूसरा सामान तुरंत भेजें। यह हमें तत्काल चाहिए। पैसे बाद में भेज दिये जायेंगे। घबराइयेगा मत। कृपया शीघ्र कार्रवाई करें।

आपका आज्ञाकारी,
कैप्टेन राजम (कप्तान)

इस पत्र को स्वामीनाथन का आशीर्वाद तो मिला लेकिन मणि ने कुछ संदेह व्यक्त किये। उसने जानना चाहा कि अजनबी को लिखे पत्र में संबोधन के साथ 'प्रिय' शब्द लगाना चाहिए या नहीं, "बिंस को प्रिय महोदय कैसे कह सकते हैं। तुम्हें सिर्फ महोदय कहना चाहिए।"

राजम का स्पष्टीकरण था, "मैं 'महोदय' नहीं कहूंगा। यह तो क्लर्क कहते हैं। मैं बिंस का क्लर्क नहीं हूं। मैं उसे 'महोदय' नहीं कह सकता।"

इस प्रकार यह पत्र जैसा था, वैसा ही भेज दिया गया।

इस जी-तोड़ काम के बाद वे राहत की सांस लेकर सुस्ताने बैठे। तभी डाकिया एक पत्र राजम को दे गया। राजम ने पत्र पढ़ा तो चिल्ला उठा, "कोई बता सकता है, यह किसका है ?"

"बिंस...।"

"बेवकूफ। यह हमारे हैडमास्टर का होगा।"

"कोई और..."

"जे.बी. हॉब्स।"

"शंकर का है," राजम ने खुशी से भरकर कहा।

"शंकर! हम तो उस पुराने चोर को लगभग भूल ही गये थे।"

स्वामी और मणि ने राजम के हाथ से कार्ड छीन लिया और पढ़ा :

प्रिय मित्र,

मैं यहां पढ़ रहा हूं, क्योंकि मेरे पिता यहां आ गये हैं। मेरी मां भी यहीं है। हम सब यहां हैं और अब यहीं रहेंगे। मैं ठीक हूं। आशा है तुम लोग भी कुशल होगे। यहां बहुत गर्मी पड़ रही है। मुझे तीन दिन बुखार रहा और दवाई पीनी पड़ी। क्या स्वामी और मणि ठीक-ठाक हैं ? यहां बहुत गरमी है। मैं अब क्रिकेट खेलने लगा हूं। और ज्यादा नहीं लिख सकूंगा।

सप्रेम,

तुम्हारा प्रिय मित्र,
शंकर

पुनश्च : मुझे भूलना मत।

शं.

पत्र ने सबको बहुत प्रभावित किया। उन्होंने तुरंत उत्तर देने का फैसला किया।

एक घंटे में तीन पत्र तैयार हो गये। मणि ने शंकर के पत्र की ज्यों की त्यों नकल कर ली। स्वामीनाथन और राजम ने लगभग एक जैसे पत्र लिखे। उन्होंने लिखा कि ईश्वर की कृपा से वे कुशल हैं। उन्हें विश्वास है कि शंकर पास हो जायेगा और वह कुशलतापूर्वक होगा। इसके बाद उन्होंने अपनी क्रिकेट टीम के बारे में बहुत सी बातें लिखीं और यह भी कहा कि शंकर की टीम उनसे मैच खेल सकती है।

तीनों पत्र टिकट लगे लिफाफे में डाले गये और लिफाफा बंद कर दिया गया। तभी उन्हें शंकर का पता जानने की जरूरत महसूस हुई। उन्होंने शंकर के पोस्टकार्ड को उलट-पलट कर देखा। कहीं एक शब्द नहीं, यहां तक कि शहर का नाम भी नहीं। डाकखाने की मोहर से जानने की कोशिश की, लेकिन काले-तिरछे धब्बे के कारण कुछ पढ़ा नहीं जा सका।

3

एम.सी.सी. और उसके संगठनकर्ताओं को अपने महत्व का तब पक्का प्रमाण मिल गया जब कप्तान, एम.सी.सी., मालगुड़ी के नाम बिंस का पत्र आया। उस खूबसूरत लिफाफे को छूने और हाथ में लेकर उलट-पलटकर देखने का अपना ही आनंद था। बिंस की फर्म पहली संस्था थी जिसने एम.सी.सी. को मान्यता दी थी। राजम ने कसम खायी कि अपनी टीम की सारी जरूरत की चीजें उस महान फर्म से ही खरीदेगा। इस पत्र के तीन पहलू ऐसे थे जिन्होंने राजम और उसके मित्रों को खुशी से भर दिया : (1) सरकार के डाकघर ने उनकी टीम को मान्यता दी, इसका प्रमाण यह था कि कप्तान के नाम लिखा पत्र तत्काल उसके पास पहुंचा दिया; (2) मद्रास की महान फर्म बिंस ने उन्हें मान्यता दी, यह इस बात से सिद्ध होता है कि उसने कार्ड पर नहीं, टाइप किया हुआ जवाब लिफाफे में भेजा; (3) बिंस ने एक अलग लिफाफे में चार आने की टिकट लगाकर अपना एक बड़ा सूची-पत्र भेजा।

पत्र में कप्तान को सूचित किया गया था कि मैसर्ज बिंस पत्र के लिए उनका धन्यवाद करते हैं और वे अनुगृहीत होंगे यदि वे आर्डर की 25 प्रतिशत राशि अग्रिम प्रेषित करें। शेष राशि का भुगतान वे वी.पी.पी. छुड़ाते समय कर सकते हैं।

पत्र का अर्थ निकालने के लिए तीन-तीन मस्तिष्क जूझते रहे। मुश्किल यह थी कि वे यह नहीं समझ पा रहे थे कि फर्म माल भेज रही है या नहीं। मणि ने वायदा किया कि वह पत्र का अर्थ निकाल सकता है अगर कोई उसे 'अनुगृहीत' शब्द का अर्थ बता दे। जब उन्होंने शब्दकोश खोलकर उसे अर्थ पढ़कर सुना दिया तब भी उसे इस शब्द के अर्थ की जानकारी नहीं हुई। उसे लगा कि यह एक फालतू शब्द है जिसका कोई अर्थ नहीं। राजम बोला, "एक बात साफ है। बिंस ने हमें पत्र के लिए धन्यवाद दिया है। अतः इसका मतलब यह नहीं हो सकता कि उन्होंने सामान भेजने से मना किया है।" स्वामीनाथन उससे सहमत था, "यह सही है। अगर उन्हें सामान नहीं भेजना होता तो क्या वे धन्यवाद करते ? वे तुम्हें गाली देते।" उसने पत्र को यह सुनिश्चित करने के लिए दोबारा पढ़ा कि धन्यवाद के बारे में कोई संदेह नहीं है।

"बेवकूफ ने यह शब्द इस्तेमाल ही क्यों किया है ?" मणि ने 'अनुगृहीत' शब्द के बारे में कहा, जिसका उच्चारण उससे ठीक-ठीक नहीं हो रहा था। "इसका कोई मतलब नहीं है। क्या वह हमें बेवकूफ बना रहा है ?"

"उसने 25 प्रतिशत के बारे में कुछ कहा है। काश! मैं जानता इसका क्या मतलब है," राजम बोला।

स्वामीनाथन अपने को नहीं रोक सका, "मैं कहता हूं राजम, मुझे हैरानी है कि यह शब्द तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा है। तुम्हें तो पिछली परीक्षा में 60 प्रतिशत अंक

मिले थे।"

"तुम्हें अक्ल भी है ? उसका इससे क्या संबंध है ? बी.ए. पास भी इसे नहीं समझ सकता।"

अंत में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पत्र उन्हें गलती से भेजा गया था। जहां तक उनकी जानकारी है उनके पत्र में ऐसा कुछ नहीं कहा गया था कि बिंस को 'अनुगृहीत', 'प्रेषित' और '25 प्रतिशत' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ता। यह तो नहीं हो सकता कि बिंस जैसी महान फर्म उनका मजाक उड़ा रही हो। स्वामीनाथन ने 'कप्तान, एम.सी.सी.' संबोधन की तरफ इशारा किया लेकिन उसे बताया गया कि यह भी गलती का एक हिस्सा है।

इस पत्र को एक अग्रेषण पत्र के साथ लिफाफे में डालकर भेज दिया गया। अग्रेषण-पत्र में लिखा गया था:

"हमें खेद है कि आपने किसी दूसरे का पत्र हमें भेज दिया। हम इस पत्र को लौटा रहे हैं। हमारा सामान हमें तुरंत भेजें।"

4

एम.सी.सी. के सदस्य आशावादी थे। यद्यपि उनके दूसरे पत्र का उत्तर अभी नहीं मिला था, उन्हें हर डाक के साथ आशा बंधती कि उनका सामान आ जायेगा। दस दिन बाद उन्होंने सोचा कि असली बैट आदि आने तक उन्हें जो भी मिले उससे खेलना शुरू कर देना चाहिए। देवदार लकड़ी के एक बक्से के निचले हिस्से से उनके तीन अच्छे बैट बन गये और राजम ने पिता के क्लब से तीन पुराने टेनिस के बाल प्राप्त कर लिए। मटर ने चार असली विकटें देने का वायदा किया। उसे विश्वास था कि विकटें घर में ही कहीं पर हैं। राजम के बंगले के निकट एक साफ जमीन का टुकड़ा पिच का काम देगा। सब कुछ तैयार था। अगर बिंस फर्म एम.सी.सी. का खास सामान बनाने में एक महीना भी और ले ले (जिसकी उन्हें धुंधली सी संभावना लग रही थी) तो भी अभ्यास शुरू करने में कोई देरी नहीं होनी चाहिए। जब तक असली बैट, बाल आयेंगे, वे मैच खेलने के लिए तैयार होंगे।

राजम ने अपनी क्लास के कुछ लड़कों को चुना था जो उसके विचार से एम.सी.सी. के सदस्य बनने के योग्य थे।

पहले दिन शाम पांच बजे एम.सी.सी. के सारे सदस्य जमा हो गये। मटर नहीं आया था और राजम बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने असली विकटें लाने का वायदा किया था। आधे घंटे से ज्यादा बीत चुका था और मटर का कहीं पता न था।

अंत में दूर उसकी ठिगनी काया दिखायी दी। राजम के दिल में उसे देखकर

धुकधुकी होने लगी। उसने आंखें फाड़कर देखना चाहा कि उसके पास कुछ है या नहीं। लेकिन चूंकि वह पश्चिम दिशा से आ रहा था उस पर धूप की चमक पड़ रही थी। सभी बारह लड़कों ने हाथ माथे पर रखकर उसे देखा। कुछ ने कहा कि उसके हाथ में बंडल है जबकि कुछ का कहना था कि वह खाली हाथ हिलाता हुआ आ रहा है।

जब वह पास आया तो राजम ने पूछा, "तुमने हमें बताया क्यों नहीं कि तुम्हारे पास विकटें नहीं हैं ?"

"मेरे पास हैं," मटर बोला। "मैं कल लाऊंगा। मुझे विश्वास है कि पिताजी जानते हैं कि वे कहां रखी हैं।"

"तुमने हमसे इतना इंतजार कराया। तुमने पहले आकर क्यों नहीं बताया कि तुम्हें विकटें नहीं मिलीं ?"

"मैं कहता हूं मैं कई घंटे उन्हें ढूंढ़ता रहा। मैं विकटें ढूंढ़ने और यहां आकर तुम्हें बताने का काम एक साथ कैसे कर सकता था ?"

टीम के सदस्यों पर निराशा की बदली छा गयी। बीस घंटे से अधिक समय से हर लड़का सपना देख रहा था कि कैसे वह बैट घुमायेगा और बाल फेंकेगा। उनका सपना पूरा भी हो जाता अगर मटर दुष्टता न करता। सबने उसकी तरफ नाराजगी से देखा। वह अकेला पड़ गया। राजम ने जब लकड़ी के तख्तों के बैट और टेनिस बाल जमीन पर बेकार पड़े देखे तो उसका मन रोने को हुआ। अगर विकटें आ जातीं तो यह कितनी बढ़िया शाम होती।

इस सारी निराशा के बीच किसी ने यह सुझाव देकर आशा की किरण पैदा की, कि वे राजम के बंगले के अहाते की दीवार को अस्थायी विकेट के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

दीवार के एक हिस्से पर कोयले से निशाना लगाया गया और कप्तान ने फील्ड जमाकर खुद पहले बैटिंग करने का फैसला किया। स्वामीनाथन ने गेंद फेंकने का काम संभाला। उसने टेनिस के बाल को हाथ में पकड़ा, कुछ कदम चला और तब फेंका। राजम ने बैट घुमाया लेकिन चूक गया। बाल दीवार के साथ कोयले के निशान के ठीक नीचे जा लगा। राजम पहली ही गेंद पर 'बोल्ड' हो गया था। खिलाड़ी खुशी में जोर से चिल्लाये। वे स्वामीनाथन के गिर्द उससे हाथ मिलाने और शाबासी देने के लिए इकट्ठे हो गये। उसे उसी वक्त 'टेट' का खिताब दिया गया।

चौदह

दादी की नासमझी

1

बोर्ड हाई स्कूल में काम बहुत था। अल्बर्ट मिशन में जो होमवर्क दिया जाता था वह बोर्ड स्कूल के ढेर सारे होमवर्क की तुलना में कुछं नहीं था। हर अध्यापक समझता था कि उसका विषय ही लड़कों को पढ़ना चाहिए। गणित में छह सवाल, चार पन्नों का सुलेख, बीसियों कठिन शब्दों के शब्दकोश से अर्थ, दो मानचित्र, तमिल कविता के पांच पद्यांश, यह था हर रोज का सामान्य होमवर्क। कभी-कभी स्वामीनाथन को लगता था कि उसे पुराना स्कूल नहीं छोड़ना चाहिए था। यहां के अध्यापक बहुत सख्त थे। हर रोज नियमित घंटों के बाद सप्ताह में तीन बार व्यायाम, स्काउट कक्षाएं, अनिवार्य खेल, आदि। एक भी क्लास छोड़ने का मतलब था अगले दिन आधा दर्जन छड़ियां। झुर्रीदार चेहरे और चश्मे वाला खूसट हैडमास्टर बहुत डरावना लगता था, विशेषकर जब वह चीखती हुई आवाज में बोलता था। उसके विपरीत अल्बर्ट मिशन स्कूल के हैडमास्टर, सारी कमियों के बावजूद एक शानदार आदमी थे।

इस कठोर जीवन और अनुशासन के कारण जिंदगी में आराम का कोई अवसर न रहा। स्वामीनाथन तड़के उठता, जल्दी-जल्दी होमवर्क पूरा करके उठता तो उसके पास मुश्किल से इतना वक्त होता कि भोजन करके पहली घंटी तक स्कूल पहुंच सके। हर रोज जब वह मार्किट रोड वाली कपड़े की दुकान से गुजरता तो पहली घंटी सुनायी देती, और जैसे ही वह हांफते हुए कक्षा में दाखिल होता, दूसरी घंटी बज जाती। घंटी की आवाज भी अल्बर्ट मिशन स्कूल की घंटी की तरह मधुर न थी। यह कुछ मरियल पतली आवाज थी। लेकिन जल्दी ही स्वामीनाथन को इसकी आदत पड़ गयी।

दोपहर बाद का एक घंटा छोड़कर उसे साढ़े चार बजे तक अपनी सीट के साथ चिपके रहना पड़ता। आखिरी बेंच पर बैठने की आदत छूट गयी थी (संभवतः इसलिए कि अब उसे मणि का साथ प्राप्त नहीं था)। वह दूसरी पंक्ति में बैठता था और ऊल-जुलूल कामों में समय नष्ट करने की सख्त मनाही थी। वहां बैठना अध्यापक की ठीक नाक के नीचे बैठना था। जब साढ़े चार बजे की घंटी बजती थी तो स्वामीनाथन पेंसिल जेब

में रखकर दुखती उंगलियों को सीधा करता था। साढ़े चार बजे की घंटी में कोई विशेष रोमांच न था। खुशी से चिल्लाते हुए क्लास से बाहर भागना नहीं होता था। वहां से व्यायाम के मैदान में जाकर गंभीरता से पंक्ति में खड़ा होना पड़ता और पौने घंटे तक व्यायाम-शिक्षक इस तरह व्यवहार करता जैसे लड़के उसके पालतू कुत्ते हों। वह दाएं-बाएं मार्च कराता, सीधे खड़े रहने को कहता, बाजू घुमाने को कहता, हारिजेंटल या पैरलल बार पर चलने को कहता, चाहे किसी को अच्छा लगे या नहीं या उसे ऐसा करना आये या नहीं। व्यायाम-शिक्षक को क्या, चाहे कोई हारिजेंटल बार पर संतुलन खोकर अपनी खोपड़ी ही तुड़वा ले।

उसके बाद घर भाग कर कॉफी पीओ, किताबें फेंको और क्रिकेट के मैदान की तरफ भागो, जो काफी दूर था। झुलसी हुई घास से अधढंके तिरछी किरणों से चमकते, धूल के झीने बादल से घिरे इधर-उधर दौड़ते-भागते खिलाड़ियों की चीख-चिल्लाहट से जीवंत धूसर खेतों के दृश्य से मुग्ध होते हुए, आधा दौड़ते और आधा चलते वह लंबी दूरी तय करो। बैट से बाल को हिट करते समय जो आवाज निकलती है उसमें कैसा संगीत होता है! फिर जब आप लाली एक्सटेंशन को जाने वाली सड़क पकड़ते हैं तो सूरज पर नजर जाती है जो क्षितिज पर लाल-तपे सिक्के की तरह दिखायी दे रहा होता है। आप उम्मीद करते हैं कि सूरज अभी डूबे नहीं। लेकिन जब तक आप क्रिकेट के मैदान में पहुंचते हैं, वह डूब जाता है और आसमान में सिर्फ रंग और रोशनी का फीका पड़ता धब्बा रह जाता है। साये प्रकट होने लगते हैं और इधर-उधर नगरपालिका की एक-दो लालटेनें जल उठती हैं। आपको अब भी उम्मीद होती है कि अच्छे खेल के लिए अभी समय है। किंतु करीब आधा फर्लांग दूर से आप देखते हैं कि खिलाड़ी लापरवाही से मैदान में बैठे हैं। कोई खिलाड़ी थका-थका सा बैट घुमा रहा है और गेंद फेंकने वाले तथा फील्डिंग करने वाले भी थकान से चूर लगते हैं—ऐसी थकान जो धूप भरी शाम में खूब मेहनत के बाद आती है।

निराशा की पीड़ा के अतिरिक्त राजम का गुस्सा भी सहना पड़ता है। वह समझता ही नहीं कि स्वामी को कितने झंझटों से गुजरना पड़ता है।

"स्वामी, तुम आज फिर देर से आये ?"

"कमबख्त व्यायाम की क्लास थी।"

"अरे, गोली मारो व्यायाम क्लास और स्काउट क्लास को। तुम्हें जल्दी आना चाहिए।"

"क्या करूं, राजम! मेरे बस में नहीं है।"

"मैं कुछ नहीं जानता। तुम्हारे पास हमेशा कोई न कोई बहाना होता है। जब से नये बैट, बाल आदि चीजें आयी हैं, तुम मुश्किल से चार बार खेले होगे।"

दूसरे खिलाड़ी बहुत थक चुके होते, इसलिए स्वामीनाथन की बल्लेबाजी के समय टीम के सबसे छोटे सदस्य को गेंदबाजी पर लगाया जाता (यह पांचवें स्टैंडर्ड का आज्ञाकारी

और होनहार लड़का था, जिसे टीम में इसलिए लिया गया था कि उसने राजम को कई दिनों तक मक्खन लगाया था)। जब स्वामीनाथन बैटिंग से थक जाता था तो उस लड़के के हाथ बैट थमाकर खुद गेंद फेंकने लगता था और चूंकि वह टीम का 'टेट' था, छोटा लड़का उसके सामने बहुत घबराया रहता था। स्वामीनाथन कुछ देर बाद फिर बैटिंग करने लगता था और थोड़ी देर बाद फिर गेंद फेंकने लगता था। यह सिलसिला तब तक चलता था, जब तक धुंधलके में गेंद को देखने में कठिनाई न होने लगती और गेंद उठाने वाला गेंद के बजाय मैदान में किसी काले धब्बे के पीछे न भागने लगता। यहां पहुंच कर गेंद गुम होने की अफवाह फैलती और काफी हलचल होती। इधर-उधर बैठे-लेटे खिलाड़ी गेंद ढूंढ़ने लगते और अंत में गेंद को ढूंढ़ लिया जाता। इसके बाद कप्तान आदेश देकर खेल बंद कर देता। उस दिन का खेल समाप्त होता और खिलाड़ी जल्दी ही अंधेरे में गायब हो जाते। स्वामीनाथन राजम और मणि के साथ वहां रह जाता और राजम के घर के अहाते की दीवार पर बैठे तीनों उस दिन के खेल और खिलाड़ियों के संबंध में विचार-विमर्श करते। किस खिलाड़ी में कितना सुधार और कितनी खराबी आयी, इस पर तब तक चर्चा होती जब तक अंधेरा नहीं हो जाता और राजम का चपरासी उसे यह बताने नहीं आ जाता कि ट्यूशन मास्टर आ गया है।

2

एक शाम क्रिकेट मैदान से लौटकर जब स्वामीनाथन ग्रोव स्ट्रीट चौराहे पर मणि से विदा लेकर घर की तरफ जा रहा था तो उसकी अंतरात्मा उसे कोसने लगी। शाम को एक छोटी सी घटना हो गयी थी। स्कूल से घर पहुंचकर वह पुस्तकें फेंक क्रिकेट-मैदान की तरफ भागने ही वाला था कि दादी के कमरे से आवाज आयी, "स्वामी, ओ स्वामी! जरा इधर तो आओ।"

"नहीं," वह हमेशा की तरह चिल्लाया और दूसरे ही क्षण रसोईघर में पहुंचकर जल्दी-जल्दी गिलास से कॉफी पीने लगा। दादी की कांपती हुई चिड़चिड़ाहट भरी आवाज उसे अब भी सुनायी दे रही थी। उस कमजोर सी आवाज में ऐसा कुछ था कि स्वामीनाथन का दिल पसीज गया। बेचारी एक जगह बैठी दूसरों को बुलाती रहती है और घर के लोग हैं कि उसकी तरफ कान ही नहीं देते। कॉफी खत्म होने के बाद वह दादी के पास गया और पूछा, "क्या चाहिए, दादी ?"

दादी ने सिर उठाकर देखा और उसे पास बैठने को कहा। इस पर स्वामीनाथन का मूड बिगड़ गया और एक क्षण पहले उसमें दादी के प्रति जो सहानुभूति जागी थी वह गायब हो गयी। वह बोला, "तुम जो कुछ कहना चाहती हो जल्दी से कह दो वरना, यह मत समझना कि मैं कोई बेवकूफ हूं।"

वह बोली, "मैं तुम्हें छह पाई देती हूं। तीन तुम्हारे लिए और तीन के मेरे लिए नींबू

ले आना।" उसने अपनी बात को धीरे और चालाकी से रखने की कोशिश की, क्योंकि वह जानती थी, पोता क्या जवाब देगा। जब उसने उसे बैठ जाने को कहा था तो यह उसकी पहली चाल थी।

'हां या 'ना' कहने के शिष्टाचार में पड़े बिना स्वामीनाथन ने पैसे ले लिये। दादी बोली, "दस तक गिनती खत्म होने से पहले-पहले तुम्हें वापस आना होगा।" समय की इस पाबंदी ने उसे चिढ़ा दिया। उसने सिक्के फेंककर कहा, "इतनी जल्दी है तो अपने आप जाकर ले आओ।" साढ़े पांच बज रहे थे और दिन डूबने से पहले वह क्रिकेट के मैदान में पहुंच जाना चाहता था। वह दादी को घूरकर देखता रहा जैसे वह उसे दो में से एक बात चुनने के लिए कह रहा हो कि या तो वह नींबू खेल से उसके लौटने पर



ले या उसका विचार ही छोड़ दे। वह बोली, "मेरे पेट में जोर का दर्द हो रहा है, भाग कर जाओ और नींबू लाकर मुझे दे जाओ।" स्वामीनाथन उसकी बात सुनने के लिए नहीं रुका।

किंतु अब खेल का सारा उत्साह और खुशी समाप्त होने और सबको 'गुड नाइट' कहने के बाद ग्रोव और विनायक मुदाली स्ट्रीट के चौराहे पर उसे अपनी अंतरात्मा का सामना करना पड़ा। उसे दादी की याद आयी और उसने अपने को अपराधी अनुभव किया। शायद इस समय भी वह दर्द से तड़प रही होगी। उसे दादी की सजल आंखें तथा ऊपर उठा करुण चेहरा याद आया और उसके दिल में टीस उठी। उसने अपने को चोर, डरपोक, कृतघ्न और पत्थर-दिल कहकर कोसा।

इसी आत्म-ग्लानि की मन:स्थिति में वह घर पहुंचा। वह धीरे से दादी के बिस्तर के पास बैठकर उसे देखता रहा। यह उसकी आदत के विपरीत था। हमेशा वह शाम को लौट कर सीधा रसोई की ओर भागता था और रसोइये को परेशान करता था। आज उसे भूख की परवाह नहीं थी।

दादी के गलियारे में रोशनी न थी। सिर्फ हाल की बत्ती से रोशनी का एक तीर वहां गिरता था। आधे अंधेरे में वह दादी का चेहरा साफ-साफ नहीं देख पाया। वह शांत लेटी हुई थी। स्वामीनाथन यह सोचकर भयभीत हो गया कि कहीं वह पेट दर्द के कारण मर ही न गयी हो। धीमे स्वर में उसने पूछा, "दीदी, तुम्हारा दर्द कैसा है ?" दादी में हरकत हुई, उसने आंखों खोलीं और बोली, "स्वामी तुम आ गये ? खाना खा लिया ?"

"अभी नहीं। दादी, तुम्हारे पेट का दर्द कैसा है ?"

"ठीक है, ठीक है।"

मन की सारी शक्ति समेटकर उसने बेहिचक पूछा, "तुम्हें नींबू मिल गया था ?" वह यह बात जानना चाहता था। इसके बारे में वह सचमुच चिंतित था। दादी ने उसके सवाल का तुरंत जवाब दिया, लेकिन स्वामीनाथन को लगा कि इस बीच बहुत लंबा भयानक समय बीता है जिसमें कुछ भी हो सकता था। वह कुछ भी कह सकती थी। उसे झिड़क सकती थी। कसम खा सकती थी कि वह उसके साथ कोई संबंध नहीं रखेगी। वह नाराजगी प्रकट करके कह सकती थी कि अगर वह वक्त पर नींबू ले आया होता तो वह बच जाती और अब वह कुछ ही क्षणों में मरने वाली है। लेकिन उसने इतना ही कहा, "अच्छा हुआ तुम नहीं गये। तुम्हारी मां ने एक दर्जन नींबू रसोई में रखे थे।"

स्वामीनाथन को यह सुनकर बेहद खुशी हुई और इस खुशी के मूड को प्रकट करने के लिए उसने कहा, "दादी, तुम जानती हो मेरा नाम क्या है ? मैं टेट हूं।"

"क्या ?"

"टेट।"

"टेट क्या होता है ?" उसने भोलेपन से पूछा। स्वामीनाथन को घोर निराशा हुई।

दादी तो उसके नये खिताब के बारे में कुछ भी नहीं जानती और बताने पर भी वह उसके महत्व को नहीं समझेगी। और दिन होता तो वह चीख कर उसे बताता। किंतु आज वह पश्चात्ताप के मूड में था, इसलिए मीठे स्वर में बोला, "तुम्हारा मतलब है तुम टेट को नहीं जानती ?"

"नहीं, मैं नहीं जानती। तुम क्या कहना चाहते हो?"

"टेट, महान क्रिकेट खिलाड़ी, दुनिया का सबसे महान गेंदबाज। उम्मीद है तुम यह तो जानती होगी कि क्रिकेट क्या चीज है।"

"क्या है ?" दादी ने प्रश्न किया। स्वामीनाथन दादी की इस नासमझी पर हक्का-बक्का रह गया। बोला, "दादी, क्या तुम सचमुच यह कहना चाहती हो कि तुम क्रिकेट के बारे में कुछ नहीं जानती, या तुम मुझे बेवकूफ बना रही हो ?"

"मैं नहीं जानती तुम क्या कह रहे हो।"

"तुम क्या कह रहे हो, तुम क्या कह रहे हो, रटना बंद करो, दादी। पता नहीं तुम्हारे वक्त के लड़के और आदमी शाम को क्या काम करते थे। मुझे लगता है वे चौबीस घंटे धर्म-कर्म में लगे रहते होंगे।"

क्षण भर वह सोचता रहा। दादी तो अज्ञान के अंधकार में डूबी हुई है और उसका फर्ज है कि वह उसे इस अंधकार से निकाले। उसने दादी को छोटा सा भाषण दिया, जिसमें उसने क्रिकेट के खेल के सिद्धांत, आदर्श और दर्शन के अलावा दुनिया के मशहूर क्रिकेट खिलाड़ियों के नाम भी बताये। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह पूछता रहा कि वह समझी या नहीं। दादी सिर हिलाती रही हालांकि वह उसकी तीन प्रतिशत बात भी नहीं समझ पा रही थी। भाषण के अंत में उसने एम.सी.सी. के इतिहास और उसकी संभावनाओं पर प्रकाश डाला, "राजम न होता तो पता नहीं हम कहां होते ? उसने टीम पर सैंकड़ों रुपये खर्च किये हैं। बैट-बाल खरीदना मजाक नहीं है। उसके पास बहुत सारे रुपये हैं। हमारी टीम की जानकारी सरकार को भी है। तुम चाहो तो एम.सी.सी. को पत्र लिख सकती हो, तुरंत उसे मिल जायेगा। तुम देखना, हम मालगुड़ी के सारे कप जीतेंगे और एक दिन हम मद्रास के खिलाड़ियों को भी बता देंगे कि क्रिकेट का खेल क्या होता है।" फिर उसने एक बेहद महत्वपूर्ण बात कही, "यह मत समझ लेना कि हमारी टीम में हर ऐरा-गैरा शामिल हो सकता है।"

उसके पिता छोटे बच्चे को गोद में उठाये पीछे खड़े थे। वे बोले, "यह क्या भाषण दे रहे हो ?"

स्वामीनाथन ने पिता को नहीं देखा था, अत: वह कुछ घबराकर बोला, "कुछ नहीं, पिताजी, कुछ नहीं।"

"अरे, मुझे भी तो बताओ।"

"कुछ नहीं..., दादी क्रिकेट के बारे में पूछ रही थी। मैं उसे बता रहा था...।"

"सच ? मैं नहीं जानता था कि मां भी खिलाड़ी रही है। क्यों मां, लगता है स्वामी ने तुम्हें क्रिकेट का अच्छा-खासा पाठ पढ़ा दिया।"

दादी बोली, "लड़के को चिढ़ाओ मत। वह मुझे कितना प्यार करता है। बेचारा! वह मुझे कई तरह की बातें बता रहा है। तुम्हें तो मुझे कुछ समझाने की आदत नहीं है। तुम सब बड़े आदमी हो न...!"

पिता ने गोद के बच्चे की तरफ इशारा करके कहा, "थोड़े दिन रुको। यह छुटकू तुम्हें सारी दुनिया की राजनीति और दर्शन समझा देगा।" उसने प्यार से बच्चे के गालों को थपथपाया। बच्चा खुशी से चहका और उसने कुछ बोलने की कोशिश की। "देखो, वह भाषण देने लगा है। मां, ध्यान से सुनो।" दादी ने बच्चे को लेने के लिए हाथ बढ़ाये, लेकिन पिता उसे जोर से चिपटाये रहे और बोले, "नहीं नहीं। मैं इसके लिए ही जल्दी घर आया हूं। इसे नहीं दूंगा। चलो स्वामी, हमें खाने के लिए बैठना चाहिए। तुम्हारी मां कहां है ?"

3

कप्तान ने स्वामीनाथन के व्यवहार के प्रति कड़ा रुख अपनाया, "स्वामी, मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूं। तुम खेल की तरफ ध्यान नहीं दे रहे हो। तुम अभ्यास कर ही नहीं रहे हो।"

"क्या करूं ? कमबख्त बोर्ड स्कूल का काम..."

"किसने कहा था तुम्हें उस स्कूल में जाने को ? उन्होंने तो तुम्हें बुलाया नहीं था। खैर छोड़ो। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूं। यहां तक कि ब्रेडमैन, टेट और दूसरे सभी लोग हर रोज चार-पांच घंटे अभ्यास करते थे। क्या तुम समझते हो कि तुम उनसे भी बड़े हो ?"

"मेरी बात तो सुनो कैप्टेन। मैं पांच बजे से पहले मैदान में पहुंचने की पूरी कोशिश करता हूं। लेकिन कमबख्त बोर्ड हाई स्कूल का टाइम-टेबल अजीब है।"

कोई तरकीब निकालना जरूरी लगा। कप्तान ने सुझाव दिया, "तुम्हें अपने हैडमास्टर से मिलकर उनसे प्रार्थना करनी चाहिए कि वे तुम्हें मैच तक अतिरिक्त काम से छूट दे दें। कहना आसान था लेकिन करना मुश्किल और स्वामीनाथन ने यह बात कह भी दी। उस समय उसके सामने हैडमास्टर का रूखा खूसट चेहरा और छोटी सी मैली ऐनक घूम गयी।

"उस राक्षस से बात करते डर लगता है," स्वामीनाथन बोला। "वह मुझे कई सालों तक दूसरी फार्म में ही रोके रख सकता है।"

"क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम हैडमास्टर से इतना डरते हो ? मैं उनसे मिलूं तो ?"

"नहीं, कैप्टेन, ऐसा मत करना। मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूं। तुम नहीं जानते वह कितना जालिम है। वह तुम्हारे साथ भी बुरा व्यवहार कर सकता है। वह तुमसे अच्छा व्यवहार करे तो भी वह तुम्हारे जाने के बाद मेरी जान ले सकता है।"

"तुम्हें क्या हो गया है स्वामी ? तुम्हारे दिमाग में भूसा भरा है। हम मैच कैसे खेलेंगे ? टीम बने दो महीने हो गये और तुमने दस दिन भी अभ्यास नहीं किया...।"

मणि, जो अब तक अहाते की दीवार पर टांगें फैलाये बैठा था, बोला, "देखते हैं तुम्हारा हैडमास्टर क्या करता है। उसे 'हां' करनी पड़ेगी या 'ना'। अगर वह तुम्हें मार डालेगा तो मैं उसका भुरता बना दूंगा। मेरे मुगदरों को बहुत दिनों से कोई काम नहीं मिला है।"

राजम को कोई रोक नहीं सकता था। अगले दिन उसने जिद की, कि वह हैडमास्टर से मिलेगा। वह अपनी क्लास के कुछ पीरियड छोड़ देने की भी परवाह नहीं करेगा। मणि बोला, "मैं भी साथ चलूंगा," लेकिन उसे कहा गया कि वह अपना काम देखे।

अगली सुबह साढ़े नौ बजे पांच मिनट तक आंखें मलने के बाद स्वामीनाथन की आंखें लाल हो गयीं और उसने सिरदर्द की शिकायत की। पिता ने उसकी कनपटी पर हाथ रखकर देखा और फिर कहा, "मुंह पर पानी के छींटे मारो, ठीक हो जाओगे।"

"अच्छा पिताजी," कहकर स्वामीनाथन बाहर गया। पिता के कमरे के बाहर खड़े होकर उसने सोचा, 'अगर ठंडे पानी से छींटे मारने से सिर दर्द ठीक हो जाता है तो वह छींटे नहीं मारेगा, क्योंकि उसे उसे इस वक्त सिर दर्द की जरूरत है। राजम हैडमास्टर से मिलने आ रहा था, इसलिए उस दिन स्कूल जाने में समझदारी नहीं थी। अंदर जाकर उसने पूछा, "पिताजी, आपने ठंडा पानी बताया था न ?"

"हां।"

"लेकिन इससे निमोनिया या कुछ और तो नहीं हो जायेगा ? मुझे बुखार भी लग रहा है।"

पिता ने उसकी नाड़ी देखकर कहा, "अब दौड़ कर स्कूल जाओ, ठीक हो जाओगे।" पत्थर से दूध निकालना आसान था, लेकिन पिताजी को स्कूल से छुट्टी करने के लिए मनाना आसान नहीं था।

उसने दादी के कान में कहा, "दादी, मैं मर भी जाऊं तो भी क्या पिताजी मेरी लाश को स्कूल भेजने की जिद करेंगे ?" दादी ने इस तरह की बातें करने का जोरदार विरोध किया।

"दादी, मुझे अंदर से तेज बुखार है और सिर तो मारे दर्द के फटा जा रहा है। फिर भी क्या मैं एक दिन के लिए स्कूल से छुट्टी नहीं कर सकता ?"

दादी बोली, "मत जाओ स्कूल।" फिर मां को आवाज देकर बोली, "लड़के को बुखार हो रहा है। इसे स्कूल क्यों भेजती हो ?"

"क्या सच में बुखार है ?" मां ने चिंतित होकर प्यार से उसका बदन टटोला, फिर

बोली, "हां, इसे तो बुखार है।" स्वामीनाथन ने करुण सूरत बनाकर कहा, "मां, जल्दी से दूध दो। स्कूल के लिए देरी हो रही है।" मां ने इस सुझाव को मानने से इंकार कर दिया। स्वामीनाथन ने बुदबुदाकर कहा, "पिताजी नहीं मानेंगे।" मां ने उसे पलंग पर लेटने के लिए कहा और दौड़कर पिता के कमरे में गयी। अंदर जाते हुए उसने घोषणा की, "स्वामी को बुखार है, वह स्कूल नहीं जायेगा।"

"तुमने थर्मामीटर लगाकर देखा ?"

"अभी नहीं। लेकिन वह एक दिन स्कूल नहीं जायेगा तो कोई हर्ज नहीं होगा।"

"फिर भी थर्मामीटर लगाकर देख लो," उन्होंने कहा। उन्हें लगा कि स्वामी की मां व्यंग्य को समझ जायेगी, इसलिए उन्होंने जोड़ा, "ताकि पता चले कि डाक्टर को बुलाने की जरूरत है या नहीं।"

स्वामीनाथन के मुंह में आधा मिनट तक थर्मामीटर रखा और पता चला कि बुखार नहीं है। मां ने थर्मामीटर देखा और फिर स्वामी के मुंह में डाल दिया। फिर भी बुखार नहीं निकला। वह थर्मामीटर लेकर स्वामी के पिता के पास गयी। पिताजी बोले, "बुखार नहीं है ?" उनका मन यह कहने को उतावला हो रहा था कि 'मैं तो पहले ही जानता था।' मां ने कहा, "थर्मामीटर में कुछ खराबी होगी। लड़के को बुखार है। मेरे हाथ से अच्छा कोई थर्मामीटर नहीं है। मैं कसम खा कर कह सकती हूं कि उसे 100 से ज्यादा बुखार है।"

"हो सकता है," पिता बोले।

और जब स्वामीनाथन को स्कूल में होना चाहिए था तब वह आराम से आंखें मूंदे बिस्तर पर पड़ा था। उसने बिस्तर के पास किसी के कदमों की आवाज सुनी और आंखें खोलीं। पिताजी पास खड़े थे। वे धीमे स्वर में बोले, "तुम बड़े खुशकिस्मत हो। जब तुम स्कूल नहीं जाना चाहते हो तुम्हारी तरफ से बोलने वाले इस घर में बहुत लोग हैं।" स्वामीनाथन को लगा कि यह उस पर पीछे से किया गया अचानक और अकारण हमला है। उसने आंखें बंद कर लीं और कराहते हुए दीवार की तरफ मुंह करके सो गया।

किंतु दोपहर तक वह बिस्तर पर लेटे-लेटे तंग आ गया। उसने सोचा, शाम तक इसी तरह बिस्तर पर लेटे रहना पड़ा तो क्या होगा। इसके अलावा राजम सुबह स्कूल गया होगा और अब तक वह वापस अपने स्कूल पहुंच गया होगा।

वह मां के पास गया और बोला कि वह स्कूल जा रहा है। मां ने तुरंत इसका उग्र विरोध किया। उसने उसके सारे शरीर को छूकर देखा और कहा कि अब वह ठीक है, लेकिन वह स्कूल बिल्कुल नहीं जायेगा। स्वामीनाथन बोला, "मां, मैं अब बिल्कुल ठीक हूं। तुम चिंता मत करो।"

रास्ते में उसे राजम और मणि मिल गये। मणि ने बगल में अपना मुगदर दबा रखा था। स्वामीनाथन डरा कि कहीं इन दोनों ने कोई अनर्थ तो नहीं कर डाला।



राजम बोला, "अजीब आदमी हो, सुबह कहां थे ?"

"तुम हैडमास्टर से मिले ?"

"अभी नहीं। हमने देखा कि तुम नहीं आये, इसलिए उनसे नहीं मिले। मैं चाहता हूं कि जब मैं उनसे मिलूं तो तुम भी मेरे साथ हो। आखिर, यह तुम्हारा मामला है।"

राजम की बातों ने स्वामीनाथन के मन में जो उथल-पुथल पैदा की उससे उबरने के बाद उसने पूछा, "मणि यहां क्या कर रहा है ?"

"मैं नहीं जानता," राजम बोला। "यह तुम्हारे स्कूल के बाहर हाथ में मुगदर लिए खड़ा था जबकि उसे अपनी क्लास में होना चाहिए था।"

"मणि, तुम्हारी क्लास का क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं। आज मैं नहीं गया, बस।"

"और यह मुगदर ?" स्वामीनाथन ने पूछा।

"ओह, यूं ही साथ ले आया था।"

राजम बोला, "मैंने कल कहा नहीं था कि तुम्हें अपनी क्लास में जाना चाहिए और अपना काम देखना चाहिए ?"

मुझे याद नहीं। तुमने मुझे अपना काम देखने के लिए तब कहा था जब मैंने तुम्हारे साथ आने का सुझाव दिया था। मैं तो यूं ही इस तरफ आया था और तुम भी आ गये। यह सरकारी सड़क है। मणि का मजाक उनकी समझ में नहीं आया। वे आनेवाली मुलाकात की योजना में खोये थे।

मणि बोला, "चिंता मत करो जवानों, मैं तुम्हारी सारी मुश्किलें हल कर दूंगा। तुम कहो तो मैं हैडमास्टर से बात कर सकता हूं।"

स्वामीनाथन बोला, "तुम उसके कमरे में घुसे तो वह पुलिस बुला लेगा।"

जब वे स्कूल पहुंचे तो मणि को वापस जाने के लिए कहा गया या फिर वह सड़क पर इंतजार करे। राजम अंदर गया और स्वामीनाथन को भी हैडमास्टर के कमरे में साथ आने के लिए मजबूर किया।

मेज पर कोहनियां रखे और दोनों हाथों में सिर थामे हैडमास्टर सो रहे थे। वह एक छोटा-सा कमरा था, जिसकी एकमात्र खिड़की एक दुकान की जीर्ण-शीर्ण दीवार पर खुलती थी। कमरे में मुड़े हुए नक्शे, ग्लोब, रेखागणित स्कवेयर आदि इधर-उधर पड़े थे और उन पर धूल जमी थी। हैडमास्टर की सफेद छड़ी दो स्याही की दवातों और कुछ पैडों के साथ मेज पर पड़ी थी। उनकी नाक धीमी आवाज कर रही थी। राजम ने नहीं सोचा था कि उन्हें ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा।

"अब क्या करें ?" स्वामीनाथन ने फुसफुसाकर कहा।

"ठहरो।" राजम ने आदेश दिया।

वे दस मिनट खड़े रहे और तब अपने पैरों से धीमी आवाज दी। हैडमास्टर ने आंखें

खोलीं और अपने हाथों से सिर को उठाये बिना खाली-खाली नजरों से उन्हें देखा। तब उन्हें पहचानने का कोई संकेत दिये बिना, उन्होंने आंखें मलीं, तीन बार पलकें झपकायीं और जम्हाई लेकर नींद में भारी आवाज में पूछा, "क्या तुम लोगों की क्लास नहीं है ?" फिर टटोलकर ऐनक ली और उसे आंखों पर चढ़ाया। अब तस्वीर साफ थी—खूसट चेहरा और वह भी मैली ऐनक के साथ जो स्वामीनाथन को भयभीत करता था। उन्होंने फिर पूछा, "तुम किस क्लास के हो ? क्या तुम्हारी क्लास नहीं है ?"

"मैं आपके स्कूल का नहीं हूं," राजम थोड़ा अकड़कर बोला।

"ओह! तो फिर तुम कहां से टपक पड़े ?"

राजम बोला, "मैं एम.सी.सी. का कप्तान हूं और आपके पास काम से आया हूं।"

"और यह कौन है ?"

"यह मेरा दोस्त डब्ल्यू. एस. स्वामीनाथन है, आपके स्कूल में सैकेंड-सी में पढ़ता है।"

"आप से मिलकर खुशी हुई," हैडमास्टर स्वामीनाथन की तरफ मुड़ कर बोले। राजम को उस क्षण पता चल गया कि बोर्ड हाई स्कूल को प्रतिष्ठा किस बात से मिली है।

"मैं एम.सी.सी. का कप्तान हूं।"

"आप से मिलकर भी खुशी हुई।..."

"यह मेरी टीम में है, बहुत अच्छा गेंदबाज है...।"

"क्या तुम गेंदबाज हो ?" हैडमास्टर ने स्वामीनाथन की तरफ देखकर पूछा।

"क्या मैं अपनी बात कहूं ?" राजम ने पूछा।

"बोलो, बोलो, भगवान के लिए बोलो," हैडमास्टर ने कहा।

"ऐसा है," राजम बोला, "यह बहुत अच्छा गेंदबाज है और इसे अभ्यास की जरूरत है। यह फील्ड में जल्दी नहीं आ पाता, क्योंकि उसे हर रोज साढ़े चार बजे के बाद स्कूल में रोक लिया जाता है।"

"तुम मुझे क्या करने को कहते हो ?"

"सर, क्या आप इसे साढ़े चार के बाद घर जाने की आज्ञा नहीं दे सकते ?"

हैडमास्टर अपनी कुर्सी पर पीछे हट कर बैठ गये और एक पल चुप रहे।

राजम ने फिर पूछा, "क्या कहते हैं, सर ? क्या आप आज्ञा नहीं देंगे ?"

"इस स्कूल के हैडमास्टर तुम हो या मैं ?"

"बेशक आप ही हैडमास्टर हैं, सर। अल्बर्ट मिशन में हमें साढ़े चार के बाद एक मिनट भी नहीं रोकते और यदि हम खेलों में भाग लेते हैं तो हमें ड्रिल से भी छूट मिल जाती है।"

"मैं यहां उस दो कौड़ी के स्कूल की तारीफ सुनने नहीं बैठा हूं। निकलो बाहर।"

बाहर खड़े मणि ने जब देखा कि दोस्त बड़ी देर से अंदर हैं तो उसे कुछ अंदेशा हुआ और वह हैडमास्टर के कमरे में आ गया।

"यह कौन है ?" हैडमास्टर ने मणि की तरफ रूखेपन से देखकर पूछा, "क्या चाहते हो ?"

"कुछ नहीं," मणि ने कहा और चुपचाप कोने में खड़ा हो गया।

"मेरी समझ में नहीं आता कि क्यों हर आदमी जिसके पास कोई काम नहीं होता, मेरे कमरे में आकर खड़ा हो जाता है।"

"मैं पुलिस सुपरिंटेंडेंट का लड़का हूं," राजम तपाक से बोला।

"यह बात है ? अपने पिता से पूछकर बताओ कि उस दिन वह क्या कर रहा था जब बदमाश लड़कों ने इन खिड़कियों के शीशे तोड़ दिये थे... ? इस छोकरे के हाथ में क्या है ?"

"मेरा मुगदर है," मणि ने जवाब दिया।

राजम ने जोड़ा, "यह इससे खोपड़ियां तोड़ता है। आओ मणि। आओ स्वामी। इस उल्टी खोपड़ी से बात करने का कोई फायदा नहीं।"

पंद्रह

मैच से पहले

1

एम.सी.सी. की 'मैत्रीपूर्ण' मैच की चुनौती को यंग मैन्स यूनियन ने स्वीकार कर लिया। इस टीम ने रीडिंग रूम के पीछे के खाली प्लाट में अनथक अभ्यास करके अपने को तैयार कर रखा था। प्लाट के मालिक द्वारा एतराज करने पर वे कुलम स्ट्रीट के बीचों-बीच क्रिकेट का अभ्यास करने लगे थे। मैच सिर्फ नाम के लिए मैत्रीपूर्ण था। एम.सी.सी. ने जो चुनौती भेजी थी वह धमकी और तिरस्कार से भरी थी।

चुनौती के साथ कुछ भयानक शर्तें लगायी गयी थीं। पहली शर्त थी कि खिलाड़ियों को ठीक ग्यारह बजे मैदान में आना होगा। दूसरी शर्त थी कि उन्हें बैट साथ लाने होंगे, जबकि विकटें एम.सी.सी. के सौजन्य से उपलब्ध होंगी। तीसरी शर्त कोई साफ शर्त नहीं थी बल्कि एक मजबूत संकेत था कि उन्हें अपने साथ दो-एक बाल लाने होंगे और जरूरत के लिए तैयार रखने होंगे। इसका कारण इस सारगर्भित वक्तव्य में कहा गया कि 'तुम्हारे खिलाड़ी हमारी गेंदों को तोड़ने की बजाय अपनी गेंदों को पीटें।' अगली शर्त में मेजबानी की भावना से एकदम शून्य थी। उसमें कहा गया था कि अगर वे लंच लेना चाहें तो इसकी व्यवस्था खुद करें। अंतिम शर्त सबसे ज्यादा पेचीदा थी जिस पर कुछ बहस और बातचीत हुई : "बैट, बाल, विकेट और अन्य तोड़फोड़ का हर्जाना तुम लोगों को देना पड़ेगा।"

वाई.एम.यू. टीम का कप्तान इस शर्त को पढ़कर चकरा गया। उसे लगा कि यह शर्त फालतू है, शर्त 2 और 3 को देखते हुए, कि यदि वे बैट, बाल तोड़ते हैं तो ये उनकी अपनी चीजें होंगी, एम.सी.सी. का इसके लिए हर्जाना मांगना गलत है। उसे बताया गया कि विकटें एम.सी.सी. की होंगी और वाई.एम.यू. टीम शर्त 2 और 3 को अनदेखा कर रही है। इस पर वाई.एम.यू. का कप्तान बहुत चिढ़ा और उसने कहा कि एम.सी.सी. इतनी ही फटेहाल है तो वे वाई.एम.यू. की पिच पर आकर क्यों नहीं खेलते और उसकी टीम को वहां तक ले जाने की परेशानी से क्यों नहीं बचाते ? राजम को इसका तीखा जवाब तब सूझा जब दूसरे कप्तान को गये ठीक बीस मिनट बीत गये। जवाब यह सूझा था कि अगर रीडिंग रूम के पीछे वाले प्लाट का मालिक प्लाट पर खेलने की मनाही कर

दे तो एम.सी.सी. की टीम कुलम स्ट्रीट के बीच मैच खेलना पसंद नहीं करेगी। जाने से पहले वाई.एम.यू. के कप्तान ने जानना चाहा कि अंतिम शर्त की 'अन्य तोड़फोड़' का क्या मतलब है। राजम ने रुककर चारों ओर नजर डाली और एम.सी.सी. फील्ड के निकट के घर की खिड़कियों तथा टाइलों की ओर इशारा किया।

मैच दो सप्ताह बाद रविवार के दिन खेला जाना था।

राजम की नींद उड़ गयी। वैसे उसे पूरा विश्वास था कि उसकी टीम वाई.एम.यू. की धुनाई करेगी। स्वयं उस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है कि वह टीम का सिर नीचा नहीं होने देगा। मणि भी मजबूती से खड़ा रह सकता है हालांकि उसका खेल आकर्षक नहीं है। वह किसी भी बाल को जरूरत पड़ने पर अपने सिर से रोक सकता है। उसकी बल्लेबाजी बुरी नहीं है। हां, उसकी शैली अजीब है। बल्ले से वह विकेट के सारे संभव रास्तों को बंद कर सकता है और अच्छे से अच्छे गेंदबाज को थकाकर बेहोश कर सकता है। राजम ने टीम के दूसरे खिलाड़ियों को विचार करने योग्य नहीं समझा। एक ही खिलाड़ी ऐसा था जो उसकी रात-दिन की गहरी चिंता का विषय बना हुआ था। उसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता था और उस पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आती थी। वह था टीम का 'टेट'। उसे दुश्मन टीम के सभी खिलाड़ियों को आऊट करना था। लेकिन वह विश्वसनीय नहीं लगता। मैच को एक पखवाड़ा रह गया है, लेकिन वह अभ्यास को तरफ ध्यान नहीं देता। वह अंधेरा घिरने के बाद मैदान में आने की अपनी पुरानी आदत पर टिका हुआ है। राजम ने अनुरोध के स्वर में कहा, "स्वामी, मेहरबानी करके शाम को कम से कम दो घंटे के अभ्यास की कोशिश करो।"

"जरूर राजम, अगर कोई रास्ता बता सको तो...।"

"तुम अपने हैडमास्टर को क्यों नहीं बताते कि...।"

"नहीं, नहीं," स्वामीनाथन बोला, "मैं इस सुझाव के लिए आभारी हूं। लेकिन हमें उसके बारे में सोचना ही नहीं चाहिए। वह हमारी पिछली मुलाकात को भूला नहीं है।"

"मैं कुछ नहीं जानता। मैं तो इतना ही चाहता हूं कि तुम ठीक से अभ्यास करो। अगर तुमने किसी बल्लेबाज को पांच मिनट से ज्यादा टिकने दिया तो मैं तुम्हारी शक्ल नहीं देखूंगा। स्कोर की तुम्हें चिंता करने की जरूरत नहीं। यह काम हम पर छोड़ दो...।"

2

मैच के सात दिन पहले स्वामीनाथन ने महसूस किया कि उसकी शामें पहले से कहीं ज्यादा कीमती हैं। जैसे ही शाम की घंटी बजी वह दूसरे लड़कों के साथ व्यायाम की लाइन में खड़ा हो गया। लेकिन कायदे के अनुसार उसने कोट-टोपी नहीं उतारी। सभी

लड़के कमीज और ऊपर खोंसी गयी धोती में थे। व्यायाम शिक्षक चौड़ी काठी, उभरी छाती और कोनों से नोंकदार बड़ी-बड़ी मूंछों वाला था। उसने सिर पर सैनिक शैली में रेशमी पगड़ी बांध रखी थी और ऐसे तनकर खड़ा था जैसे वह कैमरे के सामने खड़ा हो। उसने अपने शिष्यों का तिरस्कार भरी तिरछी नजर से निरीक्षण किया। मानीटर ने लकड़ी के कुदान-घोड़े पर रखे चिपिचिपे रजिस्टर से नाम पुकारने शुरू किए। लंबे समय के बाद हाजिरी की प्रक्रिया खत्म हुई और व्यायाम शिक्षक अपनी तनी मुद्रा छोड़ लाइन के करीब आया और एक सिरे से दूसरे तक प्रत्येक लड़के को ध्यान से देखने लगा। स्वामीनाथन कद का छोटा होने के कारण लाइन के अंत में था। व्यायाम शिक्षक उसके पास आकर खड़ा हो गया, उसे ऊपर से नीचे तक देखा और यह कह आगे बढ़ गया, "छुट्टी नहीं मिलेगी, कोट-टोपी उतार दो।" स्वामीनाथन ने घिघियाकर कहा, "सर मेरी तबीयत आज बहुत खराब है। मैं आज व्यायाम नहीं कर पाऊंगा। किया तो मर जाऊंगा सर, मुझे लगता है मैं...।" वह व्यायाम शिक्षक के पीछे-पीछे चल रहा था।

व्यायाम शिक्षक आखिरी लड़के के पास पहुंच गया, तब भी स्वामीनाथन उसका पीछा कर रहा था। उसने घूमकर स्वामीनाथन से कड़कती आवाज में कहा, "क्या बात है ?"

"सर आप मेरी परेशानी नहीं समझ रहे हैं। आपने यह भी नहीं पूछा कि मुझे क्या तकलीफ है...।"

"अच्छा बोलो, क्या तकलीफ है ?"

स्वामीनाथन ने पहले सिर दर्द का बहाना सोचा। लेकिन अब उसने देखा कि व्यायाम शिक्षक गंभीर सिर दर्द की भी परवाह करने वाला नहीं है। उसे एक नयी बात सूझी। उसने कहा, "सर, कल सारी रात मैं एकदम नहीं सोया। मुझे सन्निपात हो गया था।" व्यायाम शिक्षक यह बात सुनकर सन्न रह गया, बोला, "सन्निपात ? क्या तुम पागल हो ?"

"नहीं सर, कल रात मेरी पलक तक नहीं झपकी। मुझे सन्निपात हो गया था। डाक्टर ने कुछ ऐसा ही कहा था। उसने कहा है कि अगले सप्ताह व्यायाम क्लास में न जाऊं, नहीं तो मैं मर भी सकता हूं।"

"सुअर कहीं का! इससे पहले कि मैं तुम्हारा गला दबा दूं, दफा हो जाओ यहां से। मुझे तुम्हारे एक भी शब्द पर यकीन नहीं। लेकिन तुम जिद्दी सुअर हो। जाओ यहां से।"

वहां से निकलने और क्रिकेट के मैदान में पहुंचने तक का आध घंटे का समय, दौड़ते-हांफते बीता। क्रिकेट के मैदान में उसे इतनी जल्दी आया देख सब को खुशी हुई। राजम तो खुशी से उछल पड़ा।

कुल मिलाकर सब संतोषजनक था। सारे प्रसंग में एक ही बुरी बात थी। इस सबके



दौरान एक बात बार-बार उसके मन में खटकती रही कि व्यायाम शिक्षक उसका पता न लगवा ले। अत: जब सब लड़के तितर-बितर हो गये तो स्वामीनाथन अंधेरा होने तक राजम के घर टिका रहा और फिर बड़ी सावधानी से अंधेरे-अंधेरे में, दुकानों के सामने से सड़क पर पड़ने वाली रोशनी से बचते हुए घर गया।

अगली सुबह उसने सप्ताह की बाकी शामों की छुट्टी के लिए एक योजना बनायी। वह व्याकरण की पुस्तक सामने खोले अपने डेस्क पर बैठा था। सुबह के साढ़े सात बजे थे और स्कूल जाने के लिए अभी उसके पास पूरे ढाई घंटे थे।

उसने सावधानी से टोह लगायी। मां छोटे बच्चे के कमरे में थी, क्योंकि उसे झूले की 'क्रीं क्रीं' सुनायी दे रही थी। पिता का स्वर सामने के कमरे से सुनायी दे रहा था जिसका मतलब था कि वे अपने मुवक्किलों से बातें कर रहे हैं। स्वामीनाथन चुपचाप घर से खिसक गया।

अब वह एक दुकान के सामने खड़ा था, जिस पर 'डाक्टर टी. केशवन, एल.एम. तथा श्रीकृष्ण डिस्पेंसरी' का बोर्ड लटका हुआ था। डाक्टर अपनी लंबी मेज पर सड़क की तरफ मुंह किये बैठा था। स्वामीनाथन ने देखा कि डाक्टर अकेला है। उसने दुकान में प्रवेश किया।

"हैलो स्वामीनाथन! क्या बात है ?"

"कुछ नहीं सर, मुझे आपसे एक छोटा सा काम है।"

"घर में सब ठीक-ठाक हैं न ?"

"हां डाक्टर। मुझे तुरंत एक डाक्टरी सर्टीफिकेट की जरूरत है।"

"तुम्हें क्या हुआ है ?"

"डाक्टर, मैं आपको सच-सच बताऊंगा। मुझे अगले सप्ताह यंग मैन्स यूनियन के साथ मैच खेलना है। मुझे कुछ अभ्यास करना होगा। लेकिन हर शाम हमारे स्कूल में व्यायाम की कक्षा या स्काऊट कक्षा या इसी तरह की कोई ऊलजुलूल कक्षा लगती है। अगर मुझे आप एक सर्टीफिकेट दे दें, जिसमें उनसे कहा जाए कि वे मुझे साढ़े चार बजे छोड़ दें तो इससे एम.सी.सी. को मैच जीतने में मदद मिलेगी।"

"ठीक है, मैं यह कर सकता हूं। लेकिन तुम्हें कुछ बीमारी-सीमारी भी है ?"

स्वामीनाथन को सोचने में आध सैकेंड लगा, बोला, "हां, मुझे कुछ दिनों से लग रहा है कि मुझे सन्निपात है।"

"क्या कहा ?" डाक्टर ने घबराकर पूछा।

स्वामीनाथन को इस बात की प्रसन्नता हुई कि डाक्टर उसकी बात से इतना प्रभावित हुआ और इसलिए दुहराया कि उसे बहुत उग्र किस्म का सन्निपात है।

"लड़के, जानते हो सन्निपात क्या होता है ? सन्निपात से तुम्हारा मतलब क्या है ?" स्वामीनाथन को लगा कि यह बहस करने का ठीक समय नहीं है। लेकिन उसे

डाक्टर की सहानुभूति की जरूरत थी। अतः उसने जवाब दिया, "मुझे क्या हुआ है, मैं ठीक से नहीं जानता। क्या यह पेट दर्द जैसा ही कुछ नहीं है ?"

डाक्टर जोर-जोर से हंसता रहा, जब तक कि खांसी के दौरे से दम घुटने की स्थिति नहीं आ गयी। उसके बाद उसने स्वामीनाथन की आंखें, जीभ, छाती की जांच करने के बाद कहा कि वह बिल्कुल स्वस्थ है और उसे अगर अपने सन्निपात से छुटकारा पाना हो तो उसे व्यायाम जरूर करना चाहिए। स्वामीनाथन ने फिर कहा कि उसे खाली शामों की कितनी जरूरत है। डाक्टर बोला, "यह तो ठीक है, लेकिन मैं तुम्हें ऐसा सर्टीफिकेट दूंगा तो मुझ पर मुकदमा चल सकता है।"

"यह कौन देखने जा रहा है, डाक्टर ? क्या आप चाहते हैं हमारी एम.सी.सी. मैच हार जाये ?"

"मैं चाहता हूं तुम जीतो। चिंता मत करो। मैं तुम्हें सर्टीफिकेट तो नहीं दे सकता, लेकिन मैं तुम्हारे हैडमास्टर से बात करूंगा और उनसे कहूंगा कि वे तुम्हें साढ़े चार बजे छोड़ दें।"

"बस, इतना काफी है डाक्टर। आपकी बहुत-बहुत मेहरबानी।"

* * *

साढ़े चार बजे स्वामीनाथन स्कूल के मैदान में लगी स्काऊट कक्षा की चिंता किये बिना सीधा घर गया और वहां से क्रिकेट के मैदान में। दूसरे दिन उसकी व्यायाम क्लास थी और उसकी भी उसने परवाह नहीं की। वह खूब अभ्यास कर रहा था। राजम ने कहा, "स्वामी, तुम अद्भुत हो। तुम्हें सिर्फ अभ्यास की जरूरत है। तुमने शाम की कक्षा का क्या किया ?"

"थोड़ा दिमाग से काम लेना पड़ा। हमारे डाक्टर ने हैडमास्टर को बताया है कि अगर मैं साढ़े चार के बाद स्कूल में रुका तो मैं मर जाऊंगा। मुझे डाक्टर से यह कहलवाना पड़ा। तुम्हारा क्या ख्याल है ?" मणि ने उसकी पसलियों में घूंसा मारकर कहा, "मैंने तुम्हारे जैसा तेज दिमाग का आदमी नहीं देखा।" राजम ने सहमति जतायी और फिर अचानक उसे एक चिंता ने जकड़ लिया, "पता नहीं हम मैच जीतेंगे या नहीं। अगर हार गये तो मैं मर जाऊंगा।"

मणि बोला, "राजम, मैं तुम्हारी हार की बातों से परेशान हो गया हूं। क्या तुम समझते हो कि वो बंदर जैसी शक्लों वाले बेवकूफ हमारे सामने टिक पायेंगे ?"

"हम जीत गये तो मैं समाचारपत्रों को लिखूंगा," राजम ने कहा।

"क्या समाचारपत्र हमारे फोटो छापेंगे ?" टेट ने पूछा।

"बेशक!"

3

शुक्रवार को भूगोल की कक्षा में हैडमास्टर हाथ में छड़ी लिए अंदर आये। भूगोल शिक्षक रामाराव नरम स्वभाव के बुजुर्ग थे। वह आदरपूर्वक अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। हैडमास्टर ने अपने रूखे-झुर्रीदार चेहरे से सारी क्लास को देखा। उसकी उल्लू जैसी आंखें स्वामीनाथन पर आ टिकीं और उसने कहा, "खड़े हो जाओ।"

स्वामीनाथन खड़ा हो गया।

"यहां आओ।"

स्वामीनाथन जल्दी से वहां पहुंचा।

"अपना बेशर्म चेहरा सारी क्लास को अच्छी तरह दिखाओ।"

स्वामीनाथन ने अब अपना चेहरा छिपाने की कोशिश की। हैडमास्टर ने हाथ बढ़ा कर उसकी गर्दन पकड़ी और उसका चेहरा क्लास की ओर घुमाया, फिर कहा, "यह महाशय इतने व्यस्त हैं कि व्यायाम क्लास और स्काऊटिंग क्लास जैसे मामूली बातों की तरफ जरा भी ध्यान नहीं देते और पिछले सोमवार से इन्होंने इन क्लासों को सुशोभित नहीं किया है।" व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से उसके होंठ टेढ़े हुए। क्लास के लड़के उससे संकेत पाकर दबी हंसी हंसे। भूगोल के अध्यापक के चेहरे पर भी हल्की मुस्कान प्रकट हुई।

"सर, क्या आपको इस बारे में कुछ कहना है ?" हैडमास्टर ने पूछा।

बड़ी कठिनाई से स्वामीनाथन की आवाज निकली, "डाक्टर ने कहा... क्या डाक्टर ने आपसे मेरे बारे में बात नहीं की, सर ?"

"कौन डाक्टर और क्या बात ?"

"उसने कहा था मैं बात करूंगा," स्वामीनाथन ने धीमे से जवाब दिया।

"अगर तुम पहेलियों में बात करोगे तो मैं तुम्हें क्लास के सामने नंगा करके पीटूंगा।"

"डाक्टर केशवन ने कहा...।"

"कौन डाक्टर केशवन ?"

"उसने कहा था, वह मेरे बारे में आप से बात करेगा और व्यायाम क्लास तथा दूसरी बाद की क्लासों से मुझे छुट्टी दिला देगा। उसने कहा था अगर मैंने आने वाले कुछ दिनों में व्यायाम किया तो मर जाऊंगा।"

"और तुम्हें तकलीफ क्या है ?"

"उनका विचार है कि यह एक प्रकार का सन्निपात है, आप जानते हैं," उसने डाक्टर से मिलने के बाद इस शब्द का प्रयोग न करने का फैसला किया था, किंतु इस नाजुक मौके पर वह आदत से मजबूर होकर यह गलत शब्द बोल गया।

हैडमास्टर ने अध्यापक की तरफ देखकर त्यौरियां चढ़ायीं। कुछ देर इंतजार करने के बाद वह बोला, "मैं यह इंतजार कर रहा हूं कि तुम्हारे मुंह से सच्चाई और बुद्धिमत्ता

का और कौन सा शब्द निकलने वाला है।"

"सर, मैंने सोचा उसने आपसे बात की होगी। उसने कहा था...।"

"अगर गली का हर कुत्ता आकर कहे कि मुझे स्कूल में लड़कों से क्या व्यवहार करना चाहिए तो मुझे उसकी परवाह नहीं है। अच्छी बात है कि यह सर्जन-जनरल नहीं आया वरना मैंने चपरासी से कहकर उसका सिर मेज से टकराया होता।"

स्वामीनाथन को अब पता चला कि डाक्टर ने उसे धोखा दिया है। उसे डाक्टर की मैत्रीपूर्ण मुस्कराहट याद आयी जब उसने कहा था कि वह हैडमास्टर से बात करेगा। स्वामीनाथन यह सोच कर कांप उठा कि इस मुस्कान में पीछे छिपा डाक्टर केशवन कितना बड़ा खलनायक था। वह उस दुष्ट को सबक सिखायेगा। वह उसकी मेज की दराज में सांप रख देगा। वह बुखार से मर भी रहा होगा तो भी इस दुष्ट को नब्ज पर हाथ नहीं रखने देगा। बदले की अन्य योजनाओं का काम तब रुक गया जब छड़ी उसकी उंगलियों पर पड़ी। हैडमास्टर ने कहा, "हाथ आगे करो। हर दिन की गैरहाजिरी के लिए दोनों हाथों पर छह-छह छड़ियां और अगले पाठ के सारे समय बैंच पर खड़े रहना। मानीटर, तुम ध्यान रखना। और याद रखो डब्ल्यू.एस. स्वामीनाथन, अगर तुमने इसके बाद एक भी क्लास छोड़ी तो मैं तुम्हें स्कूल के हाल में नंगा करूंगा और चपरासी से तुम्हें पिटवाऊंगा। तुम मुझे पुलिस सुपरिंटेंडेंट और उसके बेटों, पोतों या नाना-दादा से नहीं डरा सकते। तुम लाट साहब से शिकायत करो तब भी मैं परवाह नहीं करूंगा।" उसने स्वामीनाथन की गर्दन छोड़ दी और छड़ी उठा ली।

यह सब कुछ क्षण और चलता तो सांप की तरह लपलपाती छड़ी स्वामीनाथन की हथेली पर आ गिरती। आवेश में स्वामीनाथन का धैर्य छूट गया और उसमें भय, क्रोध और विद्रोह के मिले-जुले भाव उठे। उसे पता ही नहीं चला कि वह क्या कर रहा है। उसने हाथ आगे बढ़ाकर हैडमास्टर के हाथ से छड़ी छीन ली और उसे खिड़की के बाहर फेंक दिया। इसके बाद वह दौड़ कर अपने डेस्क के पास गया, किताबें उठायीं और कमरे से बाहर दौड़ा। दौड़ते-दौड़ते ही उसने हाल और दालान को पार किया, स्कूल के गेट के ऊपर चढ़ा, क्योंकि उसका कुंडा बहुत भारी था, और छलांग मारकर मार्किट रोड के सिरे पर आ गया।

वह सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा। उसने स्कूल छोड़ दिया है। उस जालिम हैडमास्टर के रहते वह कभी वहां वापस नहीं जा सकता। उसके पिता को पता चलेगा तो न जाने वे क्या करें। वे उसे वापस भेजेंगे, लेकिन यह असंभव होगा...। वह इसी तरह दो स्कूल छोड़ चुका है। मालगुड़ी में अब और स्कूल नहीं बचा है। पिता को उसे त्रिचनापल्ली या मद्रास भेजना पड़ेगा। लेकिन बोर्ड स्कूल का हैडमास्टर सबको लिख देगा और उन्हें बता देगा कि स्वामीनाथन कौन है। उसका किसी स्कूल में दाखिला नहीं होगा, अत: अब उसे मेहनत-मजदूरी करनी पड़ेगी। उसे कुछ रुपये मिल



जायेंगे—और वह होटल में जाकर जितनी बार चाहेगा कॉफी-नाश्ता ले सकेगा। बंबई आनंद भवन की मिठाइयां कितनी बढ़िया होती हैं। दुकान के बाएं कोने में ऊपर हरे-हरे टुकड़े थे जिनमें बादाम लगे हुए थे। वह जब भी उन्हें देखता, खाने की इच्छा होती थी, लेकिन होटल वाले से पूछने की हिम्मत नहीं होती थी। उसे लगता था कि वह बहुत महंगी है।... अगर वह स्कूल नहीं गया तो पिताजी उसे घर में नहीं रहने देंगे, उसकी पिटाई भी कर सकते हैं। आज वह घर नहीं जायेगा और न ही और किसी दिन जायेगा। वह पिताजी का सामना नहीं कर सकता। साथ ही उसने सोचा कि वह जायेगा कहां ? कहीं भी। अगर वह मार्किट रोड पर चलता जाये, चलता जाये तो कहां पहुंच जायेगा ? शायद मद्रास। वह और आगे जाये तो क्या वह बंबई और इंगलैंड पहुंच जायेगा ? वह इनमें से किसी भी जगह काम कर सकता है, पैसा कमा सकता है और जो चाहे कर सकता है। अगर वह रेलगाड़ी से जाये...। लेकिन पैसे के लिए क्या करूं ? उसके लिए ज्यादा झंझट नहीं करना पड़ेगा। स्टेशन मास्टर मिलनसार आदमी है और स्वामीनाथन उसे जानता है।

स्कूल की घंटी बजी और वह वहां से भागने के लिए उठा। लड़के बाहर आयेंगे, उसके इर्द-गिर्द जमा होंगे और उसे इस तरह देखेंगे, जैसे कि वह कोई अजूबा हो।

वह मार्किट रोड पर जल्दी-जल्दी चलने लगा। स्मिथ स्ट्रीट के पास वह मुड़ा और टेढ़ी-मेढ़ी गलियों का छोटा रास्ता पकड़कर अपने पुराने अल्बर्ट स्कूल, के सामने आ खड़ा हुआ। गहरे पीले रंग की बिल्डिंग के ऊपर की मंजिल के दृश्य ने पुरानी यादों को ताजा कर दिया। उसने सोचा, काश उसने यह स्कूल न छोड़ा होता। यहां की हर चीज अब उसे कितनी शानदार दिखायी देती है। फीतेदार पगड़ी में यहां का हैडमास्टर बोर्ड स्कूल के गंदे, फटीचर हैडमास्टर की तुलना में कितना भव्य लगता है। वेदनायकम, एब्नेजर-एब्नेजर भी। डी.पी. पिल्लै की इतिहास की क्लास कितनी सुखद और मजेदार होती थी। स्वामीनाथन को सोमू, मटर आदि की याद करते ही रोना आ गया...। उसके सभी दोस्त वहां हैं, राजम, सोमू, मणि, मटर, सब खुश हैं, शान से रहते हैं, उनकी इज्जत है महान अल्बर्ट मिशन स्कूल के अंदर। अकेला वही उसकी दीवारों से बाहर है, अलग-थलग, जैसे कि वह कोढ़ी हो।

वह अछूत है, अछूत। अचानक उसका मन अपने प्रति ग्लानि से भर गया। पुराने स्कूल में वापस आने के लिए वह कुछ भी कर सकता है। लेकिन वह मुझे नहीं लेंगे। कोई फायदा नहीं। मालगुड़ी में अब कोई स्कूल नहीं है जहां वह जा सकता है। उसे मद्रास भाग जाना चाहिए और वहां कुछ काम करना चाहिए। लेकिन जाने से पहले राजम और मणि से मिलना ठीक रहेगा।

वह स्कूल के गेट के बाहर घूमता रहा। अंदर जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। वह स्कूल का दुश्मन था। चपरासी सिंगाराम ने देखा तो वह उसे पीट कर बाहर निकाल देगा। वह सावधानी से सीमेंट के भारी द्वार-स्तंभ के पास आ खड़ा हुआ जो स्कूल के

दृश्य और उसके बीच आड़ का काम दे रहा था। राजम और मणि से मिलना बहुत जरूरी है। कुछ मिनट चुपचाप खड़े रहकर उसने एक योजना बनायी।

वह स्कूल के पिछवाड़े गया। यह बिल्डिंग का ऐसा भाग था जहां कोई नहीं जाता था। यह स्कूल के साथ लगे उजाड़ पड़े खेत का हिस्सा था जो दूर रेलवे बांध तक जाता था। स्वामीनाथन ने इस स्कूल में जो छह-सात साल बिताये थे उस दौरान वह कभी इस तरफ नहीं आया था। यहां स्कूल के अहाते की दीवार पर काई जमी थी और स्कूल के पिछले हिस्से का दृश्य काफी आकर्षक था। यहां से स्वामीनाथन बिल्डिंग के ऊपर का आधा हिस्सा देख सकता था, लेकिन वह भी बड़ा अजीब दिखायी देता था। उदाहरण के लिए वह तुरंत नहीं बता सकता था कि उसकी पुरानी सैकेंड-ए क्लास कहां है। उसने एक पत्थर लुढ़काकर दीवार के साथ रखा और उस पर खड़ा हो गया। अब वह स्कूल का अहाता देख सकता था। लगभग बारह बज रहे थे। यह स्कूल का सबसे व्यस्त घंटा था और अहाते में एक भी लड़का दिखाई नहीं दे रहा था। उसने कुछ देर इंतजार किया। यह इंतजार उकताने वाला था। कुछ समय बाद एक छोटा सा लड़का नाक साफ करने पहली कक्षा से निकला। पहली कक्षा के तीन सेक्शन एक ब्लाक में थे जो स्वामीनाथन से एक दर्जन गज से भी कम दूर था।

स्वामीनाथन ने हल्की सी सीटी बजायी, पर छोटे लड़के ने उसे नहीं सुना। स्वामीनाथन ने फिर सीटी बजायी। इस बार लड़का मुड़कर भागने लगा मानो उसने भूत देख लिया हो। स्वामीनाथन ने उसे पास बुलाया। लड़के ने एक सैकेंड यह सोचने में लगाया कि भूत की आज्ञा मानी जाये या वापस कक्षा की ओर भागा जाये। स्वामीनाथन ने उसे फिर बुलाया। छोटा लड़का उसकी तरफ आंखें फाड़े जैसे जादू से खिंचकर चला आया।

स्वामीनाथन ने कहा, "बादामी पिपरमिंट लोगे ?"

छोटा लड़का अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सका। यह लड़का तो सचमुच बादामी पिपरमिंट दे रहा है। शायद यह सच नहीं हैं। इसमें कुछ धोखा है। स्वामीनाथन ने फिर बादामी पिपरमिंट देने की बात कही तो लड़के ने सावधानी बरतते हुए कहा, "हां, मुझे पिपरमिंट चाहिए।"

स्वामीनाथन बोला, "अभी नहीं। तुम्हें कुछ काम करना पड़ेगा। सैकेंड फार्म—ए की क्लास में जाकर एम. राजम से कहो कि उसके घर से कोई आदमी आया है और उसे यहां ले आओ और फिर पिपरमिंट के लिए अपना हाथ बढ़ाओ। तुम्हें दो भी दे सकता हूं।" छोटा लड़का सारे सवाल पर गौर करता हुआ चुपचाप खड़ा रहा। फिर उसने भौंहें सिकोड़ कर पूछा, "सैकेंड फार्म—ए कहां हैं ?"

"ऊपर।"

"ओह!" लड़के ने निराशा से कहा और सोच में डूबा खड़ा रहा।

"क्या कहते हो ?" स्वामीनाथन ने पूछा, "मेरे दस गिनने से पहले-पहले जवाब दो

वरना पिपरमिंट का वायदा खत्म। एक, दो, तीन...।"

"तुमने कहा ऊपर है ?" लड़के ने पूछा।

"हां।"

"लेकिन मैं कभी ऊपर नहीं गया।"

"अब जाना पड़ेगा।"

"मुझे रास्ता नहीं मालूम।"

"सीढ़ियां चढ़ जाओ।"

"वो... वो मुझे मारेंगे। अगर कोई देखेगा तो...।"

"बादामी पिपरमिंट लेनी है तो खतरा उठाना ही पड़ेगा। जल्दी बताओ जाते हो या नहीं ?"

"ठीक है! मैं अभी आया।" कहकर लड़का चला गया।

दस मिनट बाद वह लौट आया। साथ में राजम था। राजम ने जब दीवार के ऊपर स्वामीनाथन का सिर देखा तो उसे बड़ी हैरानी हुई। "तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

"दीवार फांदकर आ जाओ। मुझे तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है, राजम।"

"मेरी क्लास है। अभी नहीं आ सकता।"

"बेकार की बात मत करो। जल्दी आओ। बहुत जरूरी बात है।"

राजम दीवार फांदकर उसके पास आ गया।

स्वामीनाथन का सिर ओझल हो गया। दीवार के पीछे छोटे लड़के ने करुण स्वर में कहा, "मेरी पिपरमिंट ?"

"ओह, मैं तो भूल ही गया, दोस्त।" स्वामीनाथन ने दीवार के ऊपर सिर निकालकर कहा और तीन पाई का सिक्का उसकी ओर उछालकर बोला, "पकड़ो इसे।"

"तुमने तो कहा था बादामी पिपरमिंट," लड़के ने याद दिलाया।

"कही तो मैंने हजार चीजें होंगी," स्वामीनाथन ने रूखेपन से कहा, "लेकिन क्या तीन पाई का सिक्का काफी नहीं है। तुम इससे चाहो तो बादामी पिपरमिंट खरीद सकते हो।"

"लेकिन तुमने तो कहा था दो बादामी पिपरमिंट...।"

"अब जाओ मेरे यार। बैंगन बेचने वाले की तरह मोल-भाव मत करो। कुछ संतोष करना सीखो।" और स्वामीनाथन पत्थर से नीचे कूद पड़ा।

"राजम, जानते हो आज स्कूल में क्या हुआ ? मैं हैडमास्टर से लड़ पड़ा। मैं स्कूल से बाहर हो गया हूं। अब मेरे लिए कोई स्कूल नहीं, कोई क्लास नहीं।"

"तुम्हारा हैडमास्टर से झगड़ा हुआ ?"

"हां, वह व्यायाम क्लास के बारे में मुझे मारने आया। मैंने उसके हाथ से छड़ी छीन ली... मुझे नहीं लगता कि मैं अब स्कूल जाऊंगा। मुझे लगता है कि मैं स्कूल गया तो

बहुत गड़बड़ होगी।"

राजम बोला, "तुम भी क्या आदमी हो ? जहां जाओगे कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर लोगे। हमेशा, हमेशा...।"

"लेकिन इसमें मेरा कोई कसूर नहीं था, राजम," स्वामीनाथन ने कहा और उसने डाक्टर केशवन की दुष्टता की कहानी सुनाकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया।

"स्वामी, तुम्हें जरा भी अक्ल नहीं है। तुम अजीब आदमी हो।"

"अभ्यास के लिए शाम की छुट्टी मैं और कैसे ले सकता था ? वाई.एम.यू. कोई मजाक नहीं है।"

"तुम ठीक कहते हो स्वामी। मैंने आज सुबह उन्हें अभ्यास करते देखा। वो लोग सुबह भी अभ्यास करते हैं। खिलाड़ी बुरे नहीं है। उनमें एक मोहिदीन है, काले रंग का। ओह, उस पर तो नजर रखनी पड़ेगी। वह ब्रेडमैन की तरह खेलता है। उस पर नजर रखनी होगी। फिर एक षण्मुखम् है, बड़ा खतरनाक बालर। लेकिन मोहिदीन की एक कमजोरी है। वह लेग साइड में कमजोर है। स्वामी, अब कुछ दिनों के लिए किसी बात की चिंता मत करो। कल से तुम्हें सुबह भी आना है। हमें उन लोगों को हराना ही है।"

स्वामीनाथन वास्तव में राजम से हमेशा के लिए विदा लेने आया था। किंतु अब उसने अपना इरादा बदल दिया। अगर राजम को उसकी साहसिक योजनाओं का पता चला तो वह उसे रोकेगा। वह इसके बारे में राजम को कुछ नहीं बतायेगा, किसी को भी नहीं, मणि को भी नहीं। अगर उसे रोका गया तो उसके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं होगी। मैच में अब भी दो दिन बाकी हैं। वह किसी को बताये बिना चला जायेगा, रास्ते में किसी तरह अभ्यास करता रहेगा, मैच के दिन कुछ घंटों के लिए वापस आयेगा और फिर गायब हो जायेगा। फिर कभी वापस मालगुड़ी नहीं आयेगा—मालगुड़ी जहां उसके पिता हैं, कठोर और जिद्दी पिता और वह जालिम हैडमास्टर है...। मैं कितनी भी सफाई दूं पिताजी कभी मुझसे सहमत नहीं होंगे। अगर मैं वापस घर गया तो पिताजी मुझे वापस बोर्ड स्कूल भेजने के लिए मारेंगे, हड्डी-पसली एक कर देंगे, जान से मार देंगे। पिताजी बहुत कठोर हैं...। उसे मैच के दिन वापस आना पड़ेगा, चुपचाप। शायद इसकी जरूरत न पड़े। अचानक उसने पूछा, "राजम, क्या मैच में मेरा रहना जरूरी है ?"

राजम ने उसे संदेह से देखा और बोला, "ऐसी बातें मत करो।" फिर बोला, "स्वामी, हम तुम्हारे बगैर नहीं खेल सकते, नहीं। हमें तुम्हारा ही भरोसा है। तुम हमारे सबसे अच्छे गेंदबाज हो। हमें उन लोगों की धुनाई करनी ही होगी। अगर हम मैच हार गये तो मैं अपनी जान दे दूंगा। ओह स्वामी, तुमने समस्या को कितना उलझा दिया है। तुम स्कूल का क्या करोगे ?"

"मुझे किसी वर्कशाप वगैरह में काम करना पड़ेगा।"

"तुम्हारे पिताजी सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?"

"कुछ नहीं। वे कहेंगे, ठीक है। वे मुझे तंग नहीं करेंगे।" स्वामीनाथन बोला।

"स्वामी, मुझे क्लास में वापस जाना होगा। देर हो गयी है।" राजम उठा और यह कहते हुए स्कूल की तरफ भागा, "मैदान में जल्दी आना, बहुत जल्दी, क्योंकि अब तो तुम्हें फुर्सत है...।"

सोलह

स्वामी गायब हो गया

1

स्वामीनाथन के पिता को अपने प्रति बड़ी ग्लानि हुई। शहर की आखिरी संड़क एल्लामन स्ट्रीट के पास पहुंचकर उन्होंने देखा, आगे लगभग सौ गज तक कच्चा रास्ता है जो और आगे जाकर सरयू नदी की रेत के साथ मिल गया है। वे मार्किट रोड के छोर पर थोड़ी देर रुके। यहां सड़क देर से बंद होने वाली एक-दो दुकानों और नगरपालिका की गैस-बत्तियों के कारण जगमगा रही थी। इसके बाद वे मुड़े और एल्लामन स्ट्रीट के अंधकार तथा सन्नाटे में डूब गये। गैस लैंप की नीमहरी रोशनी का तीर एल्लामन स्ट्रीट के ऊपर तिरछा पड़ा हुआ था जिससे स्ट्रीट में कुछ गज तक तो रोशनी थी लेकिन आगे गहरा अंधेरा था। नगरपालिका की एक-दो लालटेनों की बत्तियां धुआं छोड़ती हुई जल रही थीं, जो आसपास के अंधेरे को और गहरा बनाती थीं।

स्वामीनाथन के पिता को अपने प्रति ग्लानि अनुभव हुई। उन्हें सड़क पार करके, तट की रेत पर चलकर सरयू में अपने पुत्र की लाश खोजनी थी। उनका बेटा स्वामी जिसे उन्हें सरयू में ढूंढ़ना था। उन्हें यह हास्यास्पद लगा। लेकिन वे क्या कर सकते थे ? वे अपने बेटे की अच्छी या बुरी कोई निश्चित खबर लिए बिना घर वापस नहीं जा सकते थे। घर में नौ बजे से मातम का माहौल छाया था। उनकी पत्नी और मां सदमे से पागल सी हो गयी थीं। ताल्लुका कार्यालय में दस बजे का घंटा बजने तक तो उनकी पत्नी निश्चिंत रही, लेकिन उसके बाद उसका चेहरा सफेद पड़ गया और उसने स्वामी के पिता से कहा कि स्वामी के दोस्तों और अध्यापकों से पता करें कि आज क्या बात हुई थी।

वे नहीं जानते थे कि स्वामी के हैडमास्टर कहां रहते हैं। वे बोर्ड स्कूल गये थे और उन्होंने चौकीदार से पूछा था। चौकीदार ने गलत जगह बता दी और उन्हें आधे शहर में बेमतलब भटकना पड़ा। उन्हें मणि का घर भी नहीं मिला। वे राजम के घर भी गये। लेकिन घर में अंधेरा था और सब लोग सो गये थे। उन्हें लगा कि इस वक्त एक अनजान आदमी के घरवालों को जगाना और उनसे अपने बेटे के बारे में पूछताछ करना बड़ा बेतुका

होगा। बरामदे में सोये नौकर से वे इतना ही जान पाये कि स्वामीनाथन उस शाम राजम के घर नहीं आया था। फिर वे सड़कों पर बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के भटकने लगे थे। वे पत्नी और मां को सांत्वना देने के लिए ऐसा कर रहे थे। अपनी पत्नी की घबराहट से वे जरा भी विचलित नहीं थे। उन्हें बराबर यह लगता रहा था कि लड़का कहीं गया है और लौट आयेगा और तब वे उसके साथ कुछ सख्ती करके उसकी इस बुरी आदत को शुरू में ही बदल देंगे। इस तरह इधर-उधर एक घंटा बिताकर वे घर गये थे। बूढ़ी मां भी बिस्तर छोड़ बेचैनी से घर में घूम रही थी और तिरुपति पहाड़ियों के भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि स्वामी सही-सलामत लौट आया तो वह उसे बहुमूल्य भेंट चढ़ायेगी। पत्नी पत्थर की मूर्ति बनकर सड़क पर नजरें गड़ाये खड़ी थी। घर में एक मात्र शांत व्यक्ति था छोटा बच्चा जिसकी हल्की-हल्की सांसें पालने से आ रही थीं और घर की उदासी तथा भारीपन की उपेक्षा कर रही थीं।

जब स्वामीनाथन के पिता ने पत्नी को बताया (उसमें बताने लायक था भी क्या) कि इतना भटकने के बाद भी स्वामी की कोई खबर नहीं मिली तो उनमें एक आक्रामक प्रसन्नता का भाव था। यह भाव कुछ देर बना रहा और फिर मां तथा पत्नी की चिंता तथा घबराहट का उन भी असर होने लगा। उन्हें लगने लगा कि उनके बेटे को कुछ हो गया है—अपहरण, दुर्घटना। वे अपनी इन आशंकाओं पर विचार कर ही रहे थे कि पत्नी ने कांपती आवाज में कहा, "अस्पताल में पता किया था ?" और इसके साथ ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। उन्होंने पत्नी के इस सवाल को कुछ तिरस्कार से सुना जबकि उनका मन अस्पताल में बेटे के क्षत-विक्षत शरीर की कल्पना करने लगा था। वे इस तस्वीर को मन से मिटाने का प्रयास कर रहे थे, तभी मां ने एक प्रश्न करके मामले को और पेचीदा कर दिया। मां ने कहा, "बताओ, बताओ मुझे, लड़का कहां जा सकता है ? क्या आज सुबह तुमने उस पर गुस्सा किया था ?" उन्हें इस सवाल पर गुस्सा आया। सब लोग स्वामीनाथन के गायब होने के लिए उन्हें ही जिम्मेवार ठहरा रहे हैं। नौ बजे से लेकर उन्हें ताने दिये जा रहे हैं और शक की नजरों से देखा जा रहा है। लेकिन मां के प्रश्न से वे बौखला गये और उन्होंने कुछ तीखेपन से मां से कहा कि वह बिस्तर पर जाकर सो जाए तथा इस तरह की बेकार बातें सोचने में दिमाग न खपाए। उसके बाद उन्होंने सुबह से बेटे के साथ किये अपने व्यवहार की समीक्षा की और आश्चर्य तथा राहत के साथ उन्होंने पाया कि उन्होंने दिन भर बेटे को नहीं देखा था। लड़के ने बिस्तर से उठकर कुछ पढ़ा-लिखा होगा, फिर वह स्कूल गया होगा जबकि वे अपने बंद कमरे में मुवक्किलों से बातें कर रहे थे। फिर उन्होंने सोचा कि पिछले दो-तीन दिनों में तो उन्होंने कुछ नहीं किया। उन्हें अपनी स्मृति पर पूरा भरोसा तो नहीं था फिर भी उन्हें यकीन हो गया कि उनका व्यवहार निर्दोष रहा है। जहां तक उन्हें याद पड़ता था उन्होंने एक भी ऐसा काम नहीं किया था या एक भी ऐसा शब्द नहीं कहा था, जिसके कारण लड़का



कोई खतरनाक काम कर बैठे। बारह बज रहे थे और उनकी पत्नी अब भी सुबक रही थी। उन्होंने उसे सांत्वना देने का प्रयास किया। फिर पहले की तरह ही कुछ निश्चिंत मुद्रा में यह कहकर बाहर निकल गये, "मैं उसे ढूंढ़ने बाहर जा रहा हूं। अगर वह इस बीच वापस आ जाए तो भगवान के लिए उसे यह मत बताना कि मैं क्यों बाहर गया हूं। मैं उसकी नजरों में बेवकूफ नहीं बनना चाहता।"

वे अस्पताल की सड़क पर तेजी के साथ चल कर गये, लेकिन अस्पताल के ऊंचे, लोहे के गेटों पर टकटकी लगाने के बाद लौट पड़े। उन्होंने अपने से कहा कि अस्पताल में जाना बेकार होगा, लेकिन वास्तव में वे जानते थे कि उनमें भीतर जाने का साहस नहीं है। जिस खिड़की से हल्की सी रोशनी आ रही थी उसके पीछे, संभव है, स्वामीनाथन का क्षत-विक्षत शरीर पड़ा हो। वे जल्दी से अस्पताल वाली सड़क छोड़ आसपास की कुछ अंधेरी गलियों में निरुद्देश्य घूमने लगे। हर घंटा बीतने के साथ उनके दिल का बोझ बढ़ता गया। वे मार्किट रोड छोड़कर अब एल्लामन स्ट्रीट पर आ गये थे।

जल्दी-जल्दी उन्होंने एल्लामन स्ट्रीट को पार किया और नदी की ओर जाने वाले कच्चे रास्ते पर चलने लगे। नदी के निकट पहुंचते-पहुंचते उनकी चाल धीमी पड़ गयी। उन्होंने अपने को यकीन दिलाने की कोशिश की, कि जो कुछ वे करने जा रहे हैं, वह महज नाटक है। लेकिन यदि उन्हें बेटे की पिचपिची, फूली हुई लाश सरकंडों में फंसी, लहरों में डोलती दिखायी दे गयी तो...। आंखें बंद करके उन्होंने भगवान से प्रार्थना की, "हे भगवान, मेरी मदद करो।"

उन्होंने नदी में दूर तक इधर-उधर देखा जो धीमी स्वर-लहरी के साथ बह रही थी। नदी के ऊपर झुके विशाल पीपल के पेड़ रात के प्रति सिसकियां भर रहे थे। वे कभी पानी में किसी डाल के मामूली साये को देखकर चौंक पड़ते थे और कभी किसी तैरती हुई चीज को काई से ढंके तट से टकरा कर लुढ़कते देखकर उसकी तरफ भागने लगते थे।

और फिर, पुन: अपने को बेवकूफ कहते हुए वे मालगुड़ी रेलवे स्टेशन की तरफ चलने लगे और रेल की पटरी के साथ करीब एक मील तक चलते रहे, रेलवे की पटरियों और स्लीपरों को ध्यान से देखते हुए। रात के कीड़ों की तीखी सीटियां और भनभनाहटें, चमगादड़ों के पंख फड़फड़ाने की आवाजें, मेंढ़कों के टरटराने के स्वर भयानक सुनसान रात में सुनायी देते रहे। एक जगह वे कांपकर खड़े हो गये और रेल की पटरी के एक गीले धब्बे को उंगली से छुआ। उन्होंने उंगली को तारों की रोशनी में ध्यान से देखा और पाया कि यह पानी है, खून नहीं। इस पर उन्होंने राहत की सांस ली और ईश्वर को धन्यवाद दिया।

सत्रह

मैच का दिन

1

ट्रंक रोड की बायीं ओर जाने वाली तंग सड़क ने स्वामीनाथन को अपनी तरफ आकर्षित किया क्योंकि इस पर बहुत से छायादार, फलों से लदे पेड़ थे। सफेद गोलाकार कैथ, हरे अंजीर, और गहरे बैंगनी फल घनी हरियाली में से झांक रहे थे। वह उस सड़क पर करीब एक मील चला और सड़क उसे अच्छी नहीं लगी। यह बिल्कुल सूनी थी। वह वापस ट्रंक रोड पर आना चाहता था जिस पर कुछ जीवन और यातायात था, हालांकि बहुत ही कम। धीरे-धीरे सरकती कोई बैलगाड़ी, या कोई मोटरकार पीछे ट्रंक-बिस्तर बांधे तेजी से निकलती और धूल के बादल में गायब हो जाती, सड़क के किनारे-किनारे चलती किसानों की टोलियां। किंतु यह सड़क तो इतनी सुनसान और शांत थी कि उसका दम घुटने लगा। इसके अतिरिक्त वह घर से दूर कई घंटों से भटक रहा था और वह दुबारा घर जाने की चाह से भर उठा। घर का विचार आते ही वह बेचैन हो उठा। रसोइया कितनी अच्छी-अच्छी चीजें बनाता था। मां हमेशा जिद करती थी कि दही-घी वह स्वयं परोसेगी। वह पत्तल के सामने बैठा मां को अलमारी खोलते और अलमूनियम का दही-कटोरा निकालते देखता था। पत्तल में रखी भात की ढेरी पर जब सफेद-नर्म दही बिना आवाज किए गिरती और भात को ढंक लेती थी तो कितना अच्छा लगता था। अब उसके पेट में चूहे दौड़ने लगे थे। उसकी जांघें भारी हो गयी थीं और उसके कूल्हों के आसपास दर्द होने लगा था। सूरज की किरणें पश्चिम से तिरछी पड़ रही थीं और पक्षी अपने घरों को लौटने लगे थे, किंतु इनकी तरफ स्वामी का ध्यान नहीं गया था।

जब भूख को सहना मुश्किल हो गया तो उसने कुछ फल तोड़कर खा लिये। पास ही साफ पानी का तालाब था।

कुछ देर आराम करने के बाद वह घर वापस चला। अब एक मात्र महत्वपूर्ण चीज थी घर, बाकी सब कुछ बेकार था। बोर्ड स्कूल का मामला अब उसे मामूली लगा। उसने अपने ऊपर आश्चर्य किया कि कैसे उसने इसे इतनी गंभीरता से लिया और इन सारी मुसीबतों में अपने को डाल लिया। वह कितना मूर्ख है! उसने पूरे दिल से चाहा कि उस



वक्त उसने हैडमास्टर के छड़ी उठाने पर हाथ आगे कर दिया होता। अगर ऐसा न भी किया होता तो भी उसे घर जाकर पिताजी को सारी बात सच-सच बता देनी चाहिए थी। पिताजी ने उसे थोड़ा झिड़का ही होता (अगर वे बहुत आगे बढ़ते तो दादी और मां पर हमेशा ही बचाव के लिए भरोसा किया जा सकता था)। यह झिड़की और गुस्सा लाभदायक ही होता, क्योंकि पिताजी उसे हर मुसीबत से बाहर निकाल सकते थे। लोग उनसे डरते हैं। और मैच में जब दो दिन हों तो अभ्यास छोड़ देना कितनी बड़ी बेवकूफी थी। अगर हम मैच हार गये तो राजम न जाने क्या कर बैठे।

इस बीच स्वामीनाथन ट्रंक रोड की तरफ वापस जा रहा था। उसने सोचा जल्दी ही वह उस सड़क पर पहुंच जायेगा। फिर तो उसे मार्किट रोड तक सीधे चलते जाना है और वहां से आंखें मींचकर घर पहुंच जायेगा। इतनी देर से घर पहुंचने पर माता-पिता बहुत गुस्सा करेंगे। लेकिन वह उन्हें बता सकता है कि वह रास्ता भूल गया था। अथवा, क्या यह बहुत मामूली बहाना होगा ? मान लो कि वह कहता है पठानों ने मेरा अपहरण कर लिया था और बड़ी मुश्किल से मैं भाग कर आया हूं, तो कैसा रहेगा ?...

उसे लगा कि वह बहुत देर से चल रहा है। उसे बहुत पहले ट्रंक रोड पर पहुंच जाना चाहिए था। किंतु जब उसने रुककर चारों ओर देखा तो पाया कि वह अब भी कैथ, अंजीरों के घने पेड़ों के बीच है। जमीन पर बदरंग, कटे-फटे फल और पत्ते बिखरे हुए थे। उसे लगा कि वापस जाते समय सड़क अधिक लंबी हो गयी है। सच बात यह थी कि एक जगह छोटे से मोड़ पर वह अनजाने दूसरी सड़क पर चलने लगा था, जो मेम्पी फोरेस्ट रोड से जा मिलती थी। करीब सत्तर मील आगे यह सड़क कई छोटे-छोटे कच्चे रास्तों में बंट जाती थी जो मेम्पी के घने जंगलों में जाते थे। अगर वह धोखे में डालने वाले मोड़ से भटक न जाता तो वह ट्रंक रोड पर बहुत पहले पहुंच गया होता।

रात अचानक आ घिरी और उसके दिल की धड़कन तेज हो गयी। जब उसने देखा कि वह ट्रंक रोड पर नहीं पहुंचा तो उसका गला सूख गया! पेड़ अब भी घने थे और सड़क तंग थी। ट्रंक रोड चौड़ी थी और वहां आसमान पेड़ों की डालों के पर्दे में नहीं छिपता था। यहां तो आसमान दिखायी ही नहीं दे रहा था। तारे जरूर डालों के बीच से झांकते नजर आते थे। उसने अपनी चाल तेज कर दी, हालांकि वह बहुत थक गया था। वह कुछ दूर तक दौड़ा, उसके पैर पत्तों से ढंकी जमीन पर गिरने लगे और उससे खड़खड़ की आवाज होने लगी। डालों पर बैठे पक्षी उस आवाज से चौंके और उन्होंने पंख फड़फड़ाये। उस घने अंधेरे और सन्नाटे के बीच पंखों के फड़फड़ाने की आवाज भूत की आवाज की तरह लगी। स्वामीनाथन डर कर खड़ा हो गया। उसे ट्रंक रोड पर पहुंचना ही चाहिए और वहां से घर। ट्रंक रोड पर पहुंचते रात के बारह भी बज जाएं तो भी वह परवाह नहीं करेगा। उस सड़क के खुलेपन और पेड़-पौधों की इक्का-दुक्का उपस्थिति में उसे कुछ आश्वासन मिलेगा। यहां तो पेड़ों के तनों के पास-पास होने और ऊपर उनकी



डालों के उलझाव सड़क को अंधेरी, भयानक और भूतिया गुफा का रूप दे रहे थे।

पक्षियों के फड़फड़ाने की आवाजें थम गयी थीं। वह फिर चलने लगा। इस बार सावधानी से चला ताकि शोर से पक्षी व्याकुल न हों, यद्यपि उसकी पूरी ताकत के साथ दौड़ने की इच्छा हो रही थी, ताकि वह जल्दी ट्रंक रोड और फिर घर पहुंच जाये। दौड़ने की इच्छा और सावधानी बरतने की इच्छा के बीच बहुत तीव्र संघर्ष चल रहा था। दौड़ने की इच्छा को दबाकर धीरे-धीरे, बिना शोर किए चलने पर उसकी नसें तनाव में कांपने लगीं। ऐसा लगा कि वह तूफान के बीच रस्सी पर चल रहा है।

उसके कान असाधारण रूप से सतर्क हो गये थे। उसके चलने से आवाज में जरा सी भी घट-बढ़ होती तो उसे तुरंत पता चल जाता था। पैरों के नीचे आने वाली चीजों से अलग-अलग स्वर निकल रहे थे, कभी हल्की सी टिक की आवाज, कभी धीमी सी कड़कड़ या सरसराहट, जो छोटी-छोटी सूखी लकड़ियों, आधे हरे पत्तों या सूखे-मुरझाए पत्तों की मोटी तह से निकलती थी। कभी-कभी नंगी जमीन भी पैरों के नीचे आती थी और तब हल्की थच् या पिटपट, पिटपट की एकरस ध्वनि बार-बार आती थी। हर आवाज स्वामीनाथन के कानों में प्रवेश कर रही थी। कुछ देर तक तो वह सिर्फ ये आवाजें ही सुनता रहा जैसे पिश, पिश, पिश, पिट, पट, पट, सर्रर चर्रर। ये आवाजें उसके दिमाग में अंतहीन एकरसता के साथ प्रवेश करती गयीं। ये एक प्रकार की अमंगलकारी फुसफुसाहटें थीं, जो उसे भयानक बलिदान के लिए बुला रही थीं। उसने इन फुसफुसाहटों में अपना नाम स्पष्ट सुना। इसमें जरा भी संदेह नहीं था। कोई पुकार रहा था...'स्वामी...स्वामी... स्वामी...स्वामी...स्वामी...' और फिर कुर्बानी का भयानक संकेत। उसके पीछे चुपचाप कोई भूत या राक्षस चला आ रहा था, जो बार-बार उसके कानों में एक ही बात कह रहा था। उसने रुककर अपने आसपास देखा। उसने एक विशाल दैत्य को अपनी बड़ी-बड़ी काली टांगों को दूर-दूर फैलाये और सायेदार भुजाओं को सिर के ऊपर जोड़े देखा। अब वह दैत्य जरा हिला। स्वामीनाथन इस डर से उससे आंखें नहीं हटा सका कि वह तुरंत उसे दबोच लेगा। वह अपनी जगह बर्फ बना खड़ा रहा और उस दैत्य को देखता रहा। उसके पीठ घुमाते ही उसका फुसफुसाना क्यों बंद हो गया ? वह टकटकी लगाकर देखता रहा। वह इस तरह करीब पांच मिनट देखता रहा। जब भय का पहला रोमांच कम हुआ तो उसे कुछ अधिक साफ दिखायी देने लगा। उसने देखा कि जिसे वह दैत्य समझ रहा था वह पेड़ों के मोटे-मोटे तने और उनकी ऊपर उठी हुई शाखाएं थीं।

उसने अपनी यात्रा जारी रखी। अब शायद वह ट्रंक रोड से कुछ ही गज दूर था। अब वह गुनगुनाते और टहलते हुए घर जायेगा। उसने अपने से पूछा कि उसे ट्रंक रोड पर सुस्ताना चाहिए या बिना रुके घर जाना चाहिए ? उसकी टांगें तो ऐसी लग रही थीं जैसे वे पत्थर की बनी हों। उसने फैसला किया कि वह ट्रंक रोड पर पहुंचकर थोड़ी देर आराम करेगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। ट्रंक रोड रात के बारह बजे भी सुरक्षित

होती है। सुस्ताने के बाद वह शायद दौड़ते हुए घर जा सकता है।

अब वह खुले आसमान के नीचे था। ऊपर तारे दिखायी दे रहे थे। सड़क उसके सामने अस्पष्ट सी घूम गयी थी। अब न तो गहरा अंधेरा था और न झाड़-झंखाड़ से घिरा रास्ता। जब उसे लगा कि वह ट्रंक रोड के पास पहुंच गया है तो क्षण भर के लिए उसका मन अपूर्व आनंद से भर गया। ऊपर तारों का साफ-निर्बाध नजारा देखकर उसमें नयी जान आ गयी। रुककर लाखों टिमटिमाते तारों को देखते हुए उसे जो सुख मिला, उससे उसे गाने की इच्छा हुई। वह भयानक, तंग और डालियों की छत वाली सड़क अब पीछे छूट गयी थी। इस अनुभूति के बाद उसमें नयी शक्ति आ गयी। उसने निश्चय किया कि वह आराम करने में समय नष्ट नहीं करेगा। अनुभव हुआ कि वह आगे चलते जाने में बिल्कुल सक्षम है। लेकिन अब उसे कुछ बेचैनी महसूस होने लगी थी। उसे साफ याद आया कि छोटी सड़क ट्रंक रोड के साथ समकोण बनाती थी। लेकिन यह सड़क तो सीधी जा रही है। थोड़ी देर तक तो वह हैरान-परेशान देखता रहा, फिर उसने अपने आप को यह कहकर सांत्वना दी कि वह छोटी सड़क का ही आगे का हिस्सा है, जो पहले उसकी नजर में नहीं आया था। जो भी हो, इसे ट्रंक रोड को समकोण पर काटना चाहिए और अगर वह दाईं ओर मुड़कर चलने लगेगा तो घर पहुंच जायेगा। उसने अपने दाएं-बाएं देखा, लेकिन वहां सड़क का धुंधला निशान भी नहीं था। उसने अपने को समझाया कि अंधेरे की वजह से वह सड़क को नहीं देख पा रहा है, वैसे ट्रंक रोड वहीं कहीं है। उसने दायीं ओर मुड़कर एक दो कदम भरे और घुटनों तक दलदल में फंस गया। उसमें चलते हुए वह कुछ आगे गया। लंबी नोकदार घास उसके चेहरे को छूने लगी और कुछ जगहों पर तो वह कीचड़ की घास में डूब ही गया। तब वह वापस मुड़ा और सड़क पर आ गया।

2

अब उसे अपनी स्थिति का भान हुआ। वह उस भूतिया समय में किसी अनजान सड़क पर था। अब तक उसे यह उम्मीद हिम्मत दे रही थी कि वह जानी-पहचानी ट्रंक रोड की तरफ बढ़ रहा है। लेकिन इस झूठी उम्मीद के भी खत्म हो जाने पर उसे भय ने बुरी तरह जकड़ लिया। यह पता चलने पर कि ट्रंक रोड दूर का झूठा सपना है, उसकी टांगें जवाब देने लगीं। फिर भी वह जैसे-तैसे लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ता रहा—यह जानते हुए कि यात्रा अर्थहीन व लक्ष्यहीन है। वह आधी बेहोशी में आगे बढ़ता जा रहा था। उस समय चारों ओर अजीब चुप्पी थी, इतनी चुप्पी कि पत्ते के गिरने की आहट भी सब ओर गूंज उठती थी। इस चुप्पी ने उसमें ऐसा भाव भर दिया जैसे वह आदमी ही नहीं है। उस वीराने ने उसे यह अहसास कराया कि वह भूतों-प्रेतों की भयानक दुनिया

में पहुंच गया है।

वह बोरे की तरह जमीन पर लुढ़क गया और जोर-जोर से रोने लगा। उसने माता-पिता, दादी, मणि और राजम को पुकारा। उसके रोने की तीखी आवाज रात में सामने के उन कालों सायों को पार कर गयी, जो पेड़ भी हो सकते थे, भूत भी और नरक के द्वार-स्तंभ भी। उसने उन सब देवताओं से, जिन्हें वह जानता था, प्रार्थना की कि वे उसे इस जगह से निकालें। उसने उन्हें भेंट चढ़ाने का वायदा किया। गजमुखी गणपति को हर शनिवार दो नारियल चढ़ाने की प्रतिज्ञा की। भगवान तिरुपति से वायदा किया कि वह नंगे जिस्म धूल में लेट कर भीख मांगेगा और सारी राशि उसे चढ़ायेगा। वह थोड़ी देर रुका ताकि देवताओं को उसके प्रस्ताव पर विचार करने का समय मिले और फिर वे ऊपर से उतरकर उसकी रक्षा करें।

अब उसके दिमाग में अजीब-अजीब कल्पनाएं उठने लगीं। उसे अपने पीछे भारी पांवों से चलने की आवाजें आयीं। मुड़कर देखा तो अंधेरे में एक विशाल स्तूप उसकी तरफ बढ़ा आ रहा था। अब देर हो चुकी थी, उस अंधेरे के पर्वत ने उसे देख लिया था। उसके बड़े-बड़े दांत हल्के सफेद दिखायी दिये। वह चिंघाड़ता हुआ आया। रास्ते में उसने सूंड से एक पेड़ को लपेटा और उसे जड़ समेत उखाड़कर जमीन पर पटक दिया। वह उसकी छोटी-छोटी आंखों को देख सकता था जो क्रोध से लाल थीं। उसके दांत नीचे की ओर और सूंड ऊपर उठी हुई थी और वह हमला करने के लिए तैयार था। वह एक तरफ लुढ़क गया और इस तरह बाल-बाल बच गया। वह थोड़ी देर तक हांफता हुआ लेटा रहा। उसके कपड़े पसीने से भीग गये। फिर उसने किसी चीज के दबे पांव आने की आहट और भयानक गुर्राहट सुनी। इससे पहले कि वह मुड़ कर देखे, भारी पंजों का थपेड़ा उसके कानों पर पड़ा और उसकी गर्दन पर गर्म बदबूदार सांस का स्पर्श हुआ। झट से उसने सिर नीचे कर लिया और चित्त लेट गया। वह विशाल, काले-पीले शेर से बच गया। इसके बाद एक तेंदुआ, एक बबर शेर और एक व्हेल भी, और फिर हाथियों, बाघों, सिंहों जैसे जंगली जानवरों तथा राक्षसों का मिला-जुला झुंड उसे खाने लपका। राक्षसों ने उसे कान पकड़ कर उठाया, उसके सिर के सारे बाल नोचे और सिर से पैर तक उसकी चमड़ी उधेड़ दी। यह टांग से लिपटने वाली ठंडी और चिपचिपी चीज क्या थी ? डंक ऊपर उठाये धीरे-धीरे सरकते बिच्छू के भय से वह सिकुड़ गया। नहीं, यह जगह आदमियों के लिए नहीं है। काला नाग और बिच्छू उससे एक इंच दूर थे। वह चीखा, उठा और भागा। वह मुड़-मुड़कर पीछे देखता रहा। बिच्छू उसी रफ्तार से दौड़ रहा था जिस रफ्तार से वह। वह बच नहीं सकता था। उसने सांस रोकी और सारी शक्ति लगाकर दुगनी गति से दौड़ पड़ा।

...वह दूसरी विकेट को छूकर वापस आया। दो रन। बैट हाथ में लिये वह खड़ा था। वाई.एम.यू. के कप्तान ने गेंद फेंकी और उसने छक्का जड़ दिया। तालियों की

गड़गड़ाहट से आसमान गूंज उठा। राजम ने खुशी में मैदान का चक्कर लगाया और दीवार के ऊपर-नीचे तीर बार कूदा। अगली गेंद फेंकी गयी। इसे मारने के बजाय स्वामीनाथन ने बल्ला एक तरफ हटा लिया और गेंद उसके सिर पर लगी। बाल टकराकर गेंदबाज—बोर्ड स्कूल के हैडमास्टर की तरफ भागी लेकिन स्वामीनाथन गेंद के पीछे भागा, आधे रास्ते में उसे पार किया, उठाया और बांह घुमाकर पूरे वेग के साथ उसे दुश्मन कप्तान के सिर पर दे मारा। बाल सिर पर लगा और सिर फट गया। एम.सी.सी. जीत गयी और जीत की खुशी में वाई.एम.यू. की टीम को ईंटों, विकेटों, बैट-बाल से मार-मार कर मैदान से बाहर खदेड़ दिया गया। स्वामीनाथन हंसता रहा, हंसता रहा, यहां तक कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा...।

3

गाड़ीवान रंगा शनिवार तड़के मेम्पी जंगल से पांच मील दूर अपने गांव लौट रहा था। वह रात दो-बजे यह सोचकर मालगुड़ी से चला था कि दोपहर तक अपने गांव पहुंच जायेगा। उसने मेम्पी जंगल की सड़क पर मुड़कर बैल की रस्सी गाड़ी से बांधी थी और लेट गया था। बैल के गले की घंटियों की मधुर आवाज और उसके कदमों की मंद-मंद ध्वनि में उसे तुरंत नींद आ गयी थी।

अचानक बैल धचके के साथ खड़ा हो गया। रंगा की नींद टूटी। उसने बैल की रस्सी जोर से खींचकर वे सब हांकें लगायीं और गालियां दीं, जिनसे बैल आमतौर पर तेजी से भागने लगता था। बैल ने सिर्फ सिर हिलाया जिससे गले की घंटियां जोर से बज उठीं, किंतु वह आगे नहीं बढ़ा। उसके व्यवहार से झुंझलाकर रंगा नीचे उतरा, ताकि वह बैल को बता सके कि वह इस बारे में क्या सोचता है। सुबह के धुंधलके में उसने देखा कि आगे एक आदमी लेटा हुआ है। वह जोर से बोला, "अरे गोबर गणेश, उठ। सोने के लिए क्या बढ़िया जगह ढूंढ़ी है। उठो और रास्ता नापो। मेरी बात सुन रहे हो ?" जब सोया हुआ आदमी नहीं जागा तो रंगा उसे सड़क से उठाकर दूर फेंकने के लिए आगे बढ़ा।

"ओह! यह तो कोई बच्चा है। यह यहां क्यों सोया है ?" फिर पास झुककर देखा तो बोला, "हे शिव शंकर! यह तो मर गया है।" टांगें और बांहें, शरीर का नंगा भाग सुबह की ओस से गीले थे। उसने लड़के की कमीज फाड़ी और हाथ अंदर डालकर देखा तो उसे यह जानकर राहत मिली कि शरीर में अभी गर्मी है। सारी स्थिति इतनी रहस्य भरी थी कि उसका भोला-भाला मन बहुत व्याकुल हो उठा। कपड़ों से लगता था कि वह शहर का लड़का है। यह इतनी दूर सड़क पर कैसे आया और क्यों यहां मरा हुआ-सा पड़ा है ? यह कौन है ? कहां से आया ? क्यों आया ? इन सवालों से रंगा का दिमाग चकराने लगा। उसने सुना था कि भूत-प्रेत आदमियों को उठाकर ले जाते हैं और दूर कहीं

छोड़ आते हैं। यह हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। उसने इस पहेली को यह सोच कर हल करने की कोशिश छोड़ दी कि यह काम पढ़े-लिखे लोगों के लिए छोड़ देना चाहिए और इस इलाके में सरकार बहादुर से अच्छे पढ़े लिखे कौन हो सकते हैं जो जंगल की तरफ तीन पत्थर आगे सरकारी बंगले में रहते हैं। उसका काम इतना ही होगा कि वह लड़के को सरकार बहादुर के पास पहुंचा दे। उसने धीरे से लड़के को उठाया और गाड़ी में डाल दिया।

अपनी जगह बैठकर उसने बैल की रस्सी हाथ में ली, बैल के पेट में एक लात मारी और रस्सी ढीली छोड़ दी। साथ ही उसने बैल को चेतावनी भी दे दी कि अगर उसने वक्त बरबाद करने की आदत न छोड़ी तो वह उसके पुट्ठे में गर्म सलाख भोंक देगा। इस चेतावनी को समझदारी से लेते हुए बैल ने सिर हिलाया और वह दुलकी चाल चल पड़ा जो खास-खास मौके के लिए ही होती है।

4

स्वामीनाथन ने खाली नजरों से सामने देखा। वह समझ नहीं पाया कि वह कहां है। पहले तो उसने सोचा कि वह वहीं है जहां दिन प्रति दिन कई सालों से रह रहा है अर्थात् अपने घर में। फिर धीरे-धीरे जब उसका मस्तिष्क साफ हुआ तो उसे कई घटनाएं बेतरतीबी से याद आने लगीं। उसने जल्दी-जल्दी पलकें झपकायीं। अपना हाथ बढ़ाया और कुछ टटोलने लगा। अपने सामने की वस्तुओं को ध्यान से देखा। दिमाग को चौकस रखने के लिए उसके भीतर जबर्दस्त संघर्ष चल रहा था। उसने दीवार की तस्वीर पर अपनी आंखें गड़ायीं (या वह कैलेंडर था ?)... यह जानने के लिए कि यह वही चीज है, जो घर पर उसके बिस्तर के सामने टंगी रहती है। वह उसके विवरण को थोड़ा-थोड़ा समझने लगा था कि अचानक उसका दिमाग थक गया और उस पर फिर विचारों का कुहासा छाने लगा। क्या दीवार पर कोई चीज थी भी ? दिमाग की शरारतों से वह झुंझला उठा। ... उसने सामने कुर्सी पर अस्पष्ट सी मानव आकृति देखी। उस आकृति ने कुर्सी उसके नजदीक खींची और कहा, "बेटे, क्या अब तुम ठीक हो ?" ये शब्द ऐसे कानों में पड़े जो अभी पूरी तरह अपने आसपास के जीवन के प्रति सचेत नहीं थे। स्वामीनाथन पिताजी को वहां देखकर उलझन में पड़ गया। वह जानना चाहता था कि उसके पास बैठने जैसा असाधारण काम वे क्यों कर रहे थे।

"पिताजी," उसने आकृति को देखकर कहा।

"तुम जल्दी ही अपने पिता से मिलोगे बेटा। चिंता मत करो।" उस आकृति ने कहा और उससे कुछ सवाल किये जो साधारण जिज्ञासा वाले आदमी को सूझ सकते थे। स्वामीनाथन ने प्रत्येक सवाल का जवाब देने में काफी देर लगायी और ये जवाब इतने

बेमेल तथा अप्रासंगिक थे कि प्रश्न पूछने वाला अजनबी पहले तो मजा लेने लगा, फिर झुंझलाया और अंत में उसने प्रश्न पूछना ही बंद कर दिया। स्वामीनाथन के सामने कई समस्याएं थीं, जो उसे काफी कमजोर बना रही थीं : यह आदमी कौन है ? क्या पिताजी हैं ? अगर नहीं तो यह यहां क्यों आया ? पिताजी हैं तो भी वे यहां क्यों हैं ? वह कौन है ? वह क्या कह रहा है ? मैं साफ और ऊंचे स्वर में क्यों नहीं बोल पा रहा हूं ?

इसके बाद वह आदमी जो पिता था या नहीं था, कमरे से बाहर चला गया। वह जिला वन अधिकारी मि. एम.पी.एस. नायर था, जो उस समय मैम्पी जंगल के पास ठहरा हुआ था। वह सारा दिन जंगल में घूमता रहा था और शाम सात बजे डाक बंगले में लौटा था। उसने अपनी पट्टियां मोड़ कर भारी बूट उतारे ही थे कि उसे लड़के के बारे में बताया गया। भोजन और दवाई से कई घंटे बाद लड़का होश में आया था। लेकिन फायदा क्या ? वह अपने बारे में कुछ बता पाने की स्थिति में नहीं था। अगर लड़के की बातों पर विश्वास किया जाए तो लड़का ऐसी अजीब और विचित्र नाम वाली जगह से आया लगता था जिसकी भूगोल के विद्यार्थियों को कोई जानकारी नहीं है।

अगली सुबह मि. नायर ने देखा कि लड़का उठ गया है और खूब फुर्तीला हो गया है। अहाते में वह पेड़ से कुछ दूर खड़ा है और उसके पैरों के पास पत्थरों का ढेर लगा है। वह नीचे झुका, एक पत्थर उठाया, कुछ गज पीछे हटा, फिर तेजी से कुछ कदम भरे, अचानक रुका और पत्थर को पेड़ के तने के एक खास बिंदु पर फेंका। एक के बाद एक पत्थर उठाकर उसने यह क्रिया दोहरायी।

"गुड मार्निंग, बेटा," मि. नायर ने कहा, "अब कैसे हो ?"

"आपका बहुत आभारी हूं, सर। आपने मुझे बहुत बड़ी मुसीबत से बचा लिया।"

"हां... बहुत व्यस्त हो ?"

"मैं प्रैक्टिस कर रहा हूं, सर। हमें वाई.एम.यू. के खिलाफ मैच खेलना है। राजम गेंदबाजी के मामले में मुझ पर भरोसा करता है। वो लोग मुझे 'टेट' कहते हैं। मैंने कई दिनों से सही प्रैक्टिस नहीं की है। मैंने अभ्यास न करने की बेवकूफी की जबकि मैच... आज क्या दिन है सर ?"

"तुम क्यों जानना चाहते हो ?"

"मुझे बताइए सर, मैं जानना चाहता हूं कि मैच में कितने दिन बाकी हैं ?"

"आज इतवार है।"

"क्या ? इतवार ?" स्वामीनाथन पत्थर बना खड़ा रहा। इतवार! इतवार! वह पास पड़े पत्थरों के ढेर को टकटकी बांधे देखता रहा।

"क्या बात है ?"

"इतवार को मैच था," स्वामीनाथन ने हकलाकर कहा।

"तो क्या हुआ ? तुम्हारे पास एक दिन बाकी है। आज सिर्फ शनिवार है।"

"सर, आपने कहा था कि आज इतवार है।"

"नहीं, नहीं। आज शनिवार है। चाहो तो कैलेंडर देख लो।"

"लेकिन आपने इतवार कहा था।"

"गलती से निकल गया होगा।"

"सर, क्या आप ऐसी कोई व्यवस्था करेंगे कि मैं इतवार से पहले मैदान में पहुंच जाऊं ?"

"जरूर! आज शाम को ही। लेकिन तुम्हें यह बताना होगा कि तुम किस जगह के हो और तुम्हारे पिता का नाम क्या है ?"

अठारह

वापसी

1

इतवार की शाम के साढ़े तीन बजे थे। एम.सी.सी. और वाई.एम.यू. के बीच मैच चल रहा था। वाई.एम.यू. ने टास जीतकर खेलना शुरू किया था और दो बजे तक छियासी रन बना कर सब आउट हो गये थे। टीम के कप्तान ने सबसे ज्यादा बत्तीस रन बनाये थे। एम.सी.सी. के पास उसे आउट करने वाला कोई गेंदबाज ही नहीं था और वह अपने आप चलने वाली मशीन की तरह दाएं-बाएं गेंद पीटकर सारे गेंदबाजों को थका रहा था। वह घंटों खेलता रहा और उसके बाद वाला भी जबर्दस्त बल्लेबाज था, हालांकि उसने इतना स्कोर नहीं किया। उसने एम.सी.सी. की रही-सही ताकत भी खत्म कर दी और राजम को अच्छे गेंदबाज की कमी महसूस हुई।

अंतराल के बाद मैच ढाई बजे फिर शुरू हुआ और एम.सी.सी. की एक घंटे की बल्लेबाजी के बाद स्कोर बहुत निराशाजनक था, अर्थात् आठ पर तीन खिलाड़ी जल्दी-जल्दी आउट हो गये थे। राजम और मणि को अभी बल्लेबाजी करनी थी। राजम बड़ी निराशा से खेल देखता रहा और हर खिलाड़ी को मन ही मन कोसता रहा। मैच निश्चित तौर पर साढ़े पांच बजे खत्म होना था, अब से दो घंटे बाद। क्या बाकी के आठ खिलाड़ी कम से कम अठहत्तर रन बनाकर मैच को बराबर कर देंगे ? यह दूर की संभावना थी। उसके निराश मन को लगा कि बीस तक स्कोर पहुंचने से पहले-पहले छह खिलाड़ी और इसी तरह आउट हो जायेंगे। उसके बाद रह जायेंगे वह और मणि। और उसने उस क्षण दूर की उम्मीद लगायी कि वह और मणि कुछ बढ़िया चौकों-छक्कों के साथ चालीस-चालीस रन बनायेंगे।

अहाते की दीवार के साये में वह अन्य खिलाड़ियों के साथ बैठा हुआ था।

"राजू, एक मिनट के लिए यहां आओ।" ऊपर से आवाज आयी। राजम ने ऊपर देखा तो दीवार के ऊपर पिताजी का सिर दिखाई पड़ा। उसने पूछा, "पिताजी क्या बहुत जरूरी है ?"

"हां, मैं एक मिनट से ज्यादा तुम्हें नहीं रोकूंगा।"

जब वह दीवार के ऊपर से कूद कर पिता के पास पहुंचा तो उन्होंने उसे एक पत्र दिया। उसने पत्र पर सरसरी नजर डाली और उसे पिताजी को लौटाते हुए कहा, "अच्छा, तो वह ठीक-ठाक है। पता नहीं वह वहां क्या कर रहा है।" उसे क्षण भर के लिए सोचा और फिर वहां से जाने लगा।

"मैं यह पत्र स्वामीनाथन के पिता को भेज रहा हूं। वे जरूर कार लेकर वहां जायेंगे। मुझे भी उनके साथ जाना होगा। क्या तुम साथ चलना चाहोगे ?"

राजम कुछ देर चुप रहा फिर जोर देकर बोला, "नहीं।"

"क्या तुम अपने दोस्त से मिलकर उसे वापस लाना नहीं चाहोगे ?"

"मैं उसकी परवाह नहीं करता," कहकर वह अपने साथियों के पास चला आया। दीवार के साये में वह अपनी जगह आकर बैठ गया। चौथा खिलाड़ी होनहार था। उसने धीरे से मणि से कहा, "यह लड़का बुरा नहीं है। उसने छह रन बना लिये हैं। बहुत अच्छे, बहुत अच्छे।"

"अगर ये लोग कम से कम पचास बना लें तो बाकी हम बना लेंगे।"

राजम ने सहमति जतायी किंतु मन के एक छिपे कोने में वह मैच के अलावा कोई और बात सोच रहा था। पिताजी ने उसे जो खबर दी थी उससे उसके मन में कई मिली-जुली भावनाएं पैदा हो गयी थीं। उसमें स्वामीनाथन की बात मणि को बताने की तीव्र इच्छा हुई। "मणि, तुम जानते हो, स्वामी...," वह बीच में रुक गया क्योंकि उसे याद आया कि स्वामी में उसकी कोई रुचि नहीं है। मणि ने उछल कर पूछा, "स्वामी के बारे में क्या कह रहे थे ? बताओ राजम, उसका पता चला ?"

"मैं नहीं जानता।"

"ओह, राजम। तुम अभी तो उसके बारे में कुछ कह रहे थे।"

"कुछ नहीं। मैं उसकी परवाह नहीं करता।"

2

स्वामीनाथन को बहुत अच्छी देखभाल और सुरक्षा का अनुभव हो रहा था। उसे देखने जितने लोग चले आ रहे थे उससे स्वामीनाथन को लग रहा था कि उसका महत्व बढ़ गया है। उसकी मां और दादी तो लगातार उसके आसपास थीं और उसे इस बात से छिपा आनंद मिल रहा था कि उसके छोटे भाई की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा था और वह पालने में अकेला पड़ा रूं-रूं कर रहा था।

पिताजी के कई दोस्त उससे मिलने आये और उन सब का व्यवहार लगभग एक जैसा था। उन्होंने उसे कुछ प्रसन्नता जताते हुए टकटकी बांध कर देखा और बोले कि उसे वापस आया देखकर उन्हें बहुत चैन मिला है। उन्होंने कुछ घिसे-पिटे सवाल भी

किये और फिर दो-एक अजीब सी बातें कहकर चले गये। पिताजी, एक दोस्त के साथ बाहर जाने लगे तो बोले, "स्वामी, मुझे उम्मीद है कि वापस आने पर मुझे तुम्हें ढूंढ़ना नहीं पड़ेगा।" स्वामीनाथन को यह बात चुभ गयी। उसे लगा कि पिताजी का यह कहना निर्दयतापूर्ण और अनुचित है।

पिता के बाहर जाने के बाद स्वामीनाथन को आजादी मिल गयी। वह अब मां-दादी के मित्रों और परिवार के पुराने परिचित बूढ़ों, जो पिताजी से भी पहले पैदा हुए होंगे, के साथ खुलकर बादशाह की तरह व्यवहार कर सकता था।

हर कोई स्वामीनाथन के चेहरे को ध्यान से देखकर ऊंची आवाज में कोई बात कहता था। सारी भीड़ के बीच स्वामीनाथन की नजर रसोइये पर पड़ी और उसने मुस्कराकर उसे देखा। रसोइये ने बड़बड़ाकर कुछ कहा और खुशी प्रकट की जिसके अंत में उसने उम्मीद जाहिर की कि अब दादी, मां और पिताजी फिर से खाना खाने लगेंगे। वह जवाब में जोर से कुछ कहने ही वाला था कि उसका ध्यान एक विधवा औरत की बात ने खींच लिया। आंखें गोल करके और आसमान की तरफ हाथ उठाकर वह कह रही थी, "भगवान ने ही लड़के की जान बचायी है वरना कौन सोच सकता था कि जंगलाती महकमे का अफसर लड़के को जंगली जानवरों की दाढ़ से बचाने के लिए वहां मौजूद होगा ?" दादी ने कहा, "मैंने भगवान तिरुपति की मन्नत मांगी थी कि लड़का सुरक्षित घर लौट आया तो बहुत सा चढ़ावा चढ़ाऊंगी। अब मुझे उसकी तैयारी करनी है।"

मां रसोई में गयी और थोड़ी देर बाद खूब चीनी वाली गर्म कॉफी का गिलास और प्लेट में गर्म-गर्म नाश्ता लेकर लौट आयी। स्वामीनाथन ने बड़े मजे के साथ जल्दी-जल्दी दोनों को खत्म किया। रसोई से लुभाने वाली, मजेदार मिली-जुली खुशबू आ रही थी।

स्वामोनाथन को पिछले दिन की याद आयी और फारेस्ट आफिसर के प्रति अपने व्यवहार पर वह लज्जित हुआ। फारेस्ट आफिसर बहुत परेशान था और पुलिस डिप्टी सुपरिंटेंडेंट के जवाब की प्रतीक्षा कर रहा था। जवाब में एक टैक्सी बंगले के पास आ कर रुकी थी, जिसमें से घबराये हुए पिताजी, मां, राजम के पिता और एक पुलिस इंस्पेक्टर उतरे। मां ने उसे देखते ही क्या तमाशा किया था! पहले तो उसे लगा कि राजम के पिता और पुलिस इंस्पेक्टर उसे हथकड़ी लगायेंगे। राजम के पिता कितने अच्छे आदमी हैं। और उसके पिता भी बहुत ही दयालु हैं। उनसे मिलने के पांच मिनट बाद ही उसने सारी कहानी उन्हें सुना दी, व्यायाम कक्षा से भागने से लेकर गायब होने तक। उसने एक भी बात नहीं छिपायी। उसकी कहानी में ऐसी क्या अजीब बात थी ? सब जोर-जोर से हंस रहे थे और मां हर कहकहे के अंत में साड़ी के पल्लू में मुंह छिपाकर आंखें पोंछ रही थी।... इस याद का मजा एक चीज ने किरकिरा कर दिया। वह फारेस्ट आफिसर से विदा लेना भूल गया, हालांकि उसने कार का दरवाजा खोला और पास खड़ा रहा। इस याद से स्वामीनाथन की अंतरात्मा को बहुत पीड़ा हुई। फारेस्ट आफिसर की याद से उसका



गला भर आया। कैसे वह भागती हुई कार को पीछे से देख रहा था। शायद इस बात से उसका दिल टूट गया था कि जिस व्यक्ति की उन्होंने जान बचायी वह इतना दुष्ट निकला कि चलते समय उसने 'गुडबाई' भी नहीं कही।

पिछली घटनाओं को याद करने का सिलसिला कि स्वामी को क्या-क्या खतरा हो सकता था, और मिलने आये लोगों का वार्तालाप उस वक्त रुक गया जब तूफान की तरह एक लड़का "स्वामी! स्वामी!" चिल्लाता हुआ कमरे में आया। मेहमान इतना ही जान पाये कि जोर-जोर की आवाजें आयीं, कुछ तेज गतिविधि हुई और स्वामीनाथन तथा मणि हाल से गायब हो गये।

पिछवाड़े में एकांत जगह पहुंचने पर मणि ने कहा, "मैंने तो सोचा था कि तुम मर-वर गये होगे।"

"मर ही तो गया था।"

"तुम भी कितने बेवकूफ हो जो उस हैडमास्टर से डर कर भाग गये। राजम ने मुझे सब कुछ बताया। मैं तो तुम्हारी हड्डियां तोड़ना चाहता था। तुम स्कूल में राजम से मिलने आये तो मुझे क्यों नहीं बुलाया ?"

"मेरे पास वक्त नहीं था, मणि।"

"स्वामी, तुम्हें जिंदा देखकर मैं बहुत खुश हूं। मुझे तुम्हारी बहुत चिंता हो रही थी। तुम रहे कहां ?"

"मैं...मैं... ठीक से बता नहीं सकता। मैं नहीं जानता, मैं कहां पहुंच गया था। कहीं...।" उसने उस डरावनी रात और बाद की घटनाओं को याद करने की कोशिश की।

"मैं कहता नहीं था कि तुम बहुत बड़े डरपोक हो। अगर तुम ठंडे दिमाग से काम लेते और सीधी सड़क से आ जाते तो तुम सही-सलामत घर पहुंच गये होते। तुम बेकार की बातें सोचते रहे।"

स्वामीनाथन ने उसकी बात चुपचाप मान ली और कहा, "लेकिन मुझे यकीन नहीं होता कि गाड़ी वाले ने मुझे उठाया था। मुझे कुछ याद नहीं है।"

मणि ने सलाह दी, "अगर वह दिवाली या पोंगल के अवसर पर तुम्हारे पास आये तो कंजूसी मत दिखाना। उसे तो सोने की थाली भरकर देनी चाहिए। अगर उसने तुम्हें न उठाया होता तो तुम्हें शेर खा गया होता।"

"और मैंने एक और बुरा काम किया है," स्वामीनाथन बोला, "आने से पहले मैंने फारेस्ट आफिसर का धन्यवाद भी नहीं किया और न उसे 'गुडबाई' कहा। वह पूरे वक्त कार के पास ही खड़ा रहा था।"

"अगर वह इतने पास था तो तुमने अपना मुंह क्यों सी लिया ?"

"मुझे तब तक इस बात का ध्यान नहीं आया, जब तक कि कार दूर नहीं निकल गयी।"

"तुम बहुत ही लापरवाह आदमी हो। तुम्हें उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए था।"

"अब क्या करूं ? क्या उसे पत्र लिखूं ?"

"हां। लेकिन तुम्हें उसका पता मालूम है ?"

"पिताजी जानते होंगे।"

"तुम क्या लिखोगे ?"

"मैं कहूंगा... नहीं, मैं नहीं जानता। मैं पिताजी से पत्र लिखने को कहूंगा। अच्छा-सा पत्र। देखो न, मैं उसका बहुत ऋणी हूं, क्योंकि उसने ठीक समय मुझे यहां मैच के लिए पहुंचा दिया।"

"क्या कह रहे हो ?" मणि ने पूछा।

"तुम क्या बहरे हो ? मैं कह रहा था, मैं पिताजी से कहूंगा कि वे अच्छा-सा पत्र लिख दें। यही तो कहा।"

"वह नहीं। मैंने मैच के बारे में तुम्हें कुछ कहते सुना। क्या कहा था ?"

"हां।"

"तुम पागल हो जो सोचते हो कि तुम मैच के लिए वक्त पर पहुंच गये ?" मणि ने कहा। फिर उसने स्वामीनाथन को वाई.एम.यू. के साथ हुए मैच की सारी कहानी, निराशाजनक परिणाम के साथ सुना दी और साथ ही खुलकर यह भी बता दिया कि एम. सी.सी. की दुर्गति में स्वामीनाथन का कितना हाथ था।

"तुमने मैच आज क्यों खेला ?" स्वामीनाथन ने पूछा।

"क्यों न खेलते ?"

"आज शनिवार है न ?"

"कौन कहता है ?"

"फारेस्ट आफिसर ने कहा था कि आज शनिवार है।"

"तुम जाकर उससे कहो कि वह बुद्धूराम है," मणि ने गुस्से से कहा।

स्वामीनाथन इस बात पर अड़ा था कि आज इतवार नहीं हो सकता। मणि ने उसे नीचे पटकने और उसके ऊपर बैठकर उसकी अंतड़ियां निकालने की धमकी दी। स्वामीनाथन कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, "मैं उसे पत्र नहीं लिखूंगा। उसने मुझे धोखा दिया है।"

"किसने ?"

"फारेस्ट आफिसर ने।... और राजम इस बारे में क्या कहता है ?"

"राजम बहुत कुछ कहता है जिसे मैं यहां नहीं दोहराना चाहता। लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूं। राजम के सामने कभी मत जाना। वह तुमने कभी नहीं बोलेगा। हो सकता है, वह देखते ही तुम्हें गोली मार दे।"

"मैंने क्या किया है ?" स्वामीनाथन ने पूछा।

"तुमने एम.सी.सी. को बर्बाद किया है। अगर तुम्हें डरकर भाग जाना था तो हम से वायदा ही न करते। कम से कम तुम हमें बताकर जाते कि तुम कहां जा रहे हो। जब राजम तुम्हें स्कूल में मिला तो तुमने उससे सारी बात क्यों छिपायी ? राजम तुमसे यही जानना चाहता है।"

स्वामीनाथन चुपचाप रोता रहा फिर उसने मणि से प्रार्थना की कि वह राजम को मनाए और उसे मेरी स्थिति समझा कर बताए कि स्वामी उसे कितना प्यार करता है। मणि ने हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया, बोला, "तुम राजम को नहीं जानते। वह हीरा है। लेकिन उसे मनाना बहुत मुश्किल काम है।"

जबर्दस्ती पैदा की गयी आशा के साथ स्वामीनाथन बोला, "वह मुझे देखेगा तो उसका गुस्सा उतर जायेगा। मैं कल ही उससे मिलूंगा।"

मणि प्रसंग बदलना चाह रहा था। उसने पूछा, "क्या तुम स्कूल वापस जाओगे ?"

"हां, अगले हफ्ते। पिताजी हैडमास्टर से मिले हैं और लगता है स्कूल में सब ठीक-ठाक हो जायेगा। लगता है पिताजी को बोर्ड स्कूल के काम के बारे में सारी जानकारी मिल गयी है।"

"हां, मैंने और राजम ने उन्हें सब कुछ बताया था।"

"मुझे बोर्ड हाई स्कूल वापस जाना ही पड़ेगा। पिताजी कहते हैं, इस वक्त मैं स्कूल नहीं बदल सकता।"

उन्नीस

विदाई का उपहार

1

दस दिन के बाद, मंगलवार सुबह पांच बजे स्वामीनाथन बड़ी कोशिश करके बिस्तर से उठा। मालगुड़ी स्टेशन पर ठीक एक घंटे बाद गाड़ी आने वाली थी जो चार मिनट बाद राजम को हमेशा के लिए दूर ले जाने वाली थी।

यह होने वाला है, इसकी जानकारी स्वामीनाथन को पिछली रात 10 बजे तब मिली जब मणि ने आकर बताया कि राजम के पिता की त्रिचनापल्ली बदली हो गयी है और सुबह सारा परिवार मालगुड़ी छोड़ने वाला है। मणि ने बताया कि उसें एक हफ्ते से इसकी खबर थी, लेकिन राजम ने इसके बारे में स्वामीनाथन को कुछ भी बताने की सख्त मनाही कर रखी थी। आखिरी वक्त पर मणि अपने पर काबू नहीं रख सका और उसे राजम की इच्छा के विरुद्ध काम करना पड़ा है।

खबर सुनते ही स्वामीनाथन को घोर उदासी ने जकड़ लिया। अचानक उसे लगा कि दुनिया सूनी हो गयी है। राजम के बिना लाली एक्सटेंशन उसके लिए बिल्कुल सूना होगा। उसने कसम खायी कि वह अब कभी वहां नहीं जायेगा। उसे मणि पर बहुत गुस्सा आया और मणि ने उस गुस्से को धैर्य से सह लिया। स्वामीनाथन राजम के बिना जीवन की कल्पना कर ही नहीं सकता था। अब वह शाम के समय क्या करेगा ? छुट्टी की दोपहर वह किस तरह बितायेगा ? मित्र के रूप में अब वह किसके बारे में सोचेगा ? साथ ही उसने अपने को अपराधी भी अनुभव किया—वापसी के बाद वह एक बार भी राजम से मिलने नहीं गया था। डर, शर्म और अनिश्चय की भावना के कारण उसे राजम के पास जाना हर रोज स्थगित करना पड़ता था। दो बार वह राजम के घर के गेट तक गया था, लेकिन अंत समय उसकी हिम्मत टूट गयी और वह इरादा बदल कर लौट आया था। इसी उधेड़बुन में वह यह उम्मीद कर रहा था कि अगले दिन राजम के पास जरूर जायेगा कि तभी मणि ने आकर भयानक सूचना दी। स्वामीनाथन उसी क्षण राजम के घर भागकर जाना चाहता था और उस पर अपना हक जताना चाहता था। लेकिन उसे यह बहुत अजीब लगा और उसने इरादा बदल दिया। कल सुबह स्टेशन पर! गाड़ी छह बजे छूटने वाली थी। वह

पांच बजे स्टेशन पहुंच जायेगा।

"मणि, क्या कल सुबह पांच बजे मुझे बुला लोगे ?"

"नहीं, मैं राजम के घर पर सोऊंगा और सुबह उसके साथ स्टेशन जाऊंगा।"

क्षण भर के लिए स्वामीनाथन का मन भयानक ईर्ष्या से भर गया। मणि राजम के घर सोयेगा, अंतिम क्षण तक उसके साथ रहेगा, आधी रात तक बातें करेगा, हंसेगा और वह इस सब से अलग रहेगा। वह मणि से लिपट जाना चाहता था और उसे वहां जाने से रोकना चाहता था।

मणि के जाने के बाद स्वामीनाथन ने अंदर जाकर अपना देवदार की लकड़ी का बक्सा खोला और उसमें कुछ देखने लगा। वह कोई चीज निकालना चाहता था, जिसे वह अगली सुबह राजम को उपहार में दे सके। बक्से में कई तरह की चीजों, धातु के टुकड़ों और दूसरी चीजों का एक गड्मड् ढेर था। एक गत्ते का डिब्बा था जो कभी स्वामीनाथन को बहुत भाता था। एक खिलौना घड़ी, एक सूची, कुछ चित्र-कथाएं, नट-बोल्ट, पुरानी मशीनों के बेकार पुर्जे आदि बक्से में ऊपर तक भरे हुए थे। उसने आध घंटे तक बक्से को छाना लेकिन कोई ऐसी चीज नहीं निकली जो राजम को दी जा सके। इनमें एक ही बढ़िया चीज थी और वह थी हरा इंजिन जो राजम ने ही एक साल पहले उसे दिया था। कई जगह से वह पिचक या टूट गया था और वह धागे की एक खाली रील और टूटे चीनी के फूलदान के बीच पड़ा हुआ था। उसे देखते ही उसके मन में पुरानी यादें जाग गयीं। वह भावुक हो उठा...। सोचने लगा कि क्या अब जब उनकी दोस्ती नहीं रही है उसे वह इंजिन राजम को वापस कर देना चाहिए। उसने उसे उठा लिया, यह सोचकर कि कल इसे स्टेशन पर राजम को लौटा देगा। फिर विचार बदल कर उसने उसे वापस रख दिया। एक तो इसलिए कि वह इंजिन उसे बहुत प्यारा लगता था और दूसरे इसलिए कि इतने दिनों बाद उपहार वापस करना राजम का अपमान होगा।... राजम को पुस्तकें पढ़ने का शौक था और उसने उसे कोई पुस्तक देने का फैसला किया। निस्संदेह वह उसे कोई पाठ्य-पुस्तक नहीं दे सकता था। उसने वह एकमात्र पुस्तक निकाली जिसके प्रति उसके मन में बहुत आदर था (इसका प्रमाण यह था कि इस पुस्तक को वह मेज पर पड़ी पाठ्य-पुस्तकों से अलग देवदार के बक्से में रखता था)। यह एंडरसन की परीकथाओं का बहुत सुंदर, छोटा-सा संग्रह था, जो वर्षों पहले उसके पिता ने मद्रास में उसके लिए खरीदा था। वह जी भरकर इस पुस्तक को कभी नहीं पढ़ सका। इसमें ऐसे बहुत से शब्द थे जो उसे नहीं आते थे और जिनका वह उच्चारण नहीं कर पाता था। वह यह पुस्तक राजम को देगा। वह अपने डेस्क के पास गया और अंदर के कोरे पन्ने पर लिखा 'सबसे प्यारे दोस्त राजम को'।

2

जब स्वामीनाथन एंडरसन की परीकथाओं की छोटी सी पुस्तक लेकर मालगुड़ी स्टेशन पर पहुंचा तो वहां अभी झुटपुटा छाया था। स्टेशन मास्टर अभी-अभी बिस्तर से उठा था और लालटेन की रोशनी में मेज पर काम कर रहा था। पास ही तार की कुंजियां टिकटिक करती सुबह का अंतहीन संदेश दे रही थीं, लेकिन स्टेशन मास्टर का इधर ध्यान नहीं था।

बाहर एक कार आकर रुकी। स्वामीनाथन ने देखा, राजम, उसके माता-पिता, एक अपरिचित आदमी और मणि कार से उतरे। स्वामीनाथन राजम को देखते ही सिकुड़ गया। कप्तान को यूरोपियन लड़के की वेशभूषा में प्लेटफार्म पर आते देखकर स्वामीनाथन की सारी हिम्मत जवाब दे गयी। उसकी वेशभूषा और साफ-सफाई को देखकर ही स्वामीनाथन ने अपने को बहुत छोटा और अदना महसूस किया। वह पीछे हट गया और उसने अपने को छिपाने की कोशिश की।

तभी प्लेटफार्म पुलिस अफसरों और कर्मचारियों से भरने लगा। राजम उसकी पहुंच से दूर हो गया। वह लोगों के झुंड के बीच अपने पिता के साथ खड़ा था। स्वामीनाथन राजम की सिर्फ बायीं टांग को दो सिपाहियों के बीच बनी दरार से देख सकता था। यह दरार भी तब बंद हो गयी जब दोनों सिपाही नजदीक सरक गये। स्वामीनाथन ने इसी तरह की अन्य दरारें खोजने के लिए प्लेटफार्म का चक्कर लगाया।

गाड़ी आती दिखायी दी। प्लेटफार्म पर खूब हलचल हुई। गाड़ी आवाज करती हुई प्लेटफार्म पर आ गयी। हलचल और बढ़ गयी। राजम और साथ के दूसरे लोग प्लेटफार्म के किनारे पर आ गये। एक दर्जन सिपाहियों ने जल्दी-जल्दी सामान को घसीटकर सैकेंड क्लास के डिब्बे में पहुंचाया। राजम की मां डिब्बे के अंदर चली गयी। राजम और उसके पिता अभी बाहर खड़े थे। पुलिस अफसरों ने अब उन्हें पूरी तरह घेर रखा था और वे उनके गले में हार डाल कर उन्हें विदाई दे रहे थे। गुलाबों का एक बड़ा हार पहने राजम की एक झलक ही स्वामीनाथन को दिखायी दी।

स्वामीनाथन ने मणि को ढूंढ़ लिया, "मणि, राजम जा रहा है ?"

"हां स्वामी, वह जा रहा है।"

"मणि, क्या राजम मुझसे बात करेगा ?"

"क्यों नहीं ?" मणि ने कहा।

अब राजम और उसके पिता भी डिब्बे में घुस गये। दरवाजा बंद कर दिया गया और उसका हैंडल मोड़ दिया गया।

"मणि, यह पुस्तक राजम को देनी है," स्वामीनाथन बोला। मणि ने देखा कि यह काम तत्काल होना चाहिए। ट्रेन की घंटी बजी। वे पूरी कोशिश करके भीड़ में घुस गये

और खिड़की के पास जा खड़े हुए। स्वामीनाथन खिड़की के अंदर देख ही नहीं पा रहा था। उसका सिर मुश्किल से दरवाज़े के हैंडल तक पहुंच रहा था। पीछे से वह भीड़ में दबा जा रहा था। मणि ने डिब्बे में झांककर जोर से कहा, "राजम, स्वामी आया है।" स्वामी अपने पंजों पर खड़ा हो गया। राजम का सिर खिड़की से बाहर निकला और वह बोला, "गुडबाई मणि। मुझे मत भूलना। खत लिखना।"

"गुडबाई दोस्त! देखो, स्वामी आया है," मणि ने कहा। राजम ने गर्दन लंबी करके देखा। स्वामीनाथन की ऊपर उठी आंखों से उसकी आंखें टकरायीं। राजम का चेहरा देख कर स्वामीनाथन अपने पर काबू नहीं रख सका और रो पड़ा, "राजम, राजम! तुम जा रहे हो ? दूर जा रहे हो ? तुम कब वापस आओगे ?" राजम बिना कोई शब्द कहे उसकी ओर देखता रहा। और फिर (जैसा कि स्वामीनाथन को लगा) उसने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि गार्ड की सीटी और इंजिन की लंबी सीटी ने विघ्न डाल दिया। जंजीरों की खड़खड़ाहट, फिर जोर की चीत्कार और गाड़ी चलने लगी। राजम का चेहरा होंठों पर अनकहे शब्दों के साथ छिप गया। स्वामीनाथन तड़पकर बोला, "मणि, यह किताब उसे देनी है," और उसने किताब मणि के हाथ में थमा दी। मणि गाड़ी के साथ-साथ दौड़ा और गाड़ी के शोर के बीच चिल्लाया, "गुडबाई राजम। स्वामी ने यह किताब दी है।" राजम ने किताब लेने के लिए हाथ बाहर निकाला और उसे ले लिया तथा विदाई में हाथ हिलाया। स्वामीनाथन ने भी जवाब में हाथ हिलाया।

स्वामीनाथन और मणि जहां थे वहीं जड़ होकर गाड़ी को देखते रहे। आखिरी डिब्बे की छोटी लाल बत्ती बड़ी देर तक दिखायी देती रही। पल-पल उसका आकार छोटा होता गया और मोड़ पर जाकर वह ओझल हो गयी। चलती गाड़ी की सारी खड़खड़ाहट, झनझनाहट, फुफकार की आवाजें दूर जाते-जाते धीमी पड़ती गयीं और अंत में आधी सिसकी और आधी उसांस में बदल गयी। स्वामीनाथन बोला, "मणि मुझे खुशी है कि उसने मेरी किताब ले ली। उसने मेरी तरफ हाथ भी हिलाया था। वह कुछ कहने वाला था कि गाड़ी चल पड़ी। मणि, उससे मेरे लिए, सिर्फ मेरे लिए हाथ हिलाया था। इससे तुम इनकार मत करना।"

"हां, हां," मणि ने सहमति जतायी।

स्वामीनाथन फूट-फूटकर रो पड़ा।

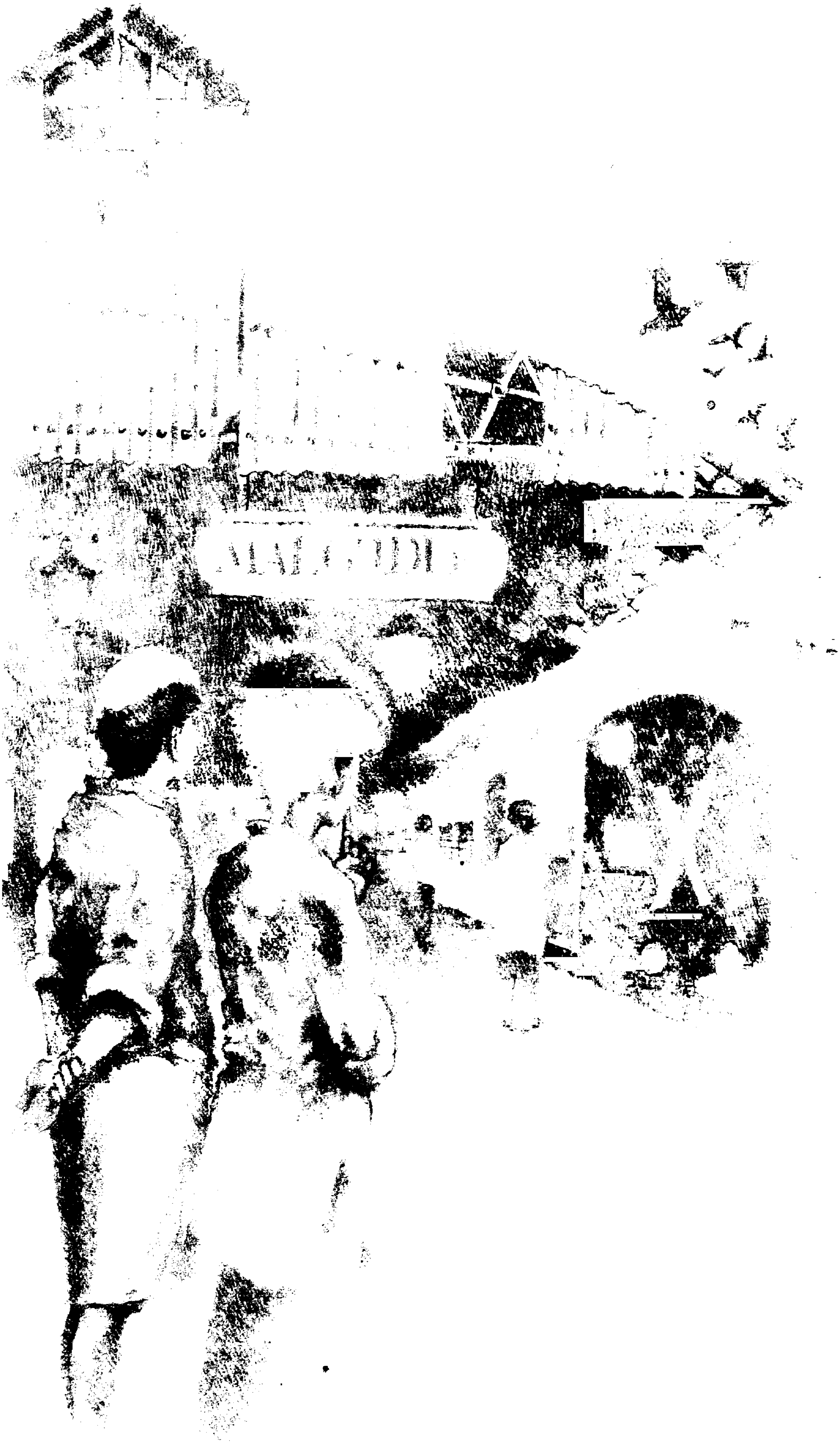
मणि ने कहा, "बेवकूफ मत बनो स्वामी!"

"क्या वह मेरे बारे में कभी सोचता है ?" स्वामीनाथन ने पागलों की तरह पूछा।

"हां, हां," मणि बोला। फिर थोड़ी देर रुककर आगे कहा, "चिंता मत करो। अगर वह तुम से बोला नहीं है तो वह तुम्हें पत्र लिखेगा।"

"क्या कह रहे हो ?"

"उसने मुझसे कहा था," मणि बोला।



"लेकिन उसे मेरा पता कहां मालूम है ?"

"उसने मुझसे पूछा था और मैंने बता दिया था।"

"नहीं, नहीं, यह झूठ है। बताओ, बताओ, मेरा पता क्या है ?"

"पता है ? पता है... तुम चिंता मत करो... बस, मैंने राजम को तुम्हारा पता दे दिया है।"

स्वामीनाथन ने आंखें उठाकर यह जानने के लिए मणि के चेहरे को टकटकी लगाकर देखा, कि वह मजाक कर रहा है या सच बोल रहा है। लेकिन पहली बार मणि के चेहरे पर ऐसा भाव था जिसे समझना मुश्किल था।